

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_176287

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. ^H 81 Accession No. P. G. H 176

Author G 65 N

Author गोपीनाथ 'अमन' देहली

Title

नया यमन

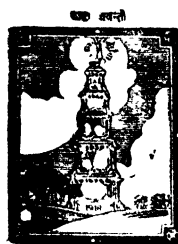
This book should be returned on or before the date
st marked below.

नया चमन

[उर्दू की नयी शायरी का मजमुआ]

एडीटर

श्री गोपीनाथ 'अमन', देहली



प्रकाशक

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा,
त्यागरायनगर, मद्रास

[अधिकार प्रकाशक के]

१९४६

[क्रीमत २॥]

हिन्दी प्रचार पुस्तक-माला, पुष्प—८६.

पहला संस्करण, सितंबर ४६—१.

क्यों ?

दक्खिन में प्रचार का काम 'हिन्दी' नाम से ही शुरू हुआ । मगर उस वक़्त भी प्रचार करनेवालों के सामने यह साफ़ था कि वे हिन्दी के नाम पर उस भाषा का प्रचार करने जा रहे हैं—जो हिन्दू और मुसलमान—दोनों के इस्तेमाल में आती है और जो दोनों लिपियों में लिखी जा सकती है । इसलिए शुरू से ही हमारे यहाँ हिन्दी पढ़ाने का काम करनेवालों के वास्ते उर्दू हरूफ़ जानना ज़रूरी माना गया था ।

मगर हमारे रास्ते की सबसे बड़ी कठिनाई थी किताबें । हमारे काम के लायक किताबें हमें नहीं मिलीं, और अब भी नहीं मिल रही हैं । हमें या तो संस्कृत-निष्ठ हिन्दी की किताबें मिलीं या फ़ारसी लदी उर्दू की । बीच का रास्ता सूना ही पड़ा रहा । शुरू की रीडरों तक तो कोई बात न थी । हमारे प्रचारकों ने किसी तरह ढ़रें लिख-लिखा लीं और उसी के ज़रिये हम काम चलाते रहे । मगर दो क़दम चल लेने के बाद हमारी दिक्कत बढ़ी । और हम गों ने तय किया कि हम दोनों तरह की चीज़ें लोगों को बाँयेंगे । इसलिये शुरू से ही हमारी परीक्षाओं में 'पथिक' के 'अकबर के शेर', 'प्रेम-पंचमी' के साथ 'अलीबाबा और चालीस' और 'गद्य-पद्य संग्रह' के साथ 'तिलस्माती मुंदरी' या 'हज़रत इमद' चलते रहे ।

इसके पहले हमने 'चुने हुए मजमून' छपा था, जिसके छपे आज या कल दस साल हो जायेंगे। उसी सिलसिले में हम उर्दू की नयी शायरी का एक मजमुआ भी शायर करना चाहते थे। हम जामिया-मिल्लिया के जनाब हामिद अली खाँ साहब से १९३८ इस बात का जिक्र किया और उन्होंने दिल्ली से निकलनेवाले 'तेज' के सब एडीटर श्री गोपीनाथ 'अमन' साहब से यह काम कर दें को कहा। 'अमन' साहब का यह 'चमन' गुजस्ता चार साल से हमारे पास था मगर हम उसे कई वजहों से छाप न सके।

यह उर्दू के नये ज़माने की चीज़ है। मगर हमने अपने पढ़नेवालों की सहूलियत के वास्ते इसे तीन हिस्सों में बाँट दिया है। उन हिस्सों का और कोई मतलब नहीं है। इसके अलावा श्री प्रोफेसर ताराचन्द्र साहब एम.ए., पी-एच.डी., श्री वर्मा 'मक़फ़ी' साहब ने भी हमें इस काम में पूरी मदद पहुँचायी है—जिसके लिये 'सभा' उनकी बहुत-बहुत शुक्र-गुज़ार है। इस चमन को यह शकल देने में और इनका वसीअ नोट तैयार करने में हमारे प्रचारक पं. ब्रजनन्दन शर्मा ने बहुत मेहनत की है।

हम उन शायरों का किन लफ़्ज़ों में शुक्रिया अदा करें, जिन्होंने अपनी प्यारी, मीठी शायरी इस जिल्द में शायर करने की इजाज़त हमें दी है! शायरी शायर की रूह और दिल का निच. . . है, उनके ज़बान की बेहतरीन तस्वीर होती है। मगर शायर के दिल से

निकलकर शायरी शायर की नहीं रह जाती । कलियाँ मुस्कगती हैं और बादे-सबा वह मुस्कराहट लोगों को बाँट आती है; गुलाब अपना दिल खोलता है और नसीमे-सहर उसकी रूह को लेकर उड़ा आती है । उनको कौन रोके ? और रोकने का गुनाह ही कौन करे ? शायद उन गुलों को भी यही भाता है । फिर हम—जो कद्रदाँ हैं, मरहबा कहे बिना, आफरीं कहे बिना कैसे रह सकते हैं ? और इसके सिवा हम उन पर निछावर भी क्या कर सकते हैं ?

उम्मीद है लोगों को हमारी यह कोशिश पसन्द आयगी । इसमें कमियाँ रह गयी होंगी । मेहरबान दोस्त अगर उस तरफ इशारा करेंगे तो हम उनका एहसान मानेंगे ।

—प्रकाशक

क्या ? कहाँ ?

१.	उर्दू शायरी की तारीख	‘अमन’	
२.	शायरों का परिचय	”	
३.	पहली बहार		
१.	दुआ	‘आज़ाद’	४२
२.	हुब्बे-वतन	‘हाली’	४२
३.	नया शिवाला	‘इकबाल’	४५
४.	उठ बाँध कमर	जफ़रअली ख़ाँ	४६
५.	सीतार्जी की आरजू	‘सरूर’	४७
६.	भलाई का पैराम	‘बर्क़’	४८
७.	नैवारिदे हस्ती	‘महरूम’	५०
८.	मीठी लोरी	‘सईद’	५२
९.	स्नेहलता	‘अमजद’	५३
१०.	लड़कियों से	‘चक्रवस्त’	५५
११.	प्यासी नदी	‘जोश’	५७
१२.	सारा हिन्दुस्तान हमारा	‘सागर’	५८
१३.	राम	”	६०
१४.	गौंधी	”	६२
१५.	प्यासे सामंत की लड़ाई	‘आरज़ू’	६३
१६.	झूठी प्रीत	एहसान दानिश	६८
४.	दूसरी बहार		
१.	बादल	‘आज़ाद’	७१
२.	गर्मी	”	७३
३.	चौपदे	‘हाली’	७४

४.	चन्द शेर	‘अकबर’	...	७६
५.	बन्दा तेरा	‘शाद’	...	८२
६.	तपिश	बेनज़ीर शाह	...	८३
७.	घटा	”	...	८४
८.	चोट	‘साहिर’	...	८५
९.	जुगनू	‘इक़्बाल’	...	८६
१०.	‘साहिर’ के कुछ शेर	‘साहिर’	...	८७
११.	‘इक़्बाल’ के चन्द शेर	‘इक़्बाल’	...	८९
१२.	जौहर दिखाओ	ज़फ़रअली ख़ाँ	...	९०
१३.	‘हसरत’ के शेर	‘हसरत’	...	९१
१४.	‘फ़ानी’ साहब के अशआर	‘फ़ानी’	...	९३
१५.	महात्मा गाँधी	‘सीमाब’	...	९४
१६.	‘अज़ीज़’ के चुने शेर	‘अज़ीज़’	...	९५
१७.	बेबसी	मीरज़ा यास यगाना	...	९७
१८.	गोशप तनहाई	‘महलूम’	...	९९
१९.	बुलबुला	”	...	१००
२०.	कामयाबी का राज़	‘सईद’	...	१०१
२१.	‘अमज़द’ के चौपदे	‘अमज़द’	...	१०२
२२.	खाके-घतन	‘चकबरत’	...	१०४
२३.	रहे रहे न रहे	”	...	१०५
२४.	भूल गये	”	...	१०६
२५.	‘चकबरत’ के ख़यालात	”	...	१०७
२६.	देखते	‘ज़िगर’	...	१०९
२७.	क्रसम	‘जोश’	...	११०
२८.	ख़रीदार न बन	”	...	१११
२९.	शरीबों की ईद	”	...	११२
३०.	नया पुजारी	‘सागर’	...	११३

३१. राजदुलारे सो जा 'साहिर पं. सोहनलाल' ... ११५

५. तीसरी बहार

१.	'अकबर' के जज़्बात	'अकबर'		११९
२.	एक वाक्या	'शिल्ली'		१२४
३.	इंसाफ़	"		१२६
४.	पहले नज़र पैदा कर	'शाद'		१२८
५.	सबेरा	बेनज़ीर शाह	...	१२९
६.	कुछ गहरे शेर	'साहिर'		१३१
७.	रूवाहिश	'इक़बाल'		१३४
८.	विधवा	'सरूर'		१३७
९.	हसरत भरे शेर	'हसरत'		१३८
१०.	चन्द मीठे शेर	'फ़ानी'		१४०
११.	सोसाइटी	'सीमाब'		१४२
१२.	सितारों के गीत	"		१४३
१३.	अज़ीज़ के शेर	'अज़ीज़'		१४८
१४.	दर्द भरे शेर	'असगर'	...	१४९
१५.	नहीं होता	'ज़िगर'		१५२
१६.	दो शेर	'अमज़द'		१५३
१७.	'चकबस्त' के चन्द शेर	'चकबस्त'		१५४
१८.	आगोश	'ज़िगर'		१५५
१९.	भूल	'सागर'		१५७
२०.	यह फूल भी उठा लो	"		१५८
२१.	बीमार कलियाँ	अक़्तर शीरानी		१५९
२२.	हम्द	हफीज़ ज़ालंधरी		१६१
२३.	पपीहा	जगमोहन साहेब	...	१६३

उर्दू शायरी

जिस तरह यह कहना मुश्किल है कि उर्दू ज़बान कब बनी, उसी तरह यह बताना भी कठिन है कि उर्दू शायरी कब शुरू हुई। उर्दू शायरी की मशहूर तारीख़ 'आवे-इयात' में जो सन् १८८३ ई. में लिखी गयी—यह लिखा है कि उर्दू शायरी दक्खिन के वली नामक शायर ने शुरू की। मगर बाद की छान-बीन से पता चलता है कि उर्दू की शायरी इससे बहुत पुरानी है। वली तो मुहम्मदशाह रंगीले के समय में १८ वीं सदी के बीच में हुए। लेकिन जब दक्खिन में औरंगज़ेब के हमले पर हमले हो रहे थे उस ज़माने से कहीं पहले से उर्दू के कवि अपनी कविता के रचने में लगे हुए थे। इतना तो विश्वास के साथ कहा जा सकता है उर्दू शायरी दक्खिन से ही शुरू हुई। देहली ने उसे पाला-पोसा और लखनऊ में उसका सिंगार हुआ।

उर्दू कविता दक्खिन में कब शुरू हुई उसके बारे में अभी भी खोज हो रही है। सत्रहवीं सदी में उत्तरी हिन्दुस्तान में उर्दू का नया ज़माना शुरू होता है। इसका पहला दौर वह है जिसमें वली, मज़हर जानजाना और क़ायम जैसे शायर हुए।

उर्दू कविता का दूसरा दौर दर्द, मीर और सौदा का है। यह सब देहली के ही रहनेवाले थे और लगभग १८ वीं सदी के अन्त तक रहे। मीर और दर्द गज़ल कहेने में उस्ताद थे। मीर ने बहुत कुछ कहा है। दर्द का कलाम थोड़ा है, मगर ऊँचे दर्जे का है। इसमें तसव्वुफ़ भरा है। मीर और सौदा को देहली की हालत ख़राब होने के बाद लखनऊ जाना पड़ा। सौदा की तो नवाब साहब से कुछ अनबन हो गयी और वे लखनऊ वापस आये। मगर मीर उनके मरने तक लखनऊ में ही रहे। सौदा क़त्सीदे इयादा

कहते थे, उनकी शायरी में फ़ारसी लफ़्ज़ों की भरमार है। मीर और दर्द ग़ज़ल कहते थे। उन्होंने, खासकर मीर ने सीधी-सादी ज़बान इस्तेमाल की है। इसके वास्ते आज तक उर्दू शायरी उनकी प्हरसानमन्द है।

१८ वीं सदी के अन्त में देहली दरबार का रंग फीका पड़ने लगा और यहाँ के शायर लखनऊ जाने लगे। वहाँ शायरों की बड़ी क़द्र थी। मीर और सौदा का हाल हम ऊपर दे चुके हैं। उनके बाद इन्शा (इन्शा अल्ला खाँ), मुस्हफ़ी और ज़ुरअत का दौर आया। इसे हम तीसरा दौर कह सकते हैं। इसी ज़माने में सुलेमा शिकोह—जो देहली के शाहज़ादे थे—लखनऊ पहुँच गये। उनके दरबार में भी शायरों की बड़ी धूम रही। जैसे देहली में मीर और सौदा से मुक़ाबिला रहता था, यहाँ (लखनऊ में) मुस्हफ़ी और इन्शा का सामना हुआ। राजदरबार में इन्शा की इज़्ज़त ज़्यादा थी; मगर उन दिनों दरबार में इज़्ज़त बनते-बिगड़ते देर न लगती थी। कुछ ही दिनों बाद इन्शा की तरफ़ से नवाब साहब का रुख़ फिर गया और आख़िरकार वह सन् १८३३ ई. में पागल होकर मर गये। इसी ज़माने में मीर हसन ने उर्दू में एक मसनवी लिखी। यह एक पुराने ढंग की कहानी थी जिसमें परियों, देवों आदि का ज़िक्र था। किस्सा तो उस समय की पसन्द के मुताबिक़ दिलचस्प था, लेकिन शायरी की ज़बान इतनी मीठी थी कि उसकी खूब तारीफ़ हुई। बहुत से लोगों की तो यहाँ तक राय है कि उर्दू में आज तक इतनी अच्छी मसनवी नहीं लिखी गयी। हाँ, पंडित दयाशंकर 'नसीम' की मसनवी 'गुलज़ारे-नसीम' भी इसके टक्कर की मानी जाती है। इसी समय देहली में शाह नसीर की बड़ी धूम थी। वह लखनऊ भी गये थे। उनकी खास तारीफ़ यह थी कि वे मुश्किल रदीफ़ों और वज़नों में ग़ज़ल कहते थे। मगर भाव ऊँचे नहीं थे।

१८ वीं सदी गुज़र जाने के बाद उर्दू शायरी का चौथा दौर शुरू होता है। इस वज़त देहली में शेख़ मुहम्मद इब्राहीम "ज़ौक़", मिर्ज़ा असदुल्ला खाँ "ग़ालिब" और मोमिन खाँ "मोमिन", उधर लखनऊ में फ़वाज़ा हैदर

अली “आतिश” और शेख इमाम बख्श ‘नासिख’ का दौर-दौरा हुआ, ‘आतिश’ की शायरी में असर ज्यादा था और ‘नासिख’ में लफ्फाज़ी और अलंकार। ‘आतिश’ और ‘नासिख’ में आपस में खूब चोटें चलीं, मगर उतने बेतुकेपन के साथ नहीं जैसी ‘मुस्हफ़ी’ और ‘इंशा’ में या सौदा और ‘मीर’ में चली थीं।

देहली में ‘ज़ौक़’ बादशाह ‘ज़फ़र’ के उस्ताद थे। दरबार में जितनी इज़्जत ‘ज़ौक़’ की थी उतनी ‘ग़ालिब’ की न थी। मगर दरबार में इज़्जत होना और बात है और आम लोगों की पसन्द और चीज़ है। दरबार के बाहर ‘ग़ालिब’ को ‘ज़ौक़’ के मुक़ाबिले में बहुत पसन्द किया गया। ‘मोमिन’ भी अपने ज़माने में ग़ज़ल के बादशाह थे। लेकिन जीते-जी उनकी ज्यादा क़द नहीं हुई। ज़ौक़ राजकवि थे। इसलिये क़सीदे बहुत अच्छे कहते थे। ग़ालिब के ख़याल बहुत गहरे और अछूते होते थे। उनसे पहले उर्दू में इतने ऊँचे ख़यालवाला कोई पैदा नहीं हुआ। और बहुतों का ख़याल है कि उनके बाद भी कोई उन तक नहीं पहुँच सका। ग़ालिब फ़ारसी के भी अच्छे शायर थे। उन्होंने अपने मन्तों में बहुत बार यह राय ज़ाहिर की थी कि मेरी शायरी की नफ़ासत देखना हो तो फ़ारसी में देखो। उर्दू मेरे लिए बेरंग चीज़ है। अगर आज ग़ालिब ज़िन्दा होते तो देखते कि उनका ख़याल कितना ग़लत निकला। ज़िम फ़ारसी शायरी पर उनको नाज़ था उसको पढ़नेवाले आज बहुत थोड़े रह गये। और जो चीज़ उनके वास्ते बेरंग थी उसकी आज धूम है। क्या लखनऊ, क्या देहली, क्या पंजाब और क्या दक्खिन—हर जगह उनकी क़दर है। सच तो यह है कि जिस तरह हिन्दी में दौगोर की नक़ल करनेवाले बहुत-से अच्छे-बुरे कवि पैदा हो गये; वैसे ही ग़ालिब की नक़ल में बहुत से उर्दू कवि बिगड़ गये। विचार तो बहुत ऊँचा बाँधना चाहते हैं, लेकिन ग़ालिब की तरह ज़बान पर वह क़वत नहीं रखते इसलिये उनकी शायरी गोरखधंधा बन जाती है।

उर्दू कविता में मरसिये का स्थान बहुत ऊँचा है। मरसिया वह कविता

है जिसमें रंज और ग़म की दास्तान होती है ; लेकिन ज़्यादातर यह शोक हज़रत इमाम हुसेन और उनके साथियों की शहादत के संबंध में होता है। एक तो वह घटना ही करुणाजनक है, दूसरे लखनऊ के शायरों ने उसका वर्णन भी कुछ इस ढंग से किया है कि ग़ैर-मुसलमानों की आँखों से भी बरबस आँसू टपक पड़ते हैं। सबसे अच्छा मरसिया कहनेवालों में मीर बबर अली 'अनीस' और मिर्ज़ा सलामत अली 'दबीर' गुज़रे हैं। उनसे पहले और बाद भी बहुत से मरसिया कहनेवाले हुए हैं लेकिन सबसे अधिक नाम इन्हीं दोनों का है। सच पूछा जाय तो इन्होंने उर्दू कविता को अदब की ऊँची चोटी पर बिठा दिया। ग़ज़ल कहनेवालों को यह कहाँ ग़वारा था कि उनका रंग प्रीका पड़ जाय। उन्होंने मशहूर करना शुरू कर दिया कि बिगड़ा शायर मरसिया कहता है। लेकिन मरसिये की शायरी एक तो मज़हबी थी, दूसरे अनीस और दबीर ने वह ज़बान पायी जिसकी बदौलत मरसिए का रंग ज़्यादा जमा। लखनऊ, रामपुर और हैदराबाद में मरसिया कहनेवालों की क़द्र ग़ज़ल कहने वालों से ज़्यादा होने लगी। इन मरसियों में भाई-भाई का प्रेम, मियौ-बीबी की मुहब्बत, पिता-पुत्र का स्नेह, ज़ालिम हाकिम और सत्याग्रही रिआया का मुक़ाबिला, धर्म के नाम पर मरनेवालों की वीरता, सुबह-शाम, दिन-रात, जंगल-बस्ती, रज़म-बड़म वगैरह के नज़ारे—सब कुछ मौजूद थे। यह ज़रूर था कि बातें अरब की थीं लेकिन उन्हें पेश किया गया हिन्दोस्तानी रंग में। लेकिन ऐसा तो हर मुल्क के शायरों ने किया है। 'अनीस' ने मामूली इंसानों को लेकर कभी कलम नहीं उठायी। वह कहते थे कि मेरा सच्चा बादशाह इमाम हुसेन है, मैं उसको छोड़कर और किसकी तारीफ़ कर सकता हूँ ?

पुराने शायरों का ज़िक्र करते हुए हमने ज़्यादातर उन्हीं का वर्णन किया है जो या तो सुशायरों में ग़ज़लें पढ़ते थे या राजदरबार में क़सीदे सुनाते थे, किस्से कहानियाँ नज़्म में कहते थे या धार्मिक मरसिये कहते थे। लेकिन इसी ज़माने में एक ऐसा शायर भी गुज़रा है जिसने ग़ज़लें बहुत कम कहीं,

क़सीदे भी नहीं कंदे, किस्से-कहानियाँ भी अगर लिखीं तो बहुत लम्बी-चौड़ी नहीं ; जिसने ज़्यादातर कुदरत के नज़्मारे बयान किये या अपने दिल के जज़्बात कागज़ पर उतारकर रख दिये । यह शायर मिर्याँ नज़ीर अकबराबादी थे । थे तो आप मुसलमान, लेकिन हिन्दुस्तानी कवितायें भी आपने बहुत अच्छी कीं । ‘कृष्ण कन्हैया का बालपन’ तो ऐसा लिखा है ज़ैसा ब्रजभाषा के भक्त कवि ने लिखा हो । बाज़ लोगों ने इन्हें उर्दू का शेक्सपियर माना है । हम इस बहस में न पड़ते हुए यह ज़रूर कहेंगे कि उस ज़माने में ऐसा कोई कवि नहीं था जिसने नज़ीर की तरह ‘तिल के लड्डू’, ‘गिलहरी का बच्चा’ ‘ताजमहल का रौजा’, ‘भैरोंजी की तारीफ़’, ‘कृष्णजी का बालपन’, ‘हज़रत मुहम्मद की नात’, ‘बरसात की फुहारें’ वगैरह रंग-दिरंग की शायरी की हो ।

नया दौर

सन् १८५६ ई. में अवध का दरबार खतम हुआ । नवाब बाज़िद-अली शाह कैद करके कलकत्ते भेज दिए गये और १८५७ में देहली के बादशाह बहादुरशाह तख़्त से उतार दिये गए । अंग्रेज़ी अमलदारी हुई; लोगों के ख़यालात बदलने लगे । फिर शायरी में भी थोड़ा-बहुत उलट-फेर भी लाज़िमी था । मगर सवाल यह था कि पुराना दर्रा छोड़कर नयी राह पर क़दम रखने की हिम्मत कौन करे । इसका सेहरा मौलाना मुहम्मद हुसैन ‘आज़ाद’ के सिर रहा जो ‘ज़ौक’ के शागिर्द थे और ‘ग़ालिब’ के मशहूर शागिर्द ख़्वाज़ा अलताफ़ हुसैन ‘हाली’ के साथी थे । इन दोनों को अंग्रेज सरकार की तरफ़ से “शम्सुल उलेमा” (विद्वानों के सूर्य) का ख़िताब मिला । आम तौर से लोग हाली को ही नयी उर्दू शायरी का जन्मदाता मानते हैं । लेकिन मौलाना मुहम्मद हुसैन ‘आज़ाद’ को भी इसका फ़ख़ हासिल है ।

नयी शायरी का पहला ‘मुनाज़मा’ (मज़मून पर कविता करना) १८७४ ई. में ‘आज़ाद’ की कोशिश से, डाइरेक्टर तालीम पंजाब के इन्तज़ाम में लਾहौर में हुआ । आपने उसके पहले ही नयी शायरी के बारे में अपनी

राय भी ज़ाहिर की थी। यह कम अचरज की बात नहीं है कि जिस तरह गद्य के प्रारंभ करने में एक अंग्रेज़ यानी जॉन गिलक्राइस्ट का हाथ था, उसी तरह उर्दू की नयी शायरी की शुरुआत में भी एक अंग्रेज़ कर्नेल हौल राइट का हाथ था। उस मुनाज़िमे में मौ० आज़ाद ने उर्दू कविता के मौजूदा रूप रंग की खराबी बयान की और उसका रूख बदलने पर जोर दिया। मुनाज़िमों का सिलसिला कुछ सालों तक ही रहा। कहने की गरज़ यह कि जैसे उर्दू शायरी दक्खिन से शुरू हुई उसी तरह इसकी नयी शायरी की बुनियाद पंजाब में पड़ी।

सन् १८९४ में हाली का दीवान छपा। यह दीवान पिछले दीवानों के रंग से क़तरई अलग था। शायरी की रंगीनी तो इसमें कम थी; मगर मज़मून नये ढंग के थे। छिछोरेपन की बातें नहीं थीं। उस वक़्त कुछ लोगों ने इसे पसन्द और ज़्यादा लोगों ने नापसन्द किया। इसमें शायरी का चटखारा तो कम था ही। इसलिए जो लोग लफ़्ज़ों के उलट-फेर, जुमलों के बनाव-सिगार, अलंकार की बारीकियों और कठिन समस्या पूर्ति को ही कविता समझते थे, उन्हें हाली की कविता फीकी जान पड़ी, और उन्होंने इसका मज़ाक उड़ाना शुरू किया। लेकिन ज्यों-ज्यों वक़्त गुज़रता गया, नयी पौद के लोगों को हाली की शायरी ज़्यादा पसन्द आती गयी। और आज हाली के खिलाफ़ आवाज़ उठानेवाले इने-गिने ही रह गये हैं। 'हाली' का जो दीवान छपा—उसकी शायरी से ज़्यादा लोगों ने उसका दीबाचा पसन्द किया। बाद में वह 'मुक़द्दमा शेरो शायरी' नाम से अलग ही छपा गया। उनमें हाली ने बड़े ही जोरदार लफ़्ज़ों में पुरानी शायरी की नुक्ता-चीनी फी। कहा—वह शायरी हमारे देश और जाति की क्या भलाई कर सकती है जिसमें कोई सन्देश न हो, जो महज़ लफ़्ज़ों के ढेर-फेर की शायरी हो। जिसे कोई बाप अपनी बेटी के सामने पढ़ने में हिचकिचाये—न पढ़ सके। हाली ने चेतावनी दी कि शायर ज़माने के बदलते हुए रंग को देखे, गुल व बुलबुल की कहानियों में और जुलू व गेसू की उलझनों में न पड़े

रहें। यह चेतावनी ठीक समय पर दी गयी थी। उसका असर भी हुआ—
मगर आहिस्ता, आहिस्ता। हाली ने लिखा—

‘गुनहगार बच जायेंगे इससे सारे।

जहन्नुम को भर देंगे शायर हमारे ॥’

यह उनके दिल से निकली हुई बात थी। हाली ने बड़े कड़े शब्दों में शायरों को झूठी खुशामद और विषय-लोलुपता से बचने की नसीहत दी। वे खुद पहले पुराने रंग में शायरी कहते थे। बाद को आपने वह रंग छोड़ा और छोड़ते वक़्त लिखा—

“बुलबुल के चमन में हमज़बानी छोड़ी।

बज़मे-शोभरा में शेरखानी छोड़ी।

जब से दिले-नादां हमें छोड़ा तू ने;

हमने भी तेरी राम कहानी छोड़ी ॥”

हाली के दीवान छपने के चार साल बाद पंजाब में एक मशहूर उर्दू के आलिम सर अब्दुल क़ादिर ने उर्दू के बारे में सन् १८९८ ई. में New School of Urdu Literature के नाम से अपने लेखकों का एक संग्रह छापा। इसी के कुछ साल पहले मौ. मुहम्मद हुसेन ‘आज़ाद’ ने उर्दू शायरों का तज़िकरा छापा जिसका नाम ‘आवे हयात’ था। यों तो इसके भी पहले उर्दू कवियों की जीवनी और उनके कलाम के नमूने बहुत कुछ छप चुके थे। लेकिन ‘आज़ाद’ ने यह किताब ऐसे ढंग से लिखी कि इसकी धूम मच गयी। ‘आज़ाद’ ने उर्दू कविता में हाली का-सा नाम तो नहीं पाया, मगर गद्य में इनका स्थान बहुत ऊँचा है। ‘आवे हयात’ के मानी हैं ‘अमृत’। सचमुच इस किताब में बहुत मिठास है। गो कि इस विषय की और कई किताबें छप चुकी हैं, नयी खोजों के मुताबिक आवे हयात की कई बातें ग़लत भी साबित हो चुकी हैं, फिर भी जब तक उर्दू का साहित्य रहेगा—यह किताब ज़िन्दा

रहेगी। आज़ाद ने 'आवे हयात' में उर्दू शायरों से कहा कि तुम हिन्दी कवियों की ओर देखो, वह प्राकृतिक दृश्य और मन के भावों को कितनी ऊँचाई पर ले जाकर सुन्दरता से बाँधते हैं। इस तरह उन्होंने एक नयी राह दिखायी।

उधर १९ वीं सदी उत्तम हो रही थी, इधर इक़बाल की शायरी पनप रही थी। इक़बाल की शायरी भी हाली की तरह पहले सर अब्दुल क़ादिर के उर्दू रिसाले 'मख़ज़न' में छपा करती थी। इस रिसाले और अंजुमन-हिमायतुल-इस्लाम की वदौलत इक़बाल की शोहरत फैलने लगी। शायरी के शुरू के ज़माने में इक़बाल राष्ट्रीयता की ओर झुके हुए थे। लेकिन २०वीं सदी के शुरू में उनका रंग बदला और वे इस्लाम और राष्ट्रीयता में बैर बताने लगे। यह कुछ भी हो मगर जहाँ तक इक़बाल की शायरी का तात्लुक है; उन्होंने अपना अलग रंग क़ायम किया। उनका क़लाम हाली की तरह आसान नहीं था, लेकिन उसमें एक सन्देश था। उन्होंने इस्लाम के कर्मयोग को बड़ी अच्छी तरह पेश किया।

पंजाब में जब यह सब हो रहा था, बाकी प्रान्त भी सूने नहीं थे। १८६७ ई. में मौ. मुहम्मद इस्माइल (यू. पी.) ने अंग्रेज़ी नज़्मों का तर्ज़ुमा करके छापा। इस्माइल ने कुछ अनुकान्त कविता भी की। आपके अलावा अल्लामा क़ैफ़ी, अकबर इलाहाबादी, नज़म तबातबाई और शरर लखनवी के नाम भी उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने अनुकान्त कविताएँ कीं। मगर बच्चों के वास्ते मौ. मुहम्मद इस्माइल-सी नज़्मों आज तक किसीने नहीं लिखीं। आप ही पहले शायर हैं, जिन्होंने देहात के सीन (Scene) अपनी शायरी में बाँधे हैं और देहता के जीवन की झलक दिखायी है।

अकबर इलाहाबादी ने हास्यरस में कविता की। मगर आपके मज़ाक और तर्ज़ में एक छिपा हुआ संदेश था। वे इंशा की तरह महज़ हँसने-हँसाने के वास्ते नहीं लिखते थे। बल्कि यों कहना चाहिए कि यह हँसाने के बजाय रुलाने के वास्ते शायरी करते थे। हाली और अकबर दोनों ही नये ढंग के शायर थे। मगर दोनों में पूरब और पच्छिम का फ़रक था। हाली सर

दि अहमद के हामी थे; मुसलमानों को उसी राह पर लाना चाहते थे। मगर अकबर सर सैयद की रबिश के बहुत खिलाफ थे और कहीं कहीं तो उन्होंने उनका मज़ाक भी उड़ाया है। यों तो अकबर ने पुराने ज़माने के बाबू और रईस और नई रोशनी के जेंटिलमैन—दोनों पर फ़न्तियाँ कसी हैं। मगर नये रंगवालों को तीखे-तीर मारे हैं। इसमें शक नहीं कि अकबर ने एक नया रास्ता निकाला। बहुतों ने उनकी राह पर चलने की कोशिश की, मगर कामयाबी किसी को उतनी हासिल नहीं हुई। अकबर ज़बान के नहीं, ख़्यालात के मुसव्विर थे, इसलिये नज़्म के कायदे-क़ानूनों की उन्होंने ज़्यादा परवाह नहीं की है। आज भी अकबर के शेर लोगों की ज़बानों से लगे फिरते हैं।

शिवली उर्दू में अपनी शायरी के मुकाबिले नज़्म में ज़्यादा मशहूर हुए। शायद उर्दू में आप ही पहले शायर हैं जिन्होंने राजनीति को लेकर शायरी की है, गो उन्हें पूरा राष्ट्रीय शायर कहना मुश्किल है। शिवली का मिशन हाली और अकबर के बीच का था।

इस सिलसिले में अगर रामपुर के नवाब कल्ये अलीख़ाँ का ज़िक्र न किया जाय—जो खुद एक शायर थे—तो यह हिम्सा अभूरा रह जायगा। 'तस्लीम' लखनवी, अमीर 'मीनाई', 'मुनीर' शिकोहावादी, 'बहर' लखनवी वगैरह शायरों को रामपुर दरबार से बहुत मदद मिली।

मगर नये रंग की शायरी की तरफ़ की जिस रियासत में हुई वह दक्खिन की मशहूर रियासत हैदराबाद है। जैसे देहली के उजड़ने के बाद लखनऊ में उर्दू शायरी की धूम मची, वैसे ही लखनऊ में नवाबी का तफ़्ता उलटने के बाद हैदराबाद में उर्दू शायरी का ज़ोर बंधा। देहली के अंतिम बादशाह बहादुरशाह 'ज़फ़र' के उस्ताद शेख़ मुहम्मद इब्राहीम को रियासत हैदराबाद के दीवान राजा चंदूलाल ने बुलाया था। लेकिन वह नहीं गये। उनकी एक ग़ज़ल का मक़ता है—

“ गरचे इन रोज़ों दकिन में है बहुत क्रद्रे सुखन;
कौन जाए ‘ज़ौक़’ पर दिली की गलियाँ छोड़कर ।”

‘ज़ौक़’ तो दिल्ली की गलियाँ छोड़कर दक्खिन नहीं गये। मगर उनके मशहूर शागिर्द नवाब मिर्ज़ाखाँ ‘दाग़’ वहाँ पहुँचे और पहुँचते ही उनकी किस्मत खुल गयी। यहाँ से गरीबी हालत में गये थे और वहाँ मालामाल हो गये। मीर महबूब अलीखाँ निज़ाम हैदराबाद ने उनकी खूब क़द की, इनाम-एकराम दिये। भारी तनफ़्वाह मुकर्रर की। ‘फ़सीहुल मुल्क’ का खिताब दिया। मगर दाग़ का ज़िक्र हमारे इस तज़िकरे के बाहर है। हाँ, उनके शागिर्दों में नये रंग का सब से मशहूर शायर इक़बाल हुआ।

दाग़ के पहुँचने के कुछ समय बाद ही हैदराबाद में लखनऊ का एक ऐसा शायर पहुँचा, जिसने उर्दू में नया रंग लाने में बड़ी मदद की। हमारी मुराद मुंशी अमीर अहमद ‘मीनाई’ या पं. रतननाथ ‘सरशार’ से नहीं, बल्कि अली हैदर नज़म तबातबाई से है।

तबातबाई पैदा तो लखनऊ में हुए थे, जहाँ उन्होंने मुंशी मेंदू लाल ‘ज़ार’ से तालीम पायी थी। परन्तु उनकी शायरी कलकत्ते से मशहूर होना शुरू हुई, जहाँ वह वाज़िदअली शाह के लड़के को पढ़ाते थे। वाज़िद अली-शाह के मरने के बाद उन्होंने हैदराबाद का रुख़ किया। अब तक पुराने रंग की कविता करते थे, लेकिन हैदराबाद आने के बाद नया रास्ता पकड़ा। अंग्रेज़ी नज़मों का सुन्दर तर्जुमा किया, जिनमें Grey’s Elegy का ‘गोरे गरेबा’—बहुत मशहूर है। अंग्रेज़ी नज़मों के तर्जुमों में इस्माइल मेरठी, ‘सरूर’ जहानाबादी, तिलोकचन्द ‘महरूम’ और मुन्शी महाराज बहादुर ‘बर्क़’ ने अच्छी कामयाबी हासिल की।

आला हज़रत मीर महबूब अली खाँ निज़ाम हैदराबाद और महाराजा सर किशनप्रसाद ‘शाद’ ने शायरों की ऐसी क़द की कि बीसवीं सदी के शुरू होने के पहले ही हैदराबाद उर्दू कवियों का ख़ासा मरकज़ बन गया। आज-

कल के निज़ाम मीर उस्मान अली खाँ भी शायरों की क़द करते हैं। उनके उस्ताद 'जलील' हैं। लेकिन वे पुराने रंग में कहते हैं। नये ढंग की ग़ज़लें कहनेवाले 'फ़ानी' बदायूनी भी हैदराबाद में ही रहते हैं। २० वीं सदी में जो मशहूर शायर हैदराबाद पहुँचे उनमें 'जोश' मलीहाबादी, 'आज़ाद' अन्सारी और 'यास' अज़ीमाबादी उल्लेखनीय हैं। आज़ाद अन्सारी 'हाली' के शार्गिर्द हैं। सन् ३६ में हैदराबाद छोड़कर देहली चले आये। 'जोश' भी देहली आकर रहने लगे। 'यास' जो अब 'यगाना' लखनवी तख़ल्लुस करते हैं, अब भी हैदराबाद ही में हैं। बाहर से हैदराबाद आनेवाले नये रंग के शायरों में 'सलीम' पानीपती और बेनज़ीरशाह का नाम लेना भी ज़रूरी है।

यह तो बाहर से हैदराबाद आनेवालों का ज़िक्र रहा। खुद हैदराबाद में भी अच्छे-अच्छे शायर पैदा हुए। पिछली सदी में 'कैफ़ी' हैदराबादी मशहूर शायर हुए हैं। यों मुन्शी अज़मतुल्ला खाँ को भी हैदराबाद का ही शायर मानना चाहिए। क्योंकि पाँच साल की उम्र में ही आप देहली से हैदराबाद चले आये। इनका कलाम थोड़ा है, मगर अपने रंग का अनोखा है, कई कवितायें हिन्दी छन्द में लिखी हैं। ज़बान हिन्दोस्तानी है। दुख है कि इनकी मौत अघेड़ उम्र में ही हो गयी। आजकल 'अमज़द' का नाम भी मशहूर है। ये हैदराबाद के किसी सरकारी महकमे में काम करते हैं। रुबाइयाँ अच्छी कहते हैं। कलाम दर्द से भरा होता है।

पंजाब के 'हफ़ीज़' जालन्धरी, यू. पी. के 'सागर' निज़ामी, 'बिस्मिल' इलाहाबादी व 'वहज़ाद' लखनवी के कविता पढ़ने की बड़ी धूम है। नये ढंग की ग़ज़लें कहने में हसरत मोहानी, 'जिगर' मुरादाबादी, 'असगर' और 'फ़ानी' बदायूनी बहुत मशहूर हैं। मौलाना हाली, ब्रजनारायण 'चक्रवर्त', लालचन्द 'फ़लक' की कवितायें राष्ट्रीय रंग में रंगी हुई हैं।

ग़ालिब के ज़माने में फ़ारसी के बहुत ज़्यादा लफ़्ज़ शायरी में इस्तेमाल होने लगे थे। 'दाग़' ने इस रविश को रोका। हाली ने इसमें इसलाह

दी और हिन्दी शब्द इस्तेमाल किये। मौ० मुहम्मद इस्माइल ने भी इस तरफ बड़ा काम किया। आजकल के शायरों में अल्लामा कैफ़ी, हफ़ीज़ ज़ाल्मधरी, सागर निज़ामी, 'सईद' बरेलवी, और 'वासित' बिस्वानी वगैरह शायर हिन्दी के शब्द खूबी और बहुतायत से इस्तेमाल करते हैं। इन्हीं लोगों ने उर्दू शायरी को—जो दरबारों में पैदा हुई थी—हिन्दुस्तान की ज़मीन में ला खड़ा किया है। इसके पहले ही 'आज़ाद', 'हाली' 'बर्क', इस्माइल मेरठी, और मौ० अज़मनुल्ला ख़ाँ वगैरह ने वह रास्ता साफ़ किया था इसमें शक नहीं।

अंग्रेज़ी के अलावा संस्कृत से भी काफ़ी पुस्तकों के तर्जुमे उर्दू शायरी में हुए हैं। भगवद्गीता, महाभारत, रामायण, कलिदास की कवितायें, कबीर के दोहों के अनुवाद मशहूर हैं।

तमाम बातें देखकर यह मालूम होता है कि उर्दू कविता का भविष्य अच्छा है। 'हाली' और 'आज़ाद' ने उसे जिस ढंग पर लगा दिया, वहाँ से उस अपनी मंज़िल नज़र आती है। मगर अब भी पुराने रंग के कहनेवाले ही ज़्यादा हैं। वे मुशायरे करके अपनी तबियत खुश कर लेते हैं। उर्दू के साप्ताहिक और माहवार रिसालों में भी अभी तक पुराना रंग ही ज़्यादा जगड़ घेरता है। उर्दू में प्रेम-रस ज़्यादा है, वीर रस-की कुछ झलक मिलती है। पुरानी कविता में—खासकर मरसिये में वीर-रस की कुछ कमी है। आजकल राष्ट्रीय कविताओं में वीर-रस पाया जाता है। भक्ति और वैराग्य स्वाइयों में मिलता है। वेदान्त कहनेवालों में स्वर्गीय मुंशी सूरजनारायण 'मेहर' व पं. अमरनाथ 'साहिर' अपना जवाब नहीं रखते।

पुराने ढंग के शायर-शायरी के क़ायदे-क़ानून की पाबन्दी ज़्यादा करते थे। आज के शायर इन बातों का उतना ख़याल नहीं रखते। अगर शायरी की रूढ़ ख़यालात हैं तो ज़रूर उर्दू शायरी आगे बढ़ रही है। इश्किया शायरी का रंग अब फ़ीका पड़ता जा रहा है। इक्क़बाल की बंदीलत कर्मयोग का जो फ़लसफ़ा रायज़ हुआ अब वह ग़ज़लों में भी आने लगा है। इस रंग

के और भी गहरा होने की उम्मीद की जा रही है। हिन्दी की तरह उर्दू में छायावाद या रहस्यवाद का असर नहीं आया।

देश की जगार का असर उर्दू कविता पर भी पड़े बिना नहीं रह सका है। सन् १९२१ ई. के असहयोग आन्दोलन से इस तरह की शायरी को बड़ी मदद मिली। जो लोग यह मानते हैं कि कला को मुफ़्रीद भी होना चाहिए उन्हें ऐसी शायरी से बहुत कुछ उम्मीद है। ऐसी कविता एक ज़बान में हो तो दूसरी पर भी असर डालती है। जैसे मुसहसे-हाली के बाद उसी रंग में मैथिलीशरण गुप्त ने हिन्दी में 'भारत-भारती' लिखी। जैसे-जैसे यह रंग गहरा चढ़ता जायगा वैसे-वैसे इश्किया-रस कम होता जायगा। और सच तो यह है कि हिन्दुस्तान जैसे गुलाम देश के वास्ते ऐसी शायरी की ज़रूरत है जो इस मुल्क और क़ौम को आगे बढ़ाये। उर्दू की शायरी में इसके चिह्न नज़र आ रहे हैं।

यह दीवाचा यहाँ ख़तम होने पर भी ख़तम नहीं होगा, जब तक कि हम पढ़नेवालों को उर्दू शायरी की किस्मों की मामूली जानकारी न करा दें।

राज़ल—यह अरबी ज़बान का लफ़्ज़ है। उसके मानी हैं औरतों से बातें करना। इसमें कई शेर होते हैं। हर शेर का मज़मून अलग-अलग होता है। प्रायः नौ या ग्यारह शेर होते हैं। पहले शेर को मतला कहते हैं—जिसके मानी हैं—उदय-स्थान। आखिरी शेर को—जिसमें शायर का तज़ल्लुस होता है—मक़ता कहते हैं। मक़ता के मानी हैं—काट देना। राज़ल के शेर प्रायः इश्किया होते हैं। नमूना नीचे दिया जाता है—

राज़ल—

कोई सूरत नज़र नहीं आती, कोई तदबीर बर नहीं आती,
मौत का एक दिन मुकर्रर है, नींद क्यों रात भर नहीं आती।
पहले आती थी हाले दिल पर हँसी, अब किसी हाल पर नहीं आती,

हम वहाँ हैं जहाँ से हमको भी, कुछ हमारी खबर नहीं आती ।
 यों ही कुछ बात है कि मैं चुप हूँ, वरना क्या बात कर नहीं आती ;
 जानता हूँ सबाब ताअतो जुहद, पर तबीयत इधर नहीं आती ।
 काबे किस मुँह से जाओगे 'ग़ालिब', शर्म तुमको मगर नहीं आती ॥

शेर—शेर दो मिसरों (चरनों) का होता है । अगर दोनों मिसरों के आखिर का लफ़्ज़ काफ़ियादार (तुक के साथ) न हो तो उसे शेर कहते हैं । अगर काफ़ियादार हो तो 'बैत' कहते हैं । दो शेर के मिलने से 'रुबाई' बनती है । रुबाई का पहला, दूसरा, व चौथा मिसरा काफ़ियादार होता है ।

शेर—

“ देखने से शौक्र पैदा; शौक्र से पैदा तलब ।
 आफ़ते-दिल आँख थी; दिल आफ़ते-जाँ हो गया । ”

—‘अकबर’

बैत—

“ दिल मेरा जिससे बहलता, कोई ऐसा न मिला ।
 बुत के बन्दे मिले; अल्लाह का बन्दा न मिला । ”

—‘अकबर’

रुबाई—

“जहाँ ने साज़ बदला; साज़ ने नग़मों की गत बदली,
 गतों ने रंग बदला; रंग ने यारों की मत बदली ।
 फ़लक ने दौर बदला ; दौर ने इंसान को बदला,
 गये हम तुम बदल ; क़ानून बदला, सल्तनत बदली ॥”

—‘अकबर’

क्रता—यह भी चार मिसरों का होता है। लेकिन इसमें दूसरा और चौथा मिसरा काफ़ियादार होता है—

“क़लाम ऐसा अक्सर सुना होगा तुमने,

सुना आज और कल असर दिल से उतरा।

मगर शेर ऐसा जो हो तेज़ नशतर,

धुंध से निकला, उधर दिल में उतरा ॥”

—‘अमज़द’

क्रता दो शेरों से ज़्यादा भी हो सकता है, लेकिन मतलब सिल-सिलेवार होता है।

क़सीदा—देखने में क़सीदे का रूप ग़ज़ल का ही सा होता है; लेकिन इसका मज़मून सिलसिले से होता है और ज़बान ज़्यादा मुश्किल होती है। फ़ारसी, अरबी के लफ़्ज़ क़सरत से आते हैं। आम तौर पर क़सीदे में किसी की तारीफ़ होती है। इसमें ग़ज़ल से बहुत ज़्यादा शेर होते हैं। क़सीदे राज-दरबारों में पढ़े जाते थे।

मुखम्मस—खम्म अरबी में पाँच को कहते हैं। इसमें पाँच मिसरों का एक बन्द होता है। कई बन्द मिलकर एक मुखम्मस होता है। हर बन्द के पहले चार मिसरों का काफ़िया एक होता है। और सब बन्दों के पाँचवें मिसरों का काफ़िया एक होता है।

मुखम्मस—

देखा जो रंग-ढंग गुलिस्तों का कुछ नया,

दीवानी हो गयी है, नहीं होश है ज़रा;

हर गुल पै लोट-पोट हुई जाती है सब,

गुलशन ने बाँध रखी है उलकृत की वह दवा ।

मस्तानावार फिरती है बे-अख्तियार आज ॥

—‘जन्त’ रामपुरी

मुसदस—मुसदस (षट्पदी) में तीन-तीन शेरों का एक बन्द होता है । कई बन्द मिलकर मुसदस होता है । हर बन्द में पहले चार मिसरे का काफ़िया एक होता है और पाँचवें और छठे मिसरे का काफ़िया अलग होता है । मरसिये मुसदस में ही लिखे जाने हैं । हाली, शिबली, चक्रवस्त के मुसदस बहुत मशहूर हैं ।

मुसदस—

“यह दाग़ वह नहीं, मिट जाए जो मिटाने से ;

यह दर्द वह नहीं, दब जाए जो दबाने से ।

यह आग़ वह नहीं, बुझ जाए जो बुझाने से;

चिता जलाई तो उनसर लगे ठिकाने से ।

अगिन अगिन में मिली, जल में जल, हुए सब पाक;

हवा हवा में, खला में खला, व खाक में खाक ॥”

—‘रअना’ कश्मीरी

मसनवी—इसमें जितने शेर होते हैं, उनके दोनों मिसरों का तुक मिलता है । मगर एक शेर का तुक दूसरे से नहीं मिलता । मसनवियों में अक्सर कोई कहानी कही जाती है । कहानी बड़ी हुई तो मसनवी में सैकड़ों हज़ारों शेर होते हैं । मसनवी के शेर इस तरह होते हैं ।

“है, है ! मेरा फूल ले गया कौन,

है, है ! मुझे दाग़ दे गया कौन ?

सम्बुल मेरा ताज़ियाना लाना,
 शमसाद इसे सूली पर चढ़ाना ।
 शबनम के सिवा चुरानेवाला,
 ऊपर से था कौन आनेवाला ।
 गुलची का जो हाथ उस पर टूटा,
 गुंचों के भी मुँह से कुछ न फूटा ।
 जिस हाथ में गुल हो, दाग हो जाए,
 जिस घर में हो गुल, चिराग हो जाए ।

—‘ गुलज़ारे नसीम ’

इसके अलावा भी मुसल्लस, मुरब्बा, तरकीब बन्द, तरजीब बन्द वगैरह कई किस्में हैं । लेकिन वह ज़्यादा रायज़ नहीं हैं । आजकल नये नये ढंग भी चले हैं—जिनको कोई नाम नहीं दिया जा सकता । हाँ, इतना कहा जा सकता है कि वे हिन्दी और अंग्रेज़ी के छन्दों से मिलते-जुलते हैं ।

शायरों का परिचय

मौलाना मुहम्मद हुसैन 'आज़ाद'

मौलाना मुहम्मद हुसैन 'आज़ाद' सन् १८२० ई. में देहली में पैदा हुए। इनके पिता का नाम बाक्र अली था। शायरी में इनके उस्ताद शेख मुहम्मद इब्राहीम 'ज़ौक' थे, जो देहली के आखिरी बादशाह बहादुर-शाह 'ज़फ़र' के भी उस्ताद थे। 'आज़ाद' के साथ पढ़नेवालों में हाफ़िज़ नज़ीर अहमद और मास्टर प्यारेलाल 'आशोब' का नाम खास तौर पर ज़िक्र के क़ाबिल है। मास्टर प्यारेलाल की ही कोशिश से 'आज़ाद' लाहौर पहुँचे, जहाँ इनका नाम हुआ। आज़ाद ग़दर के पहले लखनऊ भी गये थे; मगर वहाँ इनका कोई ठिकाना न लगा। लाहौर में मास्टर प्यारेलाल ने आज़ाद की मुलाक़ात मेजर फुलर से करा दी, जो तालीम के महक़्मे के डाइ-रेक्टर थे। आज़ाद ने लाहौर के तालीमी महक़्मे में नौकर होने के बाद उर्दू, फ़ारसी में कोर्स की नयी किताबें लिखीं, जो बहुत पसन्द की गयीं और बहुत दिनों चलीं।

लाहौर में आज़ाद ने अंजुमन क़ायम की और इसी के ज़रिये नयी शायरी का प्रचार किया। सन् १८६७ में इस पर पहला लेक्चर दिया और १८७४ में पहिला मुनाज़िमा (बैठक) कराया, जिसमें समस्या-पूर्ति की जगह विषय-पूर्ति रखी गयी थी। इस मुनाज़िमे का बहुत कुछ श्रेय कर्नल डोलराइड को है जो उस समय तालीम के डाइरेक्टर थे।

सन् १८८३ ई. में आज़ाद को सरकार की तरफ़ से ईरान भेजा गया, जहाँ से वह नयी फ़ारसी में निपुण बनकर आये। फिर आप उर्दू-फ़ारसी के प्रोफ़ेसर मुक़र्रर हो गये। 'अतालीक़ पंजाब' नाम के अख़बार के सब-एडिटर

भी रहे, जिसके एडीटर मास्टर प्यारेलाल थे। 'पंजाब मैगज़ीन' के भी एडीटर रहे। १८८७ ई. में महारानी विक्टोरिया की जुबली हुई तो इनको 'शम्सुल उलेमा' का खिताब मिला।

कुछ दिनों बाद 'आज़ाद' की प्यारी बेटी मर गयी, जिनको आज़ाद ने बहुत प्यार से पाला व लिखाया-पढ़ाया था। इस रंज का असर 'आज़ाद' पर बहुत पड़ा और धीरे-धीरे उनका दिमाग खराब हो गया। २० साल तक इसी हालत में रहने के बाद १९१० में इनकी मौत हो गयी।

नयी शायरी की इमारत बनाने का फ़ख्र मौलाना हाली को है और उसकी नींव रखने का सेहरा आज़ाद के सिर है। उर्दू गद्य भी आज़ाद ने खूब लिखा था।

ख्वाजा अल्ताफ़ हुसैन साहब 'हाली' पानीपती

ख्वाजा अल्ताफ़ हुसैन हाली सन् १८३७ ई. में पानीपत में पैदा हुए। वालिद का नाम ख्वाजा मलिक अली था। बाप-माँ इनके छुटपन में ही चल बसे थे। इनकी परवरिश इनके बड़े भाई ख्वाजा इमदाद हुसैन ने की। १७ साल की उमर में आपकी शादी हो गयी, मगर पढ़ने का शौक नहीं छूटा। देहली में ससुराल थी। वहीं दो साल तक पढ़ा। १९ बरस की उम्र में हिसार की कचहरी में नौकर हो गये। शायरी का शौक तो पहले ही से था। देहली में 'ग़ालिब' से इस्लाह लेते थे। कुछ दिनों बाद जहाँगीराबाद में नवाब सुस्तफ़ा खाँ 'जेफ़ता' के लड़कों को पढ़ाने गये। आठ साल तक यहीं रहे और 'जेफ़ता' साहब से इस्लाह लेते रहे। फिर लाहौर के सरकारी बुक-डिपो में नौकर हो गये। यहीं से इनकी शायरी चमकना शुरू हुई। यहाँ आप अंग्रेज़ी से तर्ज़ुमा की हुई किताबों का प्रूफ़ पढ़ते थे। अब तक पुराने रंग की शायरी करते थे; पर अब नये रंग की चाट लग गयी और लाहौर में ही इन्होंने 'बरखा', 'उम्मेद', 'हुब्बे-वतन' आदि अपनी मशहूर कवितायें लिखीं। लाहौर से बदलकर आप देहली के

एंग्लो-अरबिक कालेज में नौकर हो गये। यहीं पर इनकी मुलाकात सय्यद अहमद से हुई; और इसके बाद आपने मुसलमानों की हालत पर कविता लिखी जो 'मुसद्दे-हाली' के नाम से मशहूर है। इन्होंने गद्य में भी बहुत बढ़िया किताबें लिखी हैं, जिनमें 'मुकद्दमा शैर व शायरी' सबसे मशहूर है। इसमें आपने शायरों को नये रंग की शायरी करने और पुराने रंग को छोड़ने की वकालत की है।

आखिरी ज़माने में हाली को हैदराबाद रियासत से १००) महीना मिलने लगा था और उन्होंने नौकरी छोड़ दी थी। सरकार की तरफ से आपको 'शम्सुल उलेमा' (विद्वानों में सूर्य) का खिताब मिला। ३१ दिसंबर १९१४ में आपका इन्तकाल हो गया।

आपने नये रंग की शायरी को सबसे ज़्यादा रायज़ किया।

खानबहादुर अकबर हुसैन 'अकबर' इलाहाबादी

'अकबर' इलाहाबादी सन् १८४६ ई. में पैदा हुए। इनके दादा सय्यद फ़ज़ल मुहम्मद लखनऊ के मशहूर मौलवी थे। इनके पिता सय्यद तफ़्ज़ल हुसैन भी अच्छे आलिम थे; आखिरी उम्र में आप फ़कीर हो गए। इसलिए घर की माली हालत अच्छी न थी। नतीजा यह हुआ कि अरबी-फ़ारसी की मामूली तालीम के बाद ही १५ साल की उम्र में अकबर को नौकरी कर लेना पड़ी। आप सन् १८६४ में ईस्ट इंडिया कम्पनी के पब्लिक वर्क्स में नौकर हुए। १८६६ में मुफ़्तारी का इम्तहान पास किया। तीन साल बाद नायब तहसीलदार हो गये। मगर यह नौकरी भी छोड़ दी और इम्तहान देकर वकील बन गये। कुछ दिन वकालत करने के बाद मुन्सिफ़ हो गये और तरक्की करते-करते जज हो गये। सन् १९०३ में इस ओहदे से इस्तीफ़ा दे दिया।

सन् १९०८ में इनकी कविताओं का पहला संग्रह प्रकाशित हुआ। वक़्त के लिहाज़ से इनकी शायरी चार हिस्सों में तक्कीम हो सकती है।

पहले तो यह और उर्दू शायरों की तरह पुराने ढंग में ग़ज़लें वगैरह कहते रहे। फिर नया रंग पकड़ा और इनकी ग़ज़लों में कुछ नया और कुछ पुराना रंग नज़र आने लगा। फिर यह बिलकुल नये रंग में कहने लगे। आखिरी हिस्से में तो निराशावाद पैदा हो गया था।

अकबर उर्दू में और शायद हिन्दुस्तान के कवियों में हास्यरस में बेजोड़ हैं। उनके हास्य में एक संदेशा पाया जाता है। वह जब फ़क्तियाँ कसने पर आते हैं तो फिर किसी को नहीं छोड़ते। हिन्दू हो या मुसलमान, सरकार हो या क़ौमी लीडर, बेटा हो या बहू, सब का मज़ाक़ उड़ाया है। कहीं-कहीं तो वे सीमा से बाहर भी पहुँच गये हैं।

सन् १९२१ ई. में आपका देहान्त हो गया।

अल्लामा शिब्ली नुमानी

अल्लामा शिब्ली सन् १८५७ ई. पैदा हुए, जो भारत की तारीख़ में बड़े उथल-पुथल का साल था। इनकी तबीयत की कुदरती रूख़ान तो फ़ारसी शायरी की तरफ़ थी, मगर हाली के असर से इन्होंने उर्दू कविता करना शुरू की। पिछली सदी में उर्दू के जो दो-चार ज़बर्दस्त पाये हुए हैं उनमें शिब्ली भी एक थे। लेकिन इनका नाम उर्दू कविता से इयादा गद्य लिखने में मशहूर हुआ। उर्दू में सबसे पहले पोलिटिकल रंग की शायरी लिखने का सेहरा अल्लामा शिब्ली के ही सिर है।

शिब्ली ज़िला आजमगढ़ के एक गाँव में पैदा हुए। इनके पिता का नाम शेख़ हबीबुल्ला था और वह आजमगढ़ में वकालत करते थे। उनकी वकालत खूब चलती थी। शिब्ली को शुरू से ही पढ़ने-लिखने का बेहद शौक़ था। पहले घर पर पढ़ते रहे, फिर लाहौर गये और वहाँ फ़ारसी-अरबी पढ़ी, १९ साल की उम्र में हज को गये। हज से लौटकर पहले वकालत की फिर सरकारी नौकरी करने लगे। सन् १८८२ ई. में अपने छोटे भाई मेहदी अली से मिलने के लिये अलीगढ़ गये तो वहीं सर सैयद अहमद खाँ से मुलाक़ात

हुई और वह वहाँ कालेज में प्रोफेसर हो गये। सर सैय्यद के ज़ोर देने पर कालेज के आवाते में ही रहने लगे। यहीं से उन्होंने प्रो. आर्नाल्ड के साथ इस्लामी देशों का दौरा किया। तुर्की में उन्हें सरकार की ओर से एक तमगा मिला था। सन् १८९८ में सर सैय्यद के मरने के बाद अलीगढ़ से जी उचट गया। तब नवाब सर वक़ारुल उमरा ने उन्हें हैदराबाद बुला लिया और शिबली वहाँ चार साल तक साहित्यिक काम करते रहे। १८९४ में शिबली ने 'नदवा' नाम की शिक्षा-संस्था मुसलमानों के वास्ते कायम की। उर्दू साहित्य की सेवा के लिए उन्होंने आजमगढ़ में "दारुल मुसन्नफ़ीन" (लेखक-संघ) कायम किया। यह दोनों संस्थाएँ अब भी काम कर रही हैं।

सन् १९१४ ई. में—जिस साल हाली इन्तकाल कर गये—शिबली भी इस दुनियाँ से कूच कर गये।

महाराजा सर किशन प्रसाद 'शाद'

महाराजा सर किशन प्रसाद (कृष्ण प्रसाद) 'शाद' सन् १८६२ में पैदा हुए। इनके नाना चंदू लाल साहब 'शादां' भी मशहूर शायर थे। कवियों और साहित्यिकों का बहुत मान व इज्ज़त करते थे। इन्हीं की बदौलत हैदराबाद दक्खिन में उर्दू कविता का इतना चर्चा बढ़ा। महाराज सर किशन प्रसाद के पिता का नाम राजा हरि किशन प्रसाद था। ये जाति के सूर्य वंशी खत्री हैं। शायरी में मीर महबूब अली खाँ आसफ़ निज़ाम हैदराबाद के शार्गिद हैं। महाराजा साहब बहुत दिनों तक हैदराबाद रियासत के प्रधान मंत्री रहने के बाद १९३६ में, उम्र ज़्यादा हो जाने की वजह अपने ओहदे से रिटायर हो गये हैं। आप सूफ़ी मत को बहुत पसन्द करते हैं। आप खुद मशहूर शायर ही नहीं हैं, बल्कि बहुत से मशहूर कवियों की परवरिश भी करते हैं। पिछले कवियों में सरशार, अमीर, और दाग़ की इन्होंने खूब कद्र की। आजकल भी कई शायर आपके दरबार से फ़ायदा उठा रहे हैं। महाराजा साहब की शायरी हर रंग में पायी जाती है। नज़म और नस्र दोनों में

आपकी किताबें हैं। बाग़े-शाद; मज़मूए-रुबाइयाते-शाद; मज़मूए-मुनाजात; ज्ञानदर्पण; मस्नवी-आईनए-वहदत; गुबारे-शाद; नारअए-मस्ताना वगैरह बहुत मशहूर हैं। फ़ारसी और उर्दू दोनों में आपने शायरी की है।

महाराजा साहब तबीयत के बहुत सादा और सरल हैं। आपको हिज़ एक्स्टेन्सी, राजए-राजगान, महाराजा, सर, अमीन-उल-सलतनत, जी. सी. एस. आई., वगैरह के खिताब मिले हैं।

सय्यद मुहम्मद बेनज़ीर शाह

आप १८६३ ई. में इलाहाबाद ज़िला के कड़ा-मानिकपुर में पैदा हुए। इनके वालिद मौलाना शाह एहसान अली क़ादिरि बड़े मशहूर मौलवी थे। बेनज़ीर शाह को ख़ास तौर पर अरबी और फ़ारसी की तालीम दी गयी। ग़ज़ल में वजहउल्ला इलाहाबादी से और मस्नवी में मुन्शी अमीर मीनाई से इस्लाह लेते थे। जवानी से ही हैदराबाद में रहने लगे। इनकी मस्नवी 'अलकलाम' बहुत मशहूर है। आपने ग़ज़लों भी अच्छी कही हैं। प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन आपने बहुत अच्छा किया है। इनका देहान्त हाल ही में हुआ। आप एक बुजुर्ग सूफ़ी थे।

पंडित अमरनाथ मदन 'साहिर' देहलवी

पंडित अमरनाथजी का तख़ल्लुस 'साहिर' है। बरेली में सं. १८६३ ई. में पैदा हुए। आपके पिता रायबहादुर जानकीनाथ मदन बरेली ग्युनिसि-पालिटी में नौकर थे। साहिर साहब के चचा ब्रिटिश फ़ौज में सूबेदार थे और ग़दर में मारे गये। इसके बाद आपके पिता फ़ौज में मीर मुंशी मुक़र्रर हुए। १८७० ई. में वे नौकरी छोड़कर देहली आ गये। फिर आपके पिता ने सरकारी रेल महकमे में पेंशन मिलने तक नौकरी की।

साहिर साहब अंग्रेज़ी पढ़ने के वास्ते आगरा आये—वहाँ मुशायरों में भी शामिल होते रहे। और अब्दुल हलीम आसिम काशानी से इस्लाह लेते रहे।

आप नौकरी के सिलसिले में अजमेर व देहली में रहे। फिर सरकारी नौकरी मिली और पंजाब में बहुत दिन तक रहे। तहसीलदारी के ओहदे से पेंशन ली और देहली में अपने मकान 'लाल-हवेली' में रहने लगे। देहली आकर आपने 'बज़्मे-सखुन' बनायी जो शायरी की तरक्की में बहुत काम कर रही है। आपकी शायरी वेदान्त के रंग में रंगी है। 'मेहर' देहली ने भी शायरी में वेदांत लिखा है, मगर उनका नम्बर साहिर साहब के बाद ही आता है। आपकी कविता-संग्रह का नाम 'कुफ़े-इश्क़' है।

डाक्टर सर शेख़ मुहम्मद इक़बाल, एम. ए.

इक़बाल के बुजुर्ग काश्मीर से सियालकोट (पंजाब) आये। इक़बाल यहीं सन् १८७० में पैदा हुए। कालिज की तालीम लाहौर में पायी। स्काच मिशन कालेज के शम्सुल उलेमा मौलवी सैयद अमीर हसन ने इनमें अरबी-फ़ारसी का शौक़ पैदा किया। फलसफ़ा के मशहूर प्रोफ़ेसर आनॉल्ड इनके उस्ताद रहे और उनका असर भी ज़बर्दस्त पड़ा।

कालेज के ज़माने से ही इक़बाल की शायरी मशहूर होने लगी। उस वक़्त सर अब्दुल क़ादिर का मासिक पत्र 'मख़ज़न' बहुत मशहूर था। इक़बाल की बहुत-सी कवितायें उसमें छपीं और पसन्द की गयीं। अंजुमन-हिमायते-इस्लाम में आपने जो नज़्में पढ़ीं उससे इनको खूब शोहरत मिली। कालेज में पढ़ते वक़्त इक़बाल अपना कलाम अर्शद गुरगानी को दिखाया करते थे। फिर 'दाग़' से इस्लाह लेते रहे। लेकिन आपको 'ग़ालिब' का रंग बहुत पसंद था।

इक़बाल बी. ए. पास करने के बाद पहले ओरियण्टल कालेज, लाहौर में प्रोफ़ेसर हुए। १९०५ में युरप गये। वहाँ बैरिस्टरी और पी-एच. डी. के इम्तेहान पास किए। १९०८ में आप युरप से वापस आये। युरप जाने से पहिले आप क़ौमी रंग की शायरी करते थे। लौटने के बाद वह रंग पलट गया और वह इस्लाम और क़ौमियत में बैर बताने लगे।

इक़बाल ने इस्लाम के कर्मयोग का अच्छा सन्देशा दिया। सरकार से इनको 'सर' का खिताब मिला। रियासत भूपाल से ५००) महीना मिलता था। १९३८ ई. में इक़बाल का देहान्त हुआ।

मौलाना ज़फ़रअली ख़ाँ, लाहौर

मौलाना साहेब तहसील वज़ीराबाद, जिला गुज़रानवाला में मीरस गाँव में पैदा हुए। इनके वालिद सिराजुद्दीन अहमद थे। शुरू की तालीम वज़ीराबाद में हुई। एंट्रेन्स का इम्तहान पटियाला से पास किया। इसके बाद अलीगढ़ कालिज में दाखिल हुए। फर्स्ट डिविज़न में बी. ए. पास किया। इसके बाद नवाब मुनहसिनुल मुल्क ने इन्हें हैदराबाद बुला लिया। यहाँ तरक्क़ी करते-करते आप होम आफ़िस में असिस्टेंट सेक्रेटरी हुए।

आपको शायरी का शौक़ अलीगढ़ में ही लग गया था। हैदराबाद में उसमें भी तरक्क़ी हुई। यहाँ यह कई रिसालों के एडिटर भी रहे। शायरी में नवाब मिर्ज़ा ख़ाँ 'दाग़' से इस्लाम लेते रहे। १९०९ में आप नज़र बन्द किये गये और १९१९ से १९३० तक आपको असद्योग आन्दोलन के संबंध में सज़ाएँ भी मिलीं। मगर अब आप मुस्लिम-लीग में हैं। आपके विचारों में बहुत जल्द परिवर्तन होता रहता है।

मुंशी दुर्गासहायजी 'सरूर', जहानाबादी

जिला पीलीभीत, कस्बा जहानाबादी में सन् १८७३ में 'सरूर' साहब पैदा हुए। आप सक्सेना कायस्थ थे। पहिले कविता में 'वहशत' नाम रखते थे। फिर 'सरूर' रख लिया। मौलवी सैयद करामत हुसैन 'बहार' से फ़ारसी की तालीम पायी। तबियत में लापवाही बहुत थी। रुपये-पैसे का ख़्याल बहुत कम करते थे। इसलिये तमाम उन्न गरीबी में ही बसर हुई। और इसी वजह इन्होंने अपनी शायरी कौड़ियों के मोल बेच दी। और कुछ तो ऐसे लोगों के नाम से छपीं जो उनका सही-सही मानी तक नहीं समझ सकते थे। पहले हक़ीमी करते थे। वह न चली तो लड़के पढ़ाने लगे।

आपको शराब पीने की बुरी लत भी पड़ गयी थी। जिससे तन्दुरुस्ती पर बुरा असर पड़ा। जब इनके इकलौते बेटे और बीबी का भी देहान्त हो गया तो ग़म ग़लत कराने के वास्ते और भी पीना शुरू कर दी। नतीजा यह हुआ कि स्वास्थ्य और तेज़ी से गिरने लगा और ३७ साल की कम उम्र में (१९१० ई. में) आपकी मौत हो गयी। इसी साल आज़ाद भी इस दुनियाँ से उठ गए।

यह जब बीमार थे तब भी बराबर शराब पीते जाते थे। जब अन्त समय आया तो नौकर ने शराब की जगह गंगाजल दे दिया। मगर इन्हें होश था। इन्होंने मरते-मरते यह शेर कहा—

“वजाय मय दिया पानी का एक गिलास मुझे ;
समझ लिया मेरे साक़ी ने बदहवास मुझे ।”

शायरी आपके रग-रग में थी। आप की कविताओं के दो संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

मौलाना हसरत मोहानी ‘हसरत’

आपका पूरा नाम है फ़ज़ल हसन। मगर तत्कालीन ‘हसरत’ के नाम से ही आप ज़्यादा मशहूर हैं। आप सैयद हैं। आप के पुरखे नैशापुर से हिन्दोस्तान आये थे। ‘हसरत’ साहब सन् १८७५ ई. में मोहान, जिला उन्नाव में पैदा हुए। मिडिल व एंट्रेंस का इम्तहान स्कालरशिप के साथ पास किया; उसी वक़्त (फ़तहपुर में) आपको शायरी का भी शौक़ हुआ और अच्छी कहने लगे। १९०३ में अलीगढ़ से बी. ए. पास किया और यहीं से ‘उर्दू मुअल्ला’ नाम का रिसाला निकाला जो अपने वक़्त के माहवारों में बहुत मशहूर हुआ।

१९०४ ई. में आप कांग्रेस में शामिल हुए। उस समय आप उग्रवादी दल में थे। अरविन्द घोष और तिलक पर आपकी बड़ी श्रद्धा थी। ज़ोर-

शेर से काँग्रेस का काम करने लगे। १९०७-८ के आन्दोलन में भाग लिया। १९०८ में आपने अपने रिसाले में एक ऐसा मज़मून लिखा कि इन्हें उस जुर्म में दो साल की सज़ा हो गयी और कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा। १९१६ में भी इन्हें दो साल की सज़ा हुई। लड़ाई के दिनों में यह सरकार की मदद करने के खिलाफ़ थे। जेल से छूटने पर भी बहुत दिनों तक नज़र-बन्द रहे। उसके बाद कानपूर चले आये और अब वहीं रहते हैं। १९२१ में फिर आपको सज़ा हुई, जब आप यू. पी. काँग्रेस कमिटी के प्रेसिडेंट थे। १९२३ ई. से आपके राजनैतिक विचार बदले। आजकल आप मुस्लिम लीग के लीडरों में हैं।

शायरी में यह अमीर उल्ला खाँ 'तस्लीम' के शागिर्द हैं। जेल में भी बराबर लिखते रहे। शायरी करने के अलावा भी आपने साहित्य की काफ़ी सेवा की है। और कड़ी मेहनत करके खोज भी की है। आप नये रंग की शायरी तो नहीं करते मगर नये रंग में ग़ज़लें कहना आप ही ने शुरू की। ग़ज़ल कहनेवालों में आपको या 'जिगर' को ही अव्वल माना जा सकता है।

शौकतअली खाँ 'फ़ानी'

शौकत अली खाँ १८७६ में जिला बदायूँ में इस्लाम नामक कस्बे में पैदा हुए। १३ साल की उम्र तक इन्हें फ़ारसी, अरबी की तालीम दी गयी। इसके बाद अंग्रेज़ी पढ़ना शुरू की। १९०१ में बरेली कालेज से बी. ए. पास किया। १९०८ में अलीगढ़ से एल-एल. बी. हुए। शेर कहने का शौक लड़कपन ही से था। पहली ग़ज़ल ११ साल की उम्र में कही। २० साल की उम्र में आपका पहला दीवान तैयार हुआ। मगर वह बर्बाद हो गया। आपने कुछ अंग्रेज़ी ड्रामों का तर्जुमा भी किया। १९०६ में आपका दूसरा दीवान तैयार हुआ। और वह भी पहले दीवान की तरह ज़ाया हो गया। इसके बाद शायरी से आपका जी टूट गया; फिर १९१० तक आपने कोई कविता नहीं की।

बदायूँ से निकलनेवाले 'नक़ीब' नामक रिसाले ने आपका पहला दीवान छपा। इसीमें आपका असली रंग है और इसी से आपको नामवरी भी हासिल हुई।

आपकी दुनियावी ज़िन्दगी परेशानियों में ही बीती है। आपने लखनऊ, बरेली, इटावा, आगरा हर जगह वकालत की, मगर कहीं न चली। मज़बूर होकर यह पेशा छोड़ दिया। आजकल दारुल-शाफ़ा हाई स्कूल हैदराबाद में हेड-मास्टर हैं। आपकी ज़िन्दगी की नाकामियों का असर आपकी शायरी पर भी पड़ा है। उसमें निराशा का रंग गहरा हो गया है। उनके दीवान के ऊपर और तस्वीर के नीचे यह शेर छपा है—

“ऐ अहले-बज़म है कोई नफ़ादे-सोज़े-दिल;
लाया हूँ दिल के दाग़ नुमाया किए हुए।”

सैयद आशिक हुसैन 'सीमाब' अकबराबादी

मौलाना आशिक हुसैन 'सीमाब' का पुराना वतन आगरा है। इनके पिता का नाम मौलाना मुहम्मद हुसैन था जो खुद भी अच्छे विद्वान थे। 'सीमाब' साहब १८८१ ई. में आगरे में पैदा हुए। फ़ारसी, अरबी और अंगरेज़ी की तालीम अजमेर में पायी। शायरी का शौक़ लड़कपन से ही था। पहले मुंशी 'फ़िसू' साहब से इस्लाह लेते थे फिर नवाब 'दाग़' के शागिर्द हुए। उनके मरने के बाद फिर और किसी से इस्लाह नहीं ली। अभी आप मशहूर शायरों और विद्वानों में गिने जाते हैं। गद्य और पद्य में लगभग ८० किताबें आपने लिखी हैं। आपके ड्राओं में 'खूबसूरत बला' और 'फ़रेबे-वफ़ा' बहुत मशहूर है। आप कई रिसालों के एडिटर भी रह चुके हैं। अजमेर से 'फ़ानूसे-फ़याल'; आगरे से 'आगरा अख़बार' निकाले फिर 'पैमाना' चला और आजकल 'शायर' आगरे से अब भी निकल रहा है। आपकी शायरी की किताबों में 'कारे-इमरोज़' और 'कलीमे-अज़म'

बहुत मशहूर हैं। और एक दीवान छप रहा है। आपके सौ के करीब शायिर्द हैं जिनमें 'सागर' निज़ामी और 'राज़' चौदपुरी ज़्यादा मशहूर हैं। 'सीमाब' साहब तारीफ़ बहुत अच्छी और बहुत जल्द कहते हैं। शायरी में इनका रंग अपने उस्ताद से अलग है। इन्होंने 'हाली' और 'इक़बाल' के बीच की राह पकड़ी है। और उसमें बहुत कामयाब हैं।

मिर्ज़ा मुहम्मद हादी 'अज़ीज़'

मिर्ज़ा मुहम्मद हादी के पुरखे शीराज़ से काश्मीर आये थे। अवध के नवाबों के ज़माने में इनके बुजुर्ग लखनऊ आये। आपके पिता का नाम मिर्ज़ा मुहम्मद अली था जो खुद भी बड़े आलिम थे। उन्होंने कई मशहूर और बढ़िया किताबें लिखीं। 'अज़ीज़' १८८२ में लखनऊ में पैदा हुए। अभी सात साल के भी नहीं हुए थे कि बाप मर गये। फ़ारसी कविता में आग़ा सय्यद मुहम्मद साहब 'हाज़िक' से इस्लाह ली। उर्दू की कुछ ग़ज़लें सफ़ी साहब को दिखायी थीं। अंग्रेज़ी तालीम नहीं पायी थी मगर उर्दू, फ़ारसी और अरबी के मशहूर आलिम थे। बड़े होने पर एक रईस के यहाँ, जो विद्वानों की बड़ी क़दर करते थे—प्राइवेट सेक्रेटरी का काम करने लगे। इसी ज़माने में आपकी शायरी की तरक्की हुई और वह हिन्दुस्तान के मशहूर शायरों में शुमार होने लगे। इसके बाद आप अमीनाबाद हाइ-स्कूल में टीचर मुक़र्रर हुए। बी. ए. और एम. ए. के विद्यार्थी भी फ़ारसी पढ़ने में आपसे मदद लिया करते थे। कुछ दिनों बाद—१९२८ ई. में महाराजा साहिब महमूदाबाद ने आपको अपने यहाँ बुलाया और उनके बेटे को यानी मौजूदा महाराजा को पढ़ाते रहे। बाद को डेढ़ सौ रुपये माहवार पर आप वहीं लाइब्रेरियन मुक़र्रर हुए। बहुत दिनों तक बीमार रहने के बाद १९३५ में आपने हमेशा के लिये आँखें मूँद लीं।

अज़ीज़ अपने समय के सबसे मशहूर कसीदा कहनेवाले थे। ग़ज़लें भी खूब कहते थे। महाकवि अकबर ने आपकी तारीफ़ में यह शेर कहा था—

“सुखन में और तो अहले तमीज़ ही हैं फ़क़त ।
शहीदे-जलवए-मानी अज़ीज़ ही हैं फ़क़त ॥”

मिर्ज़ा यास यगाना चंगेज़ी ‘लखनवी’

मिर्ज़ा यास १८८३ ई. में अज़ीमाबाद में पैदा हुए। एंड्रस पास किया। शायरी में बिहार के सबसे मशहूर शायर ‘शाद’ अज़ीमाबादी के शगिर्द हुए। १९०५ ई. में लखनऊ आये, यहीं शादी की और ज़म गए। यहाँ आपमें और दूसरे शायरों में चोटें चलने लगीं। मिर्ज़ा साहब की पार्टी में थोड़े ही लोग थे, फिर भी आप खूब लड़े। १९१५ ई. में ‘चिराग़े-सुखन’ नाम की किताब निकाली। आप कविता के रहस्यों से खूब वाकिफ़ थे। फिर भी लखनऊ में इनका रंग नहीं ही जमा। इसलिए लखनऊ छोड़कर लाहौर गये। यहाँ इनका दीवान “आयाते-वज़दानी” के नाम से छपा। फिर यह रियासत हैदराबाद में बुला लिये गये। यहाँ सब रिजिस्ट्रार की हैसियत से काम करते हैं। पहले इनका तखल्लुस यास अज़ीमाबादी था; अब यगाना लखनवी है। इनके चौपदे तराना के नाम से हैदराबाद में छपे हैं।

असगर हुसेन साहब “असगर” गोंडवी

असगर हुसेन साहब १८८४ ई. में गोरखपुर में पैदा हुए। इनके वालिद गोरखपुर में क़ानून-गो थे। वहीं से पेंशन ली और वहीं रहने लगे। असगर साहब ने किसी कालेज में सर नहीं मारा, मगर अंग्रेज़ी, फ़ारसी, अरबी में अच्छी महारत हासिल की। यह सब निजी स्वाध्याय का फल है।

शायरी में पहले मुंशी ख़लील अहमद बिलग्रामी से इस्लाम लेते रहे। फिर अपनी ग़ज़लें मुन्शी अमीरुद्दा तस्लीम को दिखाईं। कुछ दिनों तक अपनी रोज़ी कमाने के वास्ते ऐनक की तिज़ारत करते रहे। फिर उर्दू मरक़ज़ लाहौर में रहे। बाद को हिन्दुस्तानी एकाडमी इलाहाबाद के तिमाहाने रिसाला ‘हिन्दुस्तानी’ के एडिटर हुए।

असगर ने केवल गज़लें ही गज़लें कही हैं। मगर उसमें भी एक नया रंग पैदा किया है। आम तौर से गज़लों में रंज ग़म के मज़मून पाये जाते हैं या फिर प्रेम के। असगर की गज़लों में शुद्ध ग़नोवैज्ञानिक भाव मिलते हैं। उन्होंने ज़्यादातर आनन्द और उत्साह के मज़मून बँधे हैं। आध्यात्मिक ज्ञान के मज़मून भी आपमें बहुत मिलते हैं। मगर इन अहम मज़मूनों को भी आपने बड़ी रंगीनी के साथ बाँधा है। इनके गुरु का नाम शाह सय्यद अब्दुल ग़नी, मंगलौरी था। सन् १९३६ में असगर का देहान्त हो गया।

मुंशी महाराज बहादुर 'बर्क' देहलवी, बी.ए.

नये रंग के मशहूर शायरों में 'बर्क' बहुत ही मशहूर हुए हैं। आपके पिता मुन्शी हर नारायणदास भी शायर थे और 'हसरत' नाम से लिखते थे। बुजुर्गों का वतन पड़ा था मगर 'बर्क' देहली में १८८४ ई. में पैदा हुए। शुरू का ज़माना गरीबी में बीता। अपनी मंशा के मुताबिक तालीम न पा सके। मुश्किल से एंटेंस पास किया और पोस्टल-आडिटर आफ़िस में काम करने लगे। पढ़ने-लिखने का सिलसिला भी जारी रहा। उसी हालत में मुन्शी फ़ाज़िल और बी. ए. के इम्तहान पास किये। अपने काम में भी तरक्की करते रहे और आखिर में अपने महकमे के सुपरिंटेंडेंट हो गए। 'बर्क' ने पहले 'दाग़' से अपनी शायरी दुरुस्त करायी। लेकिन दाग़ हैदराबाद में थे और यह देहली में। इसलिये दाग़ के कहने से दाग़ के शागिर्द आग़ा शायर से इस्लाह लेने लगे। सन् १९०८ में बर्क की पहली नज़्म "अमले ख़ैर" के नाम से 'अदीब' नाम के रिसाले में साया हुई। इसकी बड़ी धूम मची और यह नज़्म अलग छपवाकर हज़ारों की तादाद में बाँटी गयी। फिर तो आहिस्ता-आहिस्ता 'बर्क' का शुमार हिन्दुस्तान के मशहूर शायरों में होने लगा। इनकी कविताओं का संग्रह "मतलब-अनवार" के नाम से छपा है।

१९३६ में यह अपने एक शागिर्द की लड़की की शादी में गए। वहीं दिल की हरकत बन्द हो जाने से मौत हो गयी। इनकी शोक सभा की सदारत श्रीमती सरोजिनी नायडु ने की थी।

तिलोकचन्दजी 'महरूम', बी.ए.

मुंशी तिलोकचन्दजी 'महरूम' हिन्दुस्तान की उत्तर पच्छिम सीमा पर के सब से मशहूर शायर हैं। जिस तरह डाक्टर इक़बाल की शायरी सर अब्दुल क़ादिर के रिसाले 'मग़ज़न' से मशहूर हुई उसी तरह इनकी शायरी भी। इनकी कविताओं से मालूम पड़ता है कि इनका बचपन सिंध में बीता। मगर इनकी जीवनी में यही लिखा है कि इनकी जन्मभूमि पच्छिमी पंजाब है। जहाँ यह ज़िला मियानवाली के ईसाखेल नाम के गाँव में १८८५ ई. में पैदा हुए। पिता का नाम भगत रामदयाल था। शायरी में आप किसी के शागिर्द नहीं हैं, न आपके घर में ही शायरी का चर्चा था। क्योंकि आपके यहाँ खेती-बारी का काम होता था। एंटेंस पास कर आपने ट्रेनिंग की और १९०८ में मिशन हाई-स्कूल, डेरा इस्माइलख़ाँ में इंगलिश मास्टर हुए। पढ़ने का शौक़ था ही। इसलिए मास्टरी करते हुए आपने बी.ए. भी पास किया और आजकल मिडिल स्कूल के हेड मास्टर हैं।

इनको विद्यार्थी जीवन में ही शायरी का चस्का लगा था। फ़ारसी और अंग्रेज़ी नज़्मों का तरजुमा बड़ी खूबसूरती के साथ किया है। उर्दू के बड़े आलिम सर अब्दुल क़ादिर ने आपकी तारीफ़ की है। आप सब रंगों में लिखते हैं। आपकी शायरी की सराहना करते हुए अकबर ने लिखा था—

“है दाद का मुस्तहक़ कलामे-महरूम;

लफ़्ज़ों का जमाल और मानी का हुजूम।”

महरूम ने इसका यों जवाब दिया—

‘हुआ मुझको यकीं कि शायर हूँ मैं;

जब दाने-सखुन जनाबे अकबर से मिली।’

डाक्टर सईद अहमद साहब 'सईद' बरेलवी

बरेली में सन् १८८५ ई. में सईद अहमद साहब पैदा हुए। वालिद मुन्शी मुहम्मद अब्दुल करीम आपकी छोटी उम्र में ही छोड़कर चल बसे। सईद साहब ने आम-रिवाज़ के मुताबिक शुरु में अरबी, फ़ारसी ही पढ़ी। तबीयत में शायरी बचपन से ही घर कर गयी थी। आपने पहली गज़ल लिखी थी, जब आप मद्दज़ सात साल के थे। मगर जवानी में गज़लें कहने का शौक छूट गया था और नये रंग की शायरी कहने लगे। १९ साल की उम्र में आपने आगरे से डाक्टरी का इम्तहान पास किया। उस वक़्त आपकी तबीयत में सैलानीपन भी काफ़ी था। इसलिए फ़ौजी नौकरी की। १९१४ की लड़ाई में युरोप भेजे गये। पाँच साल तक मिश्र, फिलिस्तीन, ईरान, अरब वगैरह मुल्कों में रहे। फ़्रान्स में भी ढाई साल तक रहने का मौक़ा मिला। लड़ाई के बाद जब देश वापस लौटे तो यहाँ असहयोग आन्दोलन शुरू हो चुका था। आप इसमें शरीक हुए और सरकारी नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया। इसके बाद जब मौलाना मुहम्मद अली ने 'हमदर्द' अग़वार निकाला तो आपको देहली बुला लिया। कुछ दिनों तक 'हमदर्द' में काम किया। लेकिन मौलाना से मतभेद हो जाने की वजह वहाँ से भी अलहदा हो गए और देहली ही में डाक्टरी करने लगे।

आपका एक रिलाला "तबीये-निसवाँ" नाम से निकलता है, जिसमें स्त्रियों के इलाज की विधियाँ होती हैं। एक शायर की हैसियत से आपका दर्जा बहुत ऊँचा है। आपकी कविता में बड़ी बेतकल्लुफ़ी और असर है।

सय्यद अहमद हुसेन 'अमजद'

सय्यद अहमद हुसेन आजकल दक्खिन के बहुत मशहूर शायरों में हैं। १८८६ ई. में हैदराबाद में पैदा हुए। इनके वालिद सूफ़ी सय्यद रहीम अली इनके छुटपन में ही मर गये। तालीम पुराने ढंग से ही शुरू हुई। फिर इन्होंने पंजाब युनिवर्सिटी से 'मुंशी आलिम' और 'मुन्शी फ़ाज़िल' के इम्तहान पास किए और बेंगलोर के सरकारी स्कूल में मास्टर हो

गए। बाद को हैदराबाद के मदरसए-दाल्ल-उल्लम में चले आये। अब सदर मुहासिबी के दफ्तर में नौकर हैं।

आपकी ज़िन्दगी बड़े दुख में गुज़री है। माता-पिता का साया बचपन में ही सर से उठ गया था। जवानी में भी एक दुखभरी भयंकर घटना हो गयी। १९०८ ई. में हैदराबाद की मुसी नदी में ज़ोर की बाढ़ आयी। वे मुहल्ला चार-महल में उस नदी के किनारे रहते थे। बाढ़ का पानी अंधेरी रात में किनारों को लौंघ कर गलियों में घुसा। और भी ज़ोर आया और पानी बन्द कमरों और दीवानखानों में भी घुसने लगा। और इसी बहिया में आपकी माँ, बीबी और लड़की तीनों की तीनों रातों-रात लाश की शकल में ही बच रहीं। गोया अमजद का सब कुछ लुट गया और वे सोये रहे। अमजद ने इस घटना पर जो कविता लिखी है वह दिल को हिला देनेवाली है। इसके बाद फिर आपने शादी की। कुछ दिनों बाद हज करने गये। लौटकर आये तो यह बीबी भी इनको हमेशा के वास्ते छोड़कर कूच कर चुकी थी। तब से इनके मन में वैराग्य भर गया।

१५ साल की उम्र में आपको शायरी का शौक़ नासिख का कलाम पढ़-कर पैदा हुआ। लेकिन आपकी शायरी में नासिख का रंग नहीं है, बल्कि बिल्कुल अलग है। नासिख के यहाँ शब्दों का सौंदर्य है और इनके कलाम में दर्द और असर है। शुरू में आपने जो शायरी की थी वह तो मुसी की उसी बहिया में खतम हो गयी। बाद के कलाम 'रियाज़े-अमजद' और 'ख़िर्कए-अमजद' के नाम से दो जिल्दों में छपे हैं। इसके अलावा आपने नसर में भी कुछ किताबें लिखी हैं, जिनमें से एक में आपके हज का हाल है, और एक में आपने अपनी जीवनी लिखी है। अमजद की स्वाइयों (चौपदे) बहुत मशहूर हैं।

पंडित ब्रजनारायण 'चकबस्त', लखनवी

'चकबस्त' राष्ट्रीय कवियों में सबसे ऊँचे दर्जे के कवि हुए हैं। १८८२ ई. में फैजाबाद में पैदा हुए। बचपन से ही लखनऊ में रहे इसलिये लखनवी कहलाते हैं। जाति के काश्मीरी ब्राह्मण थे। पिता का नाम था पं. उदित

नारायण । चकबस्त की स्कूली तालीम लखनऊ में हुई और यहीं कैनिंग कालेज (अब युनिवर्सिटी कालेज) से १९०५ में बी.ए. का इम्तहान पास किया और १९०७ में वकालत का ।

शायरी का शौक बचपन से ही था । पहिला शेर ९ साल की उम्र में कहा । कालेज में पहुँचने पर तो अच्छे ज़ासे शायर हो चुके थे । इन्होंने शायरी में जनाब रहमतुल्लाह इकीम से इस्लाम ली थी । जिस ज़माने में यह लखनऊ में पढ़ रहे थे, इनको बिशननारायण दर से बहुत मदद मिली । दर साहब राजनीति ही नहीं, बल्कि फ़ारसी, उर्दू और अंग्रेज़ी के प्रकांड विद्वान थे । 'चकबस्त' ने इन तीनों ज़बानों में आपसे काफ़ी योग्यता हासिल की । इतना ही नहीं, आपकी शायरी में राष्ट्रीयता का रंग भी उन्हीं की बदौलत चढ़ा । आपका दीवान जो 'सुबह-अम्मेद' के नाम से छपा है; उसमें आपकी १६-१७ साल की उम्र में लिखी कुछ नज़में भी छपी हैं, जिनको पढ़कर अचंभा होता है ।

'चकबस्त' लखनऊ के प्रसिद्ध वकीलों में थे । फ़रवरी १९२६ ई. में एक मुक़द्दमे की पैरवी करने रायबरेली गए थे, वहाँ फ़ालिज गिरा और घर भी न पहुँच पाये थे कि लखनऊ स्टेशन पर आपकी मृत्यु हो गयी ।

'चकबस्त' ने अपनी शायरी में मीर, अनीस और आतिश को नये रंग में ढाला है । जब तक काँग्रेस पर महात्मा गाँधी का रंग नहीं चढ़ा था, यह काँग्रेस में शरीक रहे । बाद को यह लिबरल-लीग में शामिल हो गये थे । इन्होंने राजनैतिक नेताओं की मौत पर मर्सिये भी बहुत अच्छे लिखे हैं ।

अली सिकन्दर 'जिगर' मुरादाबादी

मुरादाबाद में अली सिकन्दर मशहूर ख़ानदान में पैदा हुए । इनके पुरखे देहली के रहनेवाले थे और बादशाह शाहजहाँ को पढ़ाते थे । एक बार बादशाह नाख़ुश हो गए; इसीलिए वे देहली छोड़कर मुरादाबाद चले आये । 'जिगर' साहब के दादा हाफ़िज़ मुहम्मद नूर व वालिद मौलवी अली नज़र भी शायर थे । आपके छोटे भाई अली मुज़फ़्फ़र भी शायर हैं और 'दिल' तख़ल्लुस करते हैं ।

आप १८८३ में पैदा हुए। तालीम मामूली हुई। मिशन स्कूल से एंट्रेंस पास किया। फ़ारसी खूब पढ़ी। फ़ारसी में भी शायरी करते हैं। जिगर ने कई उस्तादों से इस्लाह ली है। पहिले दाग़, फिर मुन्शी अमीरुल्ला तस्लीम, फिर मुन्शी हयात बख़्श रसौं और आख़िर में असगर को अपना कलाभ दिखाते रहे।

कुछ दिनों तक जीविका के वास्ते पेनक घेचते रहे। आजकल 'भूपाल-हाउस' लखनऊ में रहते हैं। आपकी ज़िन्दगी तकलीफ़ों में बीती। एक के बाद दूसरी—दो बीबियाँ मर गयीं। घर के और कई लोग और दोस्त नज़रों के सामने ही चल बसे। इसका असर आपके दिल पर और शायरी पर भी पड़ा है। यों आपकी तबीयत बहुत आज़ाद है। रुपये-पैसे की परवाह ज़रा भी नहीं करते। दिल बहुत ही याफ़ है। तकल्लुफ़ बिल्कुल पसन्द नहीं करते। सच्चे शायर हैं। मिलनसार हैं। ग़ज़लें कहते भी अच्छी हैं, और पढ़ते भी खूब हैं।

शब्बीर हसन ख़ाँ, 'जोश' मलीहाबादी

'जोश' १८९४ ई. में ज़िला लखनऊ के मलीहाबाद तहसील में पैदा हुए। इनके बाप-दादा पुराने रईस थे। मलीहाबाद के पठान अपनी ताक़त व बहादुरी के लिए मशहूर हैं। जोश के दादा भी बड़े ताक़तवर थे। उनके बहुत से किस्से मशहूर हैं। इनके पुरखे तलवार ही के धनी नहीं थे—बल्कि कलम के भी अच्छे माहिर थे। इनके परदादा मुहम्मद ख़ाँ एक मशहूर शायर भी थे और फ़ौज के रिसालदार भी। लखनऊ में उनके नाम पर एक कटरा भी आबाद है।

'जोश' अभी छोट ही थे कि इनके वालिद का देहान्त हो गया और ज़मींदारी का इन्तज़ाम इनके सर पर आ पड़ा। इसलिये भी तालीम अच्छी न हो सकी। लेकिन अदबी-शौक़ न छूटा। शायरी में लखनऊ के मशहूर उस्ताद अज़ाज़ से इस्लाह ली। मगर उनका रंग कुछ और था, इनका कुछ और। जोश ने अंग्रेज़ी में भी अच्छी लियाक़त हासिल की और हैदराबाद के तरजुमा के महक़मे के अफ़सर मुक़रर हुए। मगर यह शायरे-इनक़लाब

कहलाते हैं। रियासत में इनका गुज़र क्या होता ! १९२३ से १९३३ तक वहाँ रहकर वापिस चले आए। देहली से 'कलीम' नाम का माहवार निकालने लगे। आजकल आप सिनेमा लाइन में काम कर रहे हैं।

'जोश' अपने रंग के बहुत अनोखे शायर हैं। इन्होंने देश की दुर्दशा और मज़हब के नाम पर सिर-फुटौबल के खिलाफ़ बड़ी अच्छी शायरी लिखी है। इश्क़िया शायरी भी करते हैं। कहीं मज़हबी ठेकेदारों को चिढ़ाने के वास्ते नास्तिक का रूप भी बना लेते हैं। आपकी कविताओं का पहला संग्रह 'रूहे अदब' था। इधर और कई किताबें आपके नाम से छपी हैं।

समदयार ख़ाँ 'सागर निज़ामी'

हिन्दुस्तान के शायरों में 'सागर' के पढ़ने की धूम है। शायद ही कोई शायर इनसे अच्छी तरह अपनी शायरी अदा करता हो। इनके पढ़ते वक़्त एक समीप बैठ जाता है। आप १९०५ में अलीगढ़ में पैदा हुए। सबसे पहले जब नौ साल के थे तब शेर कहा और १२-१३ साल के हुए तब तो मुशायरों में कहने लगे। इनकी खुशकिस्मती से इन्हें अल्लामा 'सीमाब' जैसा उस्ताद मिल गया। उन्होंने दिलोजान से इस होनहार शागिर्द पर तवज्जह दी और शायरी के राज़ खोलकर इनके सामने रख दिए। 'सीमाब' साहब की सरपरस्ती में आगरा से शायरों का एक मासिक पत्र निकलता था। सागर उसके एडीटर थे और यहीं से इनका नाम मशहूर होना शुरू हुआ।

१८ साल की उम्र में सागर फ़वाज़ा हसन निज़ामी के मुरीद हुए और तब से 'सागर निज़ामी' कहलाते हैं। फ़वाज़ा साहब ने इनका हुलिया इस तरह लिखा है; "मियाना क़द; गन्दुमी नमकीन आँखें; रसीली, रोशन और कुदरत के ग़ैबी ज़ाम से मख़मूर चेहरा; किताबी आवाज़—हर किस्म के क़दीम व ज़दीद बाज़ों को शरमानेवाली।"—आजकल 'सागर' साहब मेरठ में रहते हैं और वहीं से 'एशिया' नाम का माहवार रिसाला निकालते हैं। अब इक्को मुशायरों में पढ़ने का शौक़ नहीं रहा। ये साहित्य की ठोस सेवा करना चाहते हैं। मगर लोग नहीं मानते और घसीटकर मुशायरों में ले ही जाते हैं।

‘सागर’ की कविताओं का संग्रह १९३४ ई. में छपा जिसका नाम “बादए मशरिफ़” है। इसकी भूमिका लिखते हुए श्रीमती सरोजिनी नायडू ने इस बात की बहुत तारीफ़ की है कि ‘सागर’ ने अपनी कविता में भारत के ही प्राकृतिक दृश्य लिए हैं, यहीं की उपमा और अलंकार लिये हैं और अक्सर कवितायें भारतीय छन्द में हैं।

हफ़ीज़ जालन्धरी

आप पंजाब के मशहूर शायर हैं। आपकी नज़में और गीत हिन्दोस्तानी जज़्बात की तर्जुमानी करती हैं। नये ढंग की शायरी आपने खूब की है आपकी ज़बान साफ़, सरल और प्यारी है। “नज़मा” ‘ज़ार’ “सोज़ व साज़” और “शाहनामा इसलाम” आपकी कविता की किताबें हैं।

जगतमोहन साहेब खॉ

चौधरी मुन्दी गंगा प्रसाद के चौथे बेटे थे। सन् १८८९ ई. में पैदा हुए। नौ साल की उम्र में इनके पिता का देहान्त हो गया। १९०७ ई. में मौरवाँ हाइ-स्कूल से पेंटेंस अव्वल दर्जे में पास किया। सन् १९११ ई. में बी. ए. हुए। फिर एम. ए. और एल. एल-बी. भी हुए। उन्नाव में वकालत करने लगे। अपने पेशे में भी बड़ा नाम कमाया। अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि जवानी के आलम में ही सन् १९३४ ई. में इस दुनियाँ से चल बसे।

उनके दीवान “रूहे खॉ” के पढ़ने से पता चलता है कि वह किस पावे के शायर थे। उनकी शायरी में ऊँचे जज़्बात, जोश व ख़रोश, क़ौमियत का एहसास और दर्द व तासीर है। ज़बान साफ़, सरल और मंजी हुई।

एहसान दानिश

पंजाब के ‘मज़दूर शायर’ के नाम से मशहूर हैं। हिन्दोस्तान की ग़रीबी के साथ हिन्दोस्तान के कुदरती नज़्ज़ारों का नज़्ज़ा ऐसा अच्छा खींचते हैं कि दिल पर असर किए बग़ैर रह नहीं सकता। ज़बान बड़ी प्यारी है।

पहली बहार

दुआ

मौलाना मुहम्मद हुसैन 'आज़ाद'

आलम है अपने बिस्तरे-राहत पै खाब में,
‘आज़ाद’ सर झुकाए खुदा की जनाब में ।
फैलाए हाथ सूरते-उम्मीदवार है,
औ’ करता सच्चे दिल से दुआ बार बार है ॥

मुझको तो मुल्क से है, न है माल से गरज़,
रखता नहीं ज़माने के जंजाल से गरज़ ।
या रब ! ये इलतिजा है, करम तू अगर करे,
वह बात दे ज़बाँ को जो दिल पर असर करे ॥



हुब्बे वतन

रजाजा अलताफ हुसैन साहब 'हाली', पानीपती

ऐ दिल, ऐ बन्दाए-वतन, होशियार,
खाबे-गफ़लत से हो ज़रा बेदार ।
नाम है क्या इसी का हुब्बे-वतन ?
जिसकी तुझको लगी हुई है लगन ।

कभी बच्चों का ध्यान आता है ?
कभी यारों का ग़म सताता है ?
याद आता है अपना शहर कभी ?
लौ कभी अहले-शहर की है लगी ?

नक्रश है दिल पे कूचाओ-बाज़ार ?
फिरते आँखों में हैं दरो-दीवार ?
क्या वतन की यही मुहब्बत है ?
यह भी उल्फ़त में कोई उल्फ़त है ?

इसमें इन्सां से कम नहीं दरिन्द,
इससे ख़ाली नहीं चरिन्दो-परिन्द ।
टुकड़े होते हैं संग गुर्बत में,
सूख जाते हैं रूख फुर्क़त में ।

जाके काबुल में आम का पौदा,
कभी परवान चढ़ नहीं सकता ।
आके काबुल से यों बिही औ' अनार,
हो नहीं सकते बास्वर जिन्दार ।

मछली जब छूटती है पानी से,
हाथ धोती है ज़िन्दगानी से ।
घोड़े जब खेत से बिछुड़ते हैं,
जान के उनके लाले पड़ते हैं ।

गाय या भैंस, ऊँट या बकरी,
अपने अपने ठिकाने खुश हैं सभी ।
कहिण हुब्बे-वतन इसी को अगर,
हमसे हैवौ नहीं कुछ कमतर ।

बैठे बेफ़िक्र क्या हो, हमवतनो !
उट्टो, अहले-वतन के दोस्त बनो ।
मर्द हो तो किसी के काम आओ,
वरना खाओ-पिओ चले जाओ ।

जब कोई ज़िन्दगी का लुत्फ़ उठाओ,
दिल को, दुख भाइयों के याद दिलाओ ।
खाना खाओ तो जी में तुम शर्माओ,
ठंडा पानी पियो तो अश्क बहाओ ।

नया चमन

कितने भाई तुम्हारे हैं ना-दार,
जिन्दगी से जिनका दिल है बेज़ार ।
नौकरों की तुम्हारे जो है गिज़ा,
उनको वो खाब में नहीं मिलता ।

जिस पै तुम जूतियों से फिरते हो,
वाँ मयस्सर नहीं वो ओढ़ने को ।
खाओ तो पहले लो खबर उनकी,
जिन पै विपदा है नेसती की पड़ी ।

पहनो तो पहले भाइयों को पहनाओ,
कि है उतरन तुम्हारी जिनका बनाओ ।
एक डाली के सब हैं बर्गा-समर,
है कोई इनमें खुशक, कोई तर ।

सब को है एक अस्ल से पैवन्द,
कोई आजुर्दा है कोई खुर्सन्द ।
जागनेवालो ! गाफिलों को जगाओ,
पैरनेवालो ! डूबतों को तराओ ।



नया शिवाला

डाक्टर सर शेख मुहम्मद 'इक़्बाल', एम.ए.

सच कह दूँ ऐ बरहमन ! गर तू बुरा न माने ।
तेरे सनम-क्रदों के बुत हो गये पुराने ॥
अपनों से बैर रखना तूने बुतों से सीखा ।
जंगो-जदल सिखाया वाइज़ को भी खुदा ने ॥
तंग आके मैंने आखिर दैरो-हरम को छोड़ा ।
वाइज़ का वाज़ छोड़ा, छोड़े तेरे फ़िसाने ॥
पत्थर की मूरतों में समझा है तू खुदा है ।
खाके-वतन का मुझको हर ज़र्रा देवता है ॥

आ ग़ैरियत के परदे इक बार फिर उठा दें ।
बिछड़ों को फिर मिला दें, नक्शे दुई मिटा दें ॥
सूनी पड़ी हुई हैं मुद्दत से दिल की बस्ती ।
आ, इक नया शिवाला इस देश में बना दें ॥
दुनियाँ के तीरथों से ऊँचा हो अपना तीरथ ।
दामाने-आसमाँ से इसका कलश मिला दें ॥
हर सुबह उठकर गायें मन्तर वो मीठे मीठे ।
सारे पुजारियों को मय पीत की पिला दें ॥
शक्ती भी, शानती भी भगतों के गीत में है ।
घरती के बासियों की मुक्ती पिरीत में है ॥

उठ बाँध कमर

मौलाना जफरखली खाँ, लाहौर

अल्लाह का जो दम भरता है, वो गिरने पर भी उभरता है ।

जब आदमी हिम्मत करता है, हर बिगड़ा काम संवरता है ॥

उठ बाँध कमर क्या डरता है ।

फिर देख खुदा क्या करता है ॥

बिखरी हुई कुञ्चत तेरी है, सिमटी हुई हिम्मत तेरी है ।

वरना ये हुक्मत तेरी है, आलम की खिलाफत तेरी है ॥

उठ बाँध..... ।

तू इल्म की दौलत लाया है, तहजीब सिखाने आया है ।

तू जब से जहाँ पर छाया है, दुनिया की पलट गयी काया है ॥

उठ बाँध..... ।

गुलशन में बहार है आयी हुई, गरदूँ पै घटा है छाया हुई ।

फिरती है सबा इठलायी हुई, तक्रदीर है पलटा खाया हुई ॥

उठ बाँध कमर, क्या डरता है ।

फिर देख खुदा क्या करता है ॥

सीताजी की आरजू

मुंशी दुर्गासहायजी 'सरूर', जहानाबादी

हमराह अपने बन को मुझे नाथ ले चलो,
रेखा तुम्हारे चरण की हूँ, साथ ले चलो ।
नाजुक है मेरा शीशाएँ-दिल टूट जायगा,
छूटा तुम्हारा साथ तो जी छूट जायगा ।

रातें न कट सकेंगी अकेले फिराक में,
घड़ियाँ वो जिसने झेली हों झेले फिराक में ।

किस्मत ने जब से बाप के घर से जुदा किया,
स्वामी ! मुझे न तुमने नज़र से जुदा किया ।
पुतली की तरह आँखों में शामो-सहर रही,
पहलू में बनके सब्र-शिकेबे-जिगर रही ।

दुख आज तक सहा न ग्रामे-रोज़गार का,
मुझ पर करम रहा सितमे-रोज़गार का ।

माना कि दस्त में, ग्रामो-अलाम हैं बहुत,
बन-बासियों को दुख सहरो-शाम हैं बहुत ।
ईज़ा अगरचे आवला-पाई की है कड़ी,
दोज़ख़ से बढ़के आग जुदाई की है कड़ी ।

नया चमन

ये आग वो है जो दिले-मुस्तर को फूँक कर,
बुझती है आरजू के भरे घर को फूँककर ।

स्वामी जो तुम हो साथ तो कैसा अलम-कदा ?

खस-पोश झोपड़ा मुझे होगा सनम-कदा ।

सूरत तुम्हारी देखके गम भूल जाऊँगी,

सहरा के सारे रंजो-अलम भूल जाऊँगी ।



भलाई का पैगाम

महाराज बहादुर 'बक्र' देहलवी

बता ऐ खाक के पुतले कि दुनिया में किया क्या है ?

बता कै दाँत हैं मुँह में तेरे, खाया-पिया क्या है ?

बता खैरात क्या की, राहे-मौला में दिया क्या है ?

यहाँ से आक्रबत के वास्ते तोशा लिया क्या है ?

दुआएँ लीं, कभी ठण्डा किया दिल तफ़्तः जानों का ?

हुआ है तू कभी राइत-रसाँ तिशना-दहानों का ?

शरीके दर्द-दिल होकर किसी का दुख मिटाया है ?

मुसीबत में किसी आफ़तज़दा के काम आया है ?

पराई आग में पड़कर कभी दिल भी जलाया है ?

किसी बेकस की खातिर जान पर सदमा उठाया है ?

कभी आँसू बहाये हैं किसी की बदनसीबी पर ?
कभी दिल तेरा भर आया है मुक़लिस की गरीबी पर ॥

किया है गमगलत बरसों रबाबो-चंग से तूने,
मजे लूटे, किया दिलशाद किस किस ढंग से तूने ।
सुने दिल-सोज़ नग़मे साज़े-ख़ुश-आहंग से तूने,
बुझाई तिशनाकामी आबे-आतिश-रंग से तूने ।
न छोड़ा, पर न छोड़ा तूने शरले-जामो-मीना को ,
सितम है, बे-नवा तरसा किए नार्ने-शबीना को ॥

ज़रा तो सोच ऐ ग़ाफ़िल ! रहेगा शादमाँ कब तक ?
करेगा खून अपने वक्त का ना-क्रददाँ कब तक ?
तेरे बाग़े-जवानी में न आएगी ख़िज़ाँ कब तक ?
रहेगा तेरी क्रिस्मत से मुवाफ़िक़ आसमाँ कब तक ?
रहेगा ताबकै मसरूक़ दुनिया के झमेले में ?
कहाँ तक खोयेगा उम्रे-रवाँ पानी के रेले में ?

न दौलत साथ जायगी न हशमत साथ जायगी,
न शौक़त साथ जायगी न रफ़अत साथ जायगी ।
पसे-मुर्दन न यह शाने-इमारत साथ जायगी,
न अज़मत साथ जायगी न दौलत साथ जायगी ।

। जो पूछे जायेंगे महशर में वो ऐमाल हैं तेरे,
अगर कुछ साथ जायेंगे तो वो अफ़वाल हैं तेरे ॥



नौवारिदे-हस्ती

तिलोकचन्दजी 'महरूम'

ऐ ! कि अपने साथ घर भर की खुशी लाया है तू ,
किस वतन की याद में रोता हुआ आया है तू ?
कौन सी दुनियाए-खन्दाँ याद आती है तुझे,
रोनेवाले ! याद किस किसकी रुलाती है तुझे ?
क्या कोई ज़रीं जज़ीरा छोड़कर आया है तू ,
गुलशने-फ़िरदौस से मुँह मोड़कर आया है तू ।
याद ऐसे ही तो कुछ आते हैं नज्जारे तुझे,
अजनबी-से इस जहाँ के नक्श हैं सारे हुए ।
किस लिए हैरत से यूँ हर इक का मुँह तकता है तू ,
कुछ तो कहना चाहता है, कह नहीं सकता है तू ।

हमको भी मालूम है, तू है मुसाफिर दूर का,
मुलकन इस देस की बोली से है ना-आंशना ।
हाँ ! बता वो सरज़मीने आफ्रियत थी कौन-सी ?
बस्ती है दिल में तेरे दिलखाह बस्ती कौन-सी ?

रोशनी होती है कैसी चाँद सूरज की वहाँ ?
तेरे चेहरे पर हवैदा हैं अभी जिसके निशाँ ।

किस क्रदर है पाको-रोशन ! किस क्रदर प्यारा है तू ॥

किस चमन का गुल है तू ? किस अर्श का तारा है तू ?

आह ! ऐ नौवारिदे-हस्ती ! तुझे मालूम क्या ?

इन्क्रिलावाते-ज़माना हैं मचाते धूम क्या ?

आज रोता है तू जिस दुनियाँ को ज़िन्दा जानकर,

कल न छोड़ेगा इसी को बाग़े-रिज़्वां जानकर ।

इस कदर मानूस हो जायेगा इस दुनियाँ से तू,

फिर वतन की याद होगी औ न उसकी आरज़ू ।

याद भूले से न आयेगा तुझे अपना वतन,

तू समझ लेगा इसी गुर्बत को ही प्यारा वतन ।

हासिल एक दिन भी न होगा गरचे इत्मीनाने दिल,

फिर भी दुनिया ही रहेगी शामिले-अरमाने-दिल ॥

मीठी लोरी

डाक्टर सईद अहमद साहब 'सईद' बरेलवाँ

लाड़ले बापके, अम्मा के दुलारे सो जा,

ऐ मेरी आँख के तारे, मेरे प्यारे सो जा ।

गोद में रोज जो रातों को सुलाती है तुझे,

मीठी वो नींद तेरी, देख, बुलाती तुझे ॥

दबके सोते में वो करवट से कहीं टूट न जाय,

ला मैं अलमारी में रख दूँ तेरा घोड़ा, तेरी गाय ।

फूल बागों से तेरे वास्ते चुनकर लायी,

जा मेरी जान ! वो लेने तुझे परियाँ आयीं ॥

बन्द रख पलकों की डिबिया में ये हीरे अनमोल,

माँ तेरी कुर्बान बस अब आँख न खोल ।

सो ले जब तक नहीं आते हैं तेरे काम के दिन,

और दो चार बरस हैं अभी आराम के दिन ॥

फिर तो ये फिक्र पड़ेगी कि सबक याद करें,

मुफ्त सो सोके न यूँ वक़्त को बरबाद करें ।

होगा इस नन्हें से दिल में फ़िक्रों का हुजूम,

दिन तो दिन, रात को भी चैन से सोना मालूम ॥

ले बहुत देर हुई अब मुझे गाते, सो जा ।

ऐ मेरे चाँद ,मेरे नींद के माते ! सो जा ॥

स्नेहलता

(बंगाल की एक सच्ची घटना)

सैय्यद अहमद हुसैन, 'अमजद'

एक लड़की थी कहीं स्नेहलता । जिसका सिन था तेरा-चौदा साल का ॥

दिलरुबा अन्दाज़, मुखड़ा चाँद-सा ।

देखता कोई तो कहता वर भला ॥

‘सेहर दारद नर्गिसे जादूए तो ।

कर्द संबुल रा परेशाँ मूए तो ॥’

देखकर उसका शबाबो-सिन व साल । बाप को आता था शादी का ख्याल ॥

था मगर इफ़लास से आशुप्रता ।

सकूत था यह लड़केवाले का सवाल ॥

माँगते थे वह कम अज़ कम दो हज़ार ।

किस तरह बेकस उठा सकता ये वार ॥

चाहता था बेच दे रहने का घर । झोंपड़े में ज़िन्दगी कर ले बसर ॥

वार जो कुछ हो उठाये अपने सर ।

दस्तगीरे-बेकसा है ईशवर ॥

नया चमन

ज़िन्दगी जैसे बने कट जायगी ।

वरना इज़्ज़त चार में घट जायगी ॥

मिलके एक दिन शौहरो-ज़न साथ साथ ।

करते थे स्नेहलता की शादी की बात ॥

कहते थे इफ़लास में है मुश्किलत । आबरू इन्साँ की है दौलत के हाथ ।

पास पर्दे के थी स्नेहलता खड़ी ।

बात उनकी कान में उसके पड़ी ॥

आ गयी सन्नाटे में इक-दो घड़ी ।

थी मगर छुटपन में ही फ़हमीदा बड़ी ॥

सोचकर कुछ आ गयी अपनी जगह। आह, वह गश खा गयी अपनी जगह।

उठके फिर बिस्तर से वह कहने लगी—।

आह तुफ़ है ज़िन्दगानी पर मेरी ॥

मेरी खातिर बाप पर बिपता पड़ी ।

आह मैं कम्बख़्त क्यों पैदा हुई ॥

बाप पर टूटे सितम मेरे लिए । वह उठाये रंज-गम मेरे लिए ॥

बीस सौ हो कम से कम मेरे लिए ।

बेचकर घर दे रक्कम मेरे लिए ॥

उनसे कह दे कोई अज़राहे-करम ।

अब वो बेटी का करे किरिया-कस्म ॥

सर पै रोगान डालकर जलने लगी ।

शमअ थी काफूर की, गलने लगी ॥

ज़िन्दगी की दोपहर ढलने लगी ।

हाथ गम से मौत भी मलने लगी ॥ [तमाम ।

हो गयी जल-भुन के ठंडी सोला-क्राम । चाँद सी सूरत हुई आखिर



लड़कियों से

पंडित ब्रजनारायण 'चकवस्त'

रविशे-स्त्राम पै मर्दों की न जाना हर्गिज़,

दाग़ तालीम में अपनी न लगाना हर्गिज़ ॥

नाम रखा है नुमाइश का तरक्की व रिफ़ार्म,

तुम इस अन्दाज़ के धोके में न आना हर्गिज़ ॥

रंग है जिनमें मगर बूए-वफ़ा कुछ भी नहीं,

ऐसे फूलों से न घर अपना सजाना हर्गिज़ ॥

खुद जो करते हैं ज़माने की रविश को बदनाम;

साथ देता नहीं ऐसों का ज़माना हर्गिज़ ॥

पूजने के लिए मन्दिर जो है आज़ादी का,
उसको तफ़रीह का मरकज़ न बनाना हर्गिज़ ॥
अपने बच्चों की ख़बर क्रौम के मदों को नहीं,
ये हैं मासूम इन्हें भूल न जाना हर्गिज़ ॥

इनकी तालीम का मक़तब है तुम्हारा जानू ,
पास मदों के नहीं, इनका ठिकाना हर्गिज़ ॥
कागज़ी फूल विलायत के दिखाकर उनको,
देस के बाग़ से नफ़रत न दिलाना हर्गिज़ ॥

नगमाये-क्रौम की लय जिसमें समा ही न सके,
राग ऐसा कोई इनको न सिखाना हर्गिज़ ॥
गो बुजुर्गों में तुम्हारे न हो इस वक़्त का रंग,
इन जईफ़ों को न हँस-हँस के रलाना हर्गिज़ ॥

हम तुम्हें भूल गये, इसकी सज़ा पाते हैं ।
तुम ज़रा अपने तई भूल न जाना हर्गिज़ ॥



प्यासी नदी

शम्बीर हसन खाँ साहब 'जोश', मलीहाबादी

ऐ बिरादर ! पुल पै जब गंगा के आ जाती है रेल;

फेंकता है किसलिए सिक्के, ये क्या करता है खेल ?

क्रौम की आँखों से ज़ारी हैं लहू की नदियाँ;

डूबने ही पर है जिनमें इज़्जते-हिन्दोस्ताँ ॥

क्यों नहीं करता है उस खून की नदी का पास;

जिसको गंगा से कहीं बढ़-चढ़ के है सिक्कों की प्यास ।

डूबकर गंगा में इक पैसा उभर सकता नहीं;

हिन्द की आँखों का आँसू खुश्क कर सकता नहीं ॥

कार-आमद है जो आबे-ज़िन्दगानी की तरह;

तू बहा देता है उस दौलत को पानी की तरह ।

देखकर तेरी यह नादानी, ये कारे-नासवाब;

शर्म के मारे हुई जाती है गंगा आब-आब ॥

बाजुए-ज़र ! नाखुदाई के लिये तैयार हो;

डूबनेवाली है क़श्ती क्रौम की हुशियार हो ।

की गयी ना-वक्रत कुर्बानी तो फिर क्या फ़ायदा;

सर से ऊँचा हो गया पानी तो फिर क्या फ़ायदा ॥

सारा हिन्दुस्तान हमारा

समदयार खाँ 'सागर निजामी'

दावा है हर आन हमारा ।

सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥

जंगल औ गुलज़ार हमारे । दरिया औ कुहसार हमारे ॥

कूचे औ बाज़ार हमारे । फूल हमारे, खार हमारे ॥

हर घर, हर मैदान हमारा ।

सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥

गो नहीं हममें फ़ौजी कुव्वत । फिर भी बहुत है दिल में हिम्मत ॥

और हमारे साथ है कुदरत । अब कोई ताक़त, कोई हुकूमत— ॥

रोक तो दे तूफ़ान हमारा ।

सारा हिन्दोस्तान हमारा ॥

इससे भारत की रौनक है । आज़ादी दिन-रात सबक है ।

अपनी धनुक है, अपनी शक़क़ है । हर ज़र्रे पर अपना हक़ है ॥

खेत अपने, दहक़ान हमारा ।

सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥

मंदिर, मसजिद औ मैख़ाना । बादा, सागर औ पैमाना ।

जंगल, बस्ती औ वीराना । हर महफ़िल औ हर काशाना ॥

हर दर, हर ऐवान हमारा ।

सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥

गो पामाल है अपनी हस्ती । हर सू है पस्ती ही पस्ती ।
तन आसानी ऐश-परस्ती । दिन भर फाका, शब भर मस्ती ॥

है यह मगर ईमान हमारा ।

सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥

हिन्द का मालिक हर हिन्दी हो । सिर्फ यहाँ एक क्रौम बसी हो ।
बार न पाए खाह कोई हो । चाहे वो अपनी ही खुदी हो ॥

देख ज़रा अरमान हमारा ।

सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥



राम

समदयार खाँ 'सागर निजामी'

भारत प्यारा, राज दुलारा । कौशल्या की आँख का तारा ।
लम्बी बाँहें, रंग सलोना । सुतलक कुन्दन, खालिस सोना ।
आँखें ताजा फूल कँवल के । कोमल-कोमल, हल्के-हल्के ।
अब्रू दो शक्ती की कमानें । खिंच-खिंच जाएँ चढ़-चढ़ जाएँ ।
सुन्दर-सुन्दर मोहनी सूरत । सर ता पा इक हुस्न की मूरत ।
सरजू जिसका गहवारा थी । गंगा आँखों का तारा थी ।

भारत प्यारा, राजदुलारा—।

कौशल्या की आँख का तारा ॥

दिल का त्यागी, रूह का रसिया । खुद राजा औ खुद ही परजा ।
सब से उलफत करनेवाला । क्रौल का सच्चा, बात का पक्का ।
एक अमर पैगामे-मुहब्बत । सर ता पा इलहामे-मुहब्बत ।
ध्यान की गंगा उससे फूटी । ज्ञान की जमना उससे फूटी ।
सच्चाई का परचम था वो । प्रेम का बाँका बालम था वो ।
रूप में उसके कौन आया था । कह दूँगा तो झगड़ा होगा ।

भारत प्यारा, राज दुलारा— ।

कौशल्या की आँख का तारा ॥

रुहे-शुजाअत,जाने-शुजाअत । आने-शुजाअत,शाने-शुजाअत ।
सब के दुख पर रोनेवाला । दुखियों से खुश होनेवाला ।
शिव के बाण को जीता जिसने । जीती सुन्दर सीता जिसने ।
वो सीता जो हूर थी मुतलक़ । नूर थी मुतलक़, हूर थी मुतलक़ ।
अदल का पैकर,रहम की दुनिया । शक्ती औ भक्ती का सितारा ।
दोश पर इक अनवार की चादर । घूंघरवाले बाल मुकुट पर ।

भारत प्यारा, राज दुलारा—।

कौशल्या की आँख का तारा ॥



गाँधी

समदयार खाँ 'सागर निजामी'

कैसा सन्त हमारा गाँधी ! कैसा सन्त हमारा !!
दुनिया थी गो उसकी बैरी, दुश्मन था जग सारा ।
आखिर में जब देखा साधो वो जीता जग हारा ।

कैसा ०

बुद्ध है या ये नए जनम में बन्सी का मतवारा ।
मोहन नाम सही पर साधो रूप वही है सारा ॥

कैसा ०

भारत के आकाश पै वो है एक चमकता तारा ।
सचमुच ज्ञानी, सचमुच मोहन, सचमुच प्यारा प्यारा ॥

कैसा ०

सच्चाई के नूर से उसके दिल में है उजियारा ।
बातिन में शक्ती ही शक्ती ज़ाहिर में बेचारा ॥
कैसा सन्त हमारा गाँधी ! कैसा सन्त हमारा !!



प्यासे सामंत की लड़ाई

सय्यद अनवर हुसैन साहब 'आरजू', लखनवी

तपते बन में रहे प्यासे तो ये सूखा पानी ।

बचे रोए भी तो आँखों से न निकला पानी ॥

बेबसी देख के अब्बास का जी बैठ गया ।

प्यासी बच्ची ने जो मुँह फोड़ के माँगा पानी ॥

रन में घोड़ा जो उड़ाते हुए पहुँचे अब्बास ।

चौकियाँ घाट पै बैठी थीं, रुका था पानी ॥

वो धुआँधार घटा छाया हुई ढालों की ।

आग जिससे कि बरस पड़ती है, कैसा पानी ?

बरछियाँ ताने बड़े आगे लहू के प्यासे ।

हो जिन्हें देखके पत्थर का कलेजा पानी ॥

वो लचकती हुई डाँडें, वो चमकते हुए फल ।

धूप से और भी खौला हुआ जिसका पानी ॥

एक से एक कहता था कि हाँ भाइयो, हाँ ।

इस जगह आज लहू होके बहेगा पानी ॥

मनचला ऐसा कभी काहे को देखा होगा ।

लेने आया है जो इतनों से अकेला पानी ॥

नया चमन

इस लड़ाई में यही जीत की कुंजी है—।

“मरते-मरते किसी प्यासे को न देना पानी ॥”

“हम हैं लाखों ये अकेला है, बना सकता है क्या ।

सूरमा भी है तो हो ले, ले नहीं सकता पानी” ॥

घात से हाथ चले ऐसी मँजी चोटों के ।

माँगता ही नहीं जिन चोटों का मारा पानी ॥

‘बे-धड़क बागें उठावें’ जो यह कहकर सबने ।

देखा, अब सर से हुआ जाता है ऊँचा पानी ।

बल पड़े तेवरों पर, हो गयी चितवन कुछ और ।

तमतमाने लगा मुँह, माथे से टपका पानी ॥

खिंच के बाहर हुई काठी से तड़पती नागन ।

लहरें लेने लगा, तलवार का ठहरा पानी ॥

छेड़ जैसे ही हुई, आपने भी तान ली बाग ।

टाप घोड़े ने जो मारी, निकल आया पानी ॥

पहले ही वार में रेती पर लहू यों बरसा ।

जैसे आयी हुई बरसात का पहला पानी ॥

जो थे सामन्त बड़े उनके भी जी छूट गये ।

मनचलों का भी हुआ डर से कलेजा पानी ॥

कहती थीं सामने नदी के तड़पती लारें ।
ये वो दिन हैं कि लहू मे भी है महंगा पानी ॥
आगे जो बढ़ रहे थे उनके उखड़ने लगे पाँव ।
जैसे टकरा के पलट जाता है चढ़ता पानी ॥

आन की आन में लाखों का डुबोया बेड़ा ।

नहीं देखा किसी तलवार का ऐसा पानी ॥

लड़के जब छीन लिया घाट तो चिल्लाके कहा—।

‘अब तुम्हारा है ये पानी कि हमारा पानी ॥’

तीन दिन हो गये थे बून्द नहीं थी घर में ।
औ यहाँ सामने आँखों के था गहरा पानी ॥
प्यासे बच्चों का बिलखना नहीं भूला था ।
उट्ठा छाती से धुआँ, आँख से टपका पानी ॥

लहरें सूखे हुए होठों से बहुत शरमायीं ।

थम गया देखके मुँह प्यासे का, बहता पानी ॥

डबडबाई हुई आँखों से भँवर तक ने लजा ।

भरके ले आए सब एक-एक कटोरा पानी ॥

वो पसीने पै अपना लहू बहानेवाला ।
बे-पिलाए हुए क्या पीता अकेला पानी ॥

नया चमन

छोड़ दी घोड़े की बाग और कहा 'तू पी ले ।

मुँह मेरा तकता है क्या, मैं न पियूंगा पानी ॥'

उसने भी आती हुई लहर को ठोकर मारी ।

कि कलेजे को जलाने लगा ठंडा पानी ॥

इतने में रोकने को आ गये फिर गोल के गोल ।

कहते जाते थे कि ले जाने न देना पानी ॥

आप भी हो गये घोड़े पै संभल कर तैयार ।

ले लिया डोलची में जितना समाया पानी ॥

फिर खिंची म्यान से तलवार, चले बार पै बार ।

घाट पर लाल लहू से हुआ सारा पानी ॥

खेत ऐसा ये पड़ा है जो न भूलेगा कभी ।

यहाँ पानी था लहू और लहू था पानी ॥

फिर भी लाखों से अकेले की लड़ाई कब तक ?

धूप, लू, प्यास, थकन और न पीना पानी ॥

थड़जिए घात लगाने लगे पीछे लुपकर ।

सामने आने में होता था कलेजा पानी ॥

बार भर पूर चले, घाव भी गहरे आये ।

बह गया इतना लहू, लाये थे जितना पानी ॥

कट गए हाथ भी, जीने की भी सब आस नहीं ।

आप बच सकते न थे कौन बचाता पानी ॥

हाथ आने में हुआ जिसके लहू पानी एक ।

आँख से अपनी वो बहते हुए देखा पानी ॥

आप घोड़े से गिरे 'हाय सकीना' कहकर ।

सोच ये था कि भतीजी को न पहुँचा पानी ॥

आप मिट सकता है लिखने को मिटा सकता है कौन ?

हाय, पीना ही न प्यासों को बढ़ा था पानी ॥

हिचकी इक आयी, लबों फिरने लगीं, साँस उखड़ी ।

नील आँखों का ढल, माथे से टपका पानी ॥

'आरजू' डूब के जब थाह लगाये तो खुले ।

उथली नदी में न होने पै है कितना पानी ॥



झूठी प्रीत

एहसान दानिश

जग की झूठी प्रीत है लोगो, जग की झूठी प्रीत !

पापिन नगरी, काली नगरी,
धरम दया से खाली नगरी,
पाप से पलनेवाली नगरी,
पाप यहाँ की रीत ।

जग की झूठी प्रीत है लोगो, जग की झूठी प्रीत !

फ़ानी है यह दुनिया, फ़ानी,
उठती मौजें, बहता पानी,
छोड़ भी इसकी राम कहानी,
किसकी हुई यह मीत ?

जग की झूठी प्रीत है लोगो, जग की झूठी प्रीत !

मोह के दिन हैं, दुख की रातें,
लोभ के फंदे, पाप की घातें,
प्रेम के रस से खाली बातें,
हार यहाँ की जीत ।

जग की झूठी प्रीत है लोगो, जग की झूठी प्रीत !

दूसरी बहार

बादल

मौलाना मुहम्मद हुसैन 'आज़ाद'

आने से तेरे आ गया आँखों में नूर है ।

दीवारो-दर से आज बरसता सुरूर है ।

तेरे ही दम-क्रदम की ये सब लहर-बहर है,

सैराव को हो दस्त तो शादाब शहर है ।

ऐ अब्र ! सब ये साज़ो-नवा तेरे दम से है,

ये लुफ़्फ़े-ऐश, लुफ़्फ़े-हवा तेरे दम से है ।

गुंचों के मारे प्यास के थे मुँह खुले हुए,

गुलशन के नौनिहालों के मनके ढले हुए ।

यों फूटकर जो हैं गुलो-रैहाँ निकल पड़े,

क्या जाने किन दिलों के हैं अरमाँ निकल पड़े ।

ऐ अब्र, तू तो छाया हुआ है जहान पर,

छाया हुआ समा है ज़मीं आसमान पर ।

चलना वो बादलों का ज़मी चूम चूमकर,

और उठना आसमाँ की तरफ़ झूम झूमकर ।

बिजली को देखो आती है क्या कौंधती हुई,

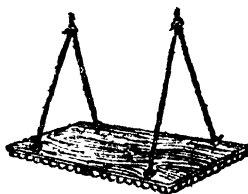
सब्जे को ठंडी-ठंडी हवा रौंदती हुई ।

नया चमन

आती इधर सबा है, उधर है नसीम भी,
और उनके साथ साथ है आती शमीम भी ।
झूलों पे नौजवान हैं पेंगे बढ़ा रहे,
और बच्चे आम के हैं पपीहे बजा रहे ।

झावन के गीत उठा रहे तूफ़ाँ दिलों में हैं,
परदेसियों की याद के अरमाँ दिलों में हैं ।
हर तान में मल्हार के मस्ती का शोर है,
बादल गरजके पर्दे में देता टिकोर है ।

क्या क्या बयाँ कल्लूँ में तेरी रात का मज़ा,
गर रात का मज़ा है तो बरसात का मज़ा ।
सुनसान रात और वो आयी हुई घटा,
चारों तरफ़ जहान में छायी हुई घटा ।



गर्मी

मौलाना मुहम्मद हुसैन 'आजाद'

मुँह पर ज़मी के देखो तो है खाक उड़ रही,

और गर्द ज़ार सू तहे-अफ़लाक उड़ रही ।

दुनिया में बूँद बूँद को खिलक़त तरस रही,

पानी की जा है आग फ़लक से बरस रही ।

शहरों में सूख सूख के जंगल चमन हुए,

औ जंगलों में धूप से काले हिरन हुए ।

सीमाब होके सीने से हर दिल निकल चला,

और आफ़ताब शमअ की सूरत पिचल चला ।



चौपदे

रत्नाजा अलताफ़ हुसैन 'हाली'

जो लोग हैं नेकियों में मशहूर बहुत,
हों नेकियों पर अपनी न मगरूर बहुत ।
नेकी ही खुद इक बढ़ी है गर न हो खलूस,
नेकी से बढ़ी नहीं है कुछ दूर बहुत ॥

ज़ाहिद कहता था—जान है दीन पर कुर्बान,
पर आया जब इमतहाँ की ज़द पर ईमान ।
की अज़ किसी ने 'कहिये अब क्या है सलाह ?',
फ़र्माया कि भाईजान 'जी है तो जहान ॥'

है इश्क़ तबीब, दिल के बीमारों का,
या घर है वो खुद हज़ार आज़ारों का ।
हम कुछ नहीं जानते, पर इतनी है ख़बर,
इक मशग़ला दिलचस्प है बे-कारों का ॥

बस बसके हज़ारों घर उजड़ जाते हैं,
गड़ गड़के अलम लाखों उखड़ जाते हैं ।
आज इसकी है नौबत तो कल उसकी बारी,
बन बनके यूँही खेल बिगड़ जाते हैं ॥

सहरा में जो पाया एक चटियल मैदान,
बरसात में सब्जा का न था जिस पै निशान ।
मायूस थे जिसके जोतने से दहकान,
याद आयी हमें क्रौम के अदबार की शान ॥

है जान के साथ काम इन्साँ के लिए,
बनती नहीं ज़िन्दगी में बे-काम किए ॥
जीते हो तो कुछ कीजिये ज़िन्दों की तरह,
मुदों की तरह जिए तो क्या खाक जिए ॥

क्या फ़र्क, समाप्त न हो जब कानों में,
दानाई की बातों में और अफ़सानों में ।
गुरबत में है अजनबी मुसाफ़िर जिस तरह,
दाना का यही हाल है नादानों में ॥
धोने की है ऐ रिफ़ारमर जा बाक़ी,
कपड़े पै है जब तलक कि धब्बा बाक़ी ।
धो शौक़ से कपड़े को, पै इतना न रगड़,
धब्बा रहे कपड़े पै न कपड़ा बाक़ी ॥

अब ज़अफ़ के पंजे से निकलना मालूम,
पीरी का जवानी से बदलना मालूम ।

नया चमन

खोयी है वो चीज़ जिसका पाना मुहाल,
आता है वो वक्रत जिसका टलना मालूम ॥
वाहज़ ने कहा कि वक्रत सब जाते हैं टल,
इक वक्रत से अपने नहीं टलती है तू अजल ।
की अज़ ये इक सेठ ने उठकर कि हुज़ूर,
है टैक्स का वक्रत भी इसी तरह अटल ॥



चन्द शेर

अकबर हुसेन साहिब 'अकबर' इलाहाबादी

मशरक़ी घर की मुहब्बत का मज़ा भूल गये ।
खाके लन्दन की हवा अहदे-वफ़ा भूल गये ॥
पहुँचे होटल में तो फिर दर्द की परवा न रही ।
केक को चख़के सेवइयों का मज़ा भूल गये ॥

मोम की पुतली पर पिघली तबीयत ऐसी ।
चमने-हिन्द की परियों का मज़ा भूल गये ॥
नक़ले-मगरिब की तरंग आयी तुम्हारे दिल में ।
और ये नुक्क़ता कि "मेरी अस्ल है क्या" भूल गये ॥

क्या तअज्जुब है जो लड़कों ने भुलाया घर को ।

जब कि बूढ़े रविश-दीने-खुदा भूल गये ॥

नई तालीम को क्या वास्ता है आदमीयत से ।

जनाबे डारविन को हज़रते-आदम से क्या मतलब ॥

इल्मो-हिकमत में हो अगर खाहिशे फ़ेम(Fame),

सरकार की नौकरी को हरगिज़ न कर एम (Aim) ।

अपनी मेहनत को अपना 'आनर' समझो,

अपने पाँवों को अपना मोटर समझो ॥

सोहबत अच्छी तो हर जगह है आराम ।

अपने ही बदन को अपना तुम घर समझो ॥

हम ऐसी कुल किताबें क्राविले-ज़ब्ती समझते हैं ।

कि जिनको पढ़के लड़के बाप को खब्ती समझते हैं ॥

दिल छोड़कर ज़बान के फहलू पै आ पड़े ।

हम लोग शायरी से बहुत दूर जा पड़े ॥

मज़हब छोड़ो, मिलत छोड़ो, सूरत बदलो, उम्र गँवाओ ।

सिर्फ़ कलर्की की उम्मीद औ इतनी मुसीबत, तोबा, तोबा ॥

क्रदमे-शौक्र बढ़े इनकी तरफ़ क्या अकबर ।

दिल से मिलते नहीं ये हाथ मिलानेवाले ॥

नया चमन

बे-पास के तो सास की भी अब नहीं है आस ।

मौकूफ शादियाँ भी हैं अब इम्तहान पर ॥

इनको क्या काम है मुरब्बत से ।

अपने रुख से यह मुँह न मोड़ेंगे ॥

जान शायद फ़रिश्ते छोड़ भी दें ।

डाक्टर फ़ीस तो न छोड़ेंगे ॥

शेख़ साहब का तअस्सुब है जो फ़रमाते हैं ।

‘ऊँट मौजूद है फिर रेल पै क्यों चढ़ते हो ?’

हुक्मत उसकी, उसी की मज़ी, उसी के सब काम धंधे ।

कहाँ के इंग्लिश, कहाँ के नेटिव, खुदा की दुनिया, खुदा के बन्दे ॥

देखता है इक उम्र से बन्दा,

बस यही बातें औ यही फन्दा ।

होता है कुछ काम न घन्घा,

‘लाओ चन्दा’ ‘लाओ चन्दा’ ॥

रही रात एशिया गफ़लत में सोती ।

नज़र युरूप की काम अपना किया की ॥

रिजल्यूशन की शोरिश है मगर उसका असर गायब ।

प्लेटों (Plates) की सदा सुनता हूँ औ खाना नहीं आता ॥

दूसरी बहार

कैसी नमाज़, 'बॉल' में नाचो जनाबे-शेख ।
तुम को ख़बर नहीं कि ज़माना बदल गया ॥
मेरी तक़रीर का उस बुत पै कुछ काबू नहीं चलता ।
जहाँ बन्दूक़ चलती है वहाँ जादू नहीं चलता ॥

ईमान बेचने पर हैं सब तुले हुए ।
लेकिन ख़रीद हो जो अलीगढ़ के भाव से ॥
है गुदाम आपका, मसजिद की ज़रूरत क्या है ?
पेट तो है, दिल आगाह नहीं है, न सही ॥

शेख़ जी के दोनों बेटे बा-हुनर पैदा हुए ।
एक हैं खुफ़िया पुलिस में, एक फ़ाँसी पड़ गये ॥
आगे इंजन के दीन है क्या चीज़ ?
भैंस के आगे बीन है क्या चीज़ ॥

सुनते नहीं हैं शेख़ नयी रोशनी की बात ।
इंजन की इनके कान में अब भाप दीजिये ॥
मक्का तक रेल का सामान हुआ चाहता है ।
अब तो इंजन भी मुसलमान हुआ चाहता है ।

मज़हबी बहस मैंने की ही नहीं ।
फ़ालतू अक़ल मुझ में थी ही नहीं ॥

नया चमन

यह बात गलत है कि मुल्के-इस्लाम है हिन्द ।
यह झूठ कि मुल्के-लछमनो-राम है हिन्द ॥
हम सब हैं मतीओ-खैर-खाहे-इंग्लिश ।
यूरप के लिए बस एक गोदाम है हिन्द ॥

न कुछ इन्तज़ारे-नज़र कीजिये ।
जो अफ़सर कहें बस वो झट कीजिये ॥
कहाँ का हलाल और कैसा हराम ?
जो साहब खिलाएँ वो चट कीजिये ॥

पूछते क्या हो कि तू 'पीरू' है या 'हरवंस' है ।
बन्दा जो कुछ हो बहर-हालत बिला लैसंस है ॥

शेख़ जी अपनी-सी बकते हीरहे
वो थियेटर में थिरकते ही रहे ॥

हुए इस क्रूर मुहज्ज़ब कभी घर का मुँह नहीं देखा ।
कटी उम्र होटल में, मरे अस्पताल जाकर ॥
पाकर खिताब नाच का भी ज़ौक़ हो गया ।
'सर' हो गये तो 'बॉल' का भी शौक़ हो गया ॥

आदत जो पड़ी हो हमेशा से वो दूर भला कब होती है ?
रखी है चिनौटी पाकेट में पतलून के नीचे धोती है ॥

जो चाहते हैं कटे उम्र एतदाल के साथ ।

बिठा रहे हैं वो बिस्कुट का जोड़ दाल के साथ ॥

चीज़ वो है बने जो युरप में

बात वो है जो 'पायोनियर' में छपे ॥

राहे-मगरिब में ये लड़के लुट गये ।

वाँ न पहुँचे और हमसे लुट गये ॥

हरचन्द कि कोट भी है, पतखन भी है ।

बंगला भी है, 'पॉट' भी है, साबून भी है ॥

लेकिन मैं तुझसे पूछता हूँ हिन्दी !

युरप का तेरी रंगों में कुछ खून भी है ?

शौक्रे-लैलाए-सिविल-सर्विस ने मुझ मजनून को ।

इतना दौड़ाया, लंगोटी कर दिया पतखन को ॥

कहता हूँ मैं हिन्दू-मुसलमाँ से यही ,

अपनी अपनी रविश पै तुम नेक रहो ।

लाठी है हवाए-दहर पानी बन जाओ ,

मौजों की तरह लड़ो मगर एक रहो ॥

नामा कोई न यार का पैगाम भेजिये ,

इस फ़स्ल में जो भेजिये बस आम भेजिये ।

ऐसे ज़रूर हों कि जिन्हें रख के खा सकूँ ,

पुस्क़ता अगर हों बीस तो दस ख़ाम भेजिये ।

मालूम ही है आपको बन्दे का ऐडरेस ,
सीधे इलाहाबाद मेरे नाम भेजिये ।
ऐसा न हो कि आप यह लिक्खें जवाब में ,
तामील होगी, पहले मगर दाम भेजिये ।



बन्दा तेरा

महाराजा सर कृष्ण प्रसाद 'शान्द'

उसने कहा—'कावा तेरा ?', मैंने कहा—'चेहरा तेरा ।'

उसने कहा—'चेहरा तेरा ?', मैंने कहा—'जलवा तेरा ॥'

उसने कहा—'जीना तेरा ?', मैंने कहा—'हस्ती तेरी ।'

उसने कहा—'मरना तेरा ?', मैंने कहा—'पर्दा तेरा ॥'

उसने कहा—'क्या काम है ?', मैंने कहा—'हर वक्त दीद ।'

उसने कहा—'क्या शगल है ?', मैंने कहा—'सौदा तेरा ॥'

उसने कहा—'दिल क्या हुआ ?', मैंने कहा—'तूने लिया ।'

उसने कहा—'क्या चोर हूँ ?' मैंने कहा—'गमज़ा तेरा ?'

उसने कहा—'मक़सद तेरा ?', मैंने कहा—'तू ही तो है ।'

उसने कहा—'क्रिसमत तेरी ?', मैंने कहा—'मंशा तेरा ॥'

उसने कहा—'ख़िदमत तेरी ?', मैंने कहा—'है बन्दगी ।'

उसने कहा—'क्या नाम है ?', मैंने कहा—'बन्दा तेरा ॥'

तपिश

वेनज़ीर शाह

हवा में तमाज़त का है वह असर ।

कि उड़ते हैं ज़रें बरंगे-शरर ॥

न साया, न सबज़ा, न पानी कहीं ।

दहकती हुई वो रेतीली ज़मीं ॥

बालू औ गर्मी, खुदा की पनाह ।

कि रेगे-बयाबाँ की हालत तबाह ॥

ज़मीं पर अगर रख दे लाकर कोई ।

भरी मश्क भी सूख जाए अभी ॥

ज़रा भी अगर उस तरफ़ को उठे,

तो पाए-निगह में पड़े आबले ।

परिन्दों का हो उस तरफ़ जो गुज़र,

बलून्दी से भुनकर गिरें खाक पर ॥

घटा

वेनजीर शाह

घटा ऊढ़ी ऊढ़ी ये क्या छा गयी ?

बहारे-चमन रंग पर आ गयी ॥

परों को ह्दर मोर तौले हुए ।

घटायें उधर बाल खोले हुए ॥

वो कोइल ग़ज़ब नै बजाती हुई ।

पपीहों से तानें लड़ाती हुई ॥

हवा दोश पर शाल डाले हुए ।

घटाओं के आंचल संमाले हुए ॥

घटा में वो बगुलों की हरसू क्रतार ।

कि ज़ुलमत में आबे-हयात आशकार ॥

सियाही में यह उजली उजली लकीर ।

रवाँ दामने-कोह में जूए-शीर ॥

ज़मीनो-फलक पर है मस्ती का शोर ।

गरज़ते हैं बादल कि चिल्लाए मोर ॥

कभी अब्र गिरयाँ कभी ख़न्दा जन ।

है दीवाने का स्वांग चर्खे-कुहन ॥

चोट

अमरनाथजी मदन 'साहिर', देहलवी

तार पर ज़रूम-सी जब आती है चोट ।

जमज़मा से दिल पै लग जाती है चोट ॥

रंग लाती है तबीयत खुद-बखुद ।

जब हवादिस की वो खा जाती है चोट ॥

शीशये-नाज़ुक है, दिल की क्या बिसात ।

चूर हो जाता है, जब आती है चोट ॥

दिल ही दिल में चुटकियाँ लेता है इश्क़ ।

हर रंगो-पै में समा जाती है चोट ॥

दर्द से जिस दम नफ़स रंगीं हुआ ।

हर सदा से दिल पै लग जाती है चोट ॥

दर्द-मन्दाने मुहब्बत के लिए ।

दिल को सोज़े-गर्म से गरमाती है चोट ॥

सोज़ से होती है आख़िर साज़गार ।

आह का मस्दर नज़र आती है चोट ॥

जब तबीई हो कहीं सोज़ो-गुदाज़ ।

तबए-मौजू में नज़र आती है चोट ॥

शेर-क्या है, 'आह' है या 'वाह' है ।

जिससे हर दिल की उमर आती है चोट ॥

नया चमन

शायरी 'साहिर' है शश्ले-अहले-दिल ।
नश्माए-तौहीद बन जाती है चोट ॥



जुगनू

डाक्टर सर शेख मुहम्मद इक़बाल

जुगनू की रोशनी है काशानए-चमन में,
या शमअ जल रही है फूलों की अंजुमन में ।
आया है आसमाँ से उड़कर कोई सितारा,
या जान पड़ गयी है महताब की किरन में ॥
या शब की सल्तनत में दिन का सफ़ीर आया,
गुर्बत में आके चमका, गुमनाम था वतन में ।
तुकमा कोई गिरा है महताब की क़वा का ?
ज़र्रा है या नुमायाँ सूरज के पैरहन में ॥
हुस्ने-क़दीम की यह पोशीदा इक झलक थी,
ले आयी जिसको कुदरत खिलवत से अंजुमन में ।
छोटे से चाँद में है जुल्मत भी, रोशनी भी,
निकला कभी गहन से, आया कभी गहन में ॥
परवाना इक पतंगा, जुगनू भी इक पतंगा;
वह रोशनी का तालिब, यह रोशनी सरापा ।

‘साहिर’ के कुछ शेर

पं० अमरनाथजी मदन ‘साहिर’, देहलवी

बहरे-हस्ती में अज़ल से है रवाँ किश्तीए-तन;

बादबाँ कोई न अपना, है न लंगर अपना ॥

कैफ़े-मस्ती में अजब जल्वाए-यकताई था;

तू ही तू था, न तमाशा, न तमाशाई था ॥

तुझे ए जल्वा-आरा ! हमने हरसू जल्वागर देखा;

हमें तू ही नज़र आया, जहाँ देखा; जिधर देखा ॥

रज़ाए-यार में जब ख़म हुआ सरे-तसलीम;

न दिल, न दिल की तमन्ना से कोई काम रहा ॥

क्रतरा वासिल होके दरिया में फ़ना हो जायगा ।

जब खुदी मिट जायगी, बन्दा खुदा हो जायगा ॥

सीना बे-कीना है औ क़ल्ब है रोशन मेरा;

दोस्त तो दोस्त है, दुश्मन नहीं दुश्मन मेरा ।

है सो है, मैं हूँ, न तू, और न तेरा मेरा;

काबा है दर मेरा, शेख़ो-बरहमन मेरा ॥

नया चमन

आरिफों की नज़र में रहता है;

नम्रश बाक्री जहाने-फ़ानी का ।

हमने देखा है चश्मे-इबरत से;

आदमी बुलबुला है पानी का ॥

था 'अनलहक़' लबे-मनसूर पै क्या आप से आप ?

था जो परदे में छुपा बोल उठा आप से आप ॥

नज़र-गाह तेरी है आईनाए-दिल;

तुझे हैरती हो के हम देखते हैं ॥

सैर कर आलमे-हस्ती की, मगर दिल न लगा ।

ये है इक दामे-अजल इसमें गिरफ़्तार न हो ॥

तुझे देखा नहीं है, पर याद है दिल में सदा तेरी;

गलत है “ दूर जो आँखों से है वो दूर है दिल से ॥ ”

हर एक इन्सान की है क़द्र कौलो-फ़ेल से अपनी ।

करेगा दूसरा कब क़द्र जब हमने न की अपनी ॥



‘इक़बाल’ के चन्द शेर

डाक्टर सर शेख मुहम्मद इक़बाल

इन्तहा भी इसकी है आखिर खरीदें कब तलक ?

छतरियाँ, रूमाल, मफलर, पैरहन जापान से ?

अपनी गफ़लत की यही हालत अगर क़ायम रही,

आयेंगे ग़स्साल काबुल से, कफ़न जापान से ॥

उठाकर फेंक दो बाहर गली में;

नई तहज़ीब के अंडे हैं गन्दे ।

इलेक्शन, मेम्बरी, कौंसिल, सदारत ;

बनाये खूब आज़ादी के फन्दे ।

मियाँ नुज्जार भी छीले गये साथ ।

निहायत तेज़ हैं यूरोप के रन्दे ॥

जान जाए, हाथ से जाये न सत;

है यही इक़ बात हर मज़हब का तत ।

चट्टे-बट्टे एक ही थैली के हैं ;

साहूकारी, बिस्वादारी, सस्तनत ॥



जौहर दिखाओ

मौलाना ज़कर अली खाँ

अगर, तुमको हक्र से है कुछ भी लगाव,
तो बातिल के आगे न गरदन झुकाओ ॥

हुकूमत को तुमने लिया आजमा;
अब अपने मुकद्दर को भी आजमाओ ॥

हो तुम जिसके ज़रें वो है खाके-हिन्द;
छुपे हैं जो इसमें वो जौहर दिखाओ ॥
फ़लक पर महो-मिहर पड़ जायँ मन्द,
ज़मीं पर इस अंदाज़ से जगमगाओ ॥

हिमालय भी आ जाए गर राह में;
तो ठुकरा के आगे से उसको हटाओ ॥
ज़माने में रोशन करो नामे-हिन्द;
हर अक़लीम में इसका सिक्का चलाओ ॥
हर एक मुल्क का हाथ में लेके दिल;
हर एक क़ौम से अपनी इज़्ज़त कराओ ॥
पुराना हुआ दफ़्तरी इक़तदार;
समझ लो अब इसका भी है चल-चलाव ॥

किसी रोज़ खुद ग़र्ज़ हो जायगी यह ;
बहुत बढ़ चुकी है, कागज़ की नाव ॥



‘हसरत’ के शेर

मौलाना हसरत मोहानी

बार बार आता है यह किसका खयाल ,
बे-खुदी बतला मुझे क्या हो गया ?

नहीं आती, तो याद उनकी महीनों तक नहीं आती ;
मगर जब याद आते हैं तो अकसर याद आते हैं ।

बढ़ गई तुमसे मिल कर और भी बेताबियाँ ;
हम यह समझे थे कि अब दिल को शकेबा कर दिया ।

तेरी महफ़िल से उठाता ग़ैर मुझको, क्या मज़ाल ;
देखता था मैं कि तू ने भी इशारा कर दिया ।

रोग दिल को लगा, गयीं आँखें ;
इक तमाशा दिखा गयीं आँखें ।

नया चमन

उसने देखा था किस नज़र से मुझे ;
दिल में गोया समा गयीं आँखें ।
हाल सुनते वो क्या मेरा “हसरत”
वो तो कहिए सुना गयीं आँखें ।
शब वही शब है, दिन वही दिन है,
जो तेरी याद में गुज़र जायें ।
रात भर उनके तसव्वर से हुआ की बातें ।
क्या ही आराम से गुज़री शबे-फुर्कत मेरी ।
शबे-ग़म किस आराम से सो गये हम,
फ़िसाना तेरी याद का कहते कहते ।
क्या कहूँ तुमसे मुद्दआ क्या है,
काश मैं खुद ही जानता क्या है ।
वफ़ा तुझसे, ऐ बेवफ़ा ! चाहता हूँ ;
मेरी सादगी देख, क्या चाहता हूँ ॥



‘फ़ानी’ साहब के अशआर

शौकत अली खाँ ‘फ़ानी’

आ गयी है तेरे बीमार के मुँह पर रौनक ;

जान क्या जिस्म से निकली, कोई अरमाँ निकला ॥

किसी के एक इशारे में किसको क्या न मिला ;

बशर को ज़ीस्त मिली, मौत को बहाना मिला ॥

दिल आप यार से रुदादे-ग़म कहे तो कहे ;

मेरी ज़बाँ से तो ये माज़रा बयाँ न हुआ ॥

हूँ, मगर क्या ? यह कुछ नहीं मालूम ;

मेरी हस्ती है ग़ैब की आवाज़ ॥

मेरी आँखों में आँसू हमदम क्या कहूँ क्या है ;

ठहर जाए तो अंगारा है, बह जाए तो दरिया है ॥



महात्मा गाँधी

सैयद अशिक हुसैन 'सीमात्र' अकबराबादी

तसरूफ़ सारी दुनियाँ के दिलों पर कर लिया तूने ;

ज़माने को मुहब्बत से मुसख़्बर कर लिया तूने ।

किया तहलील तुझको यूँ तेरी फितरी-लताफ़त ने ;

कि आँखों से गुज़र कर रूह में घर कर लिया तूने ॥

तेरे क़दमों पै होते हैं निछावर सीमगूँ डुकड़े ;

फ़सूँ का याद ऐसा डेढ़ अच्छर कर लिया तूने ।

तेरी 'जय' हो रही है हर तरफ़ वो कामराँ तू है ;

है जितना नातवाँ उतना ही किस्मत का जवाँ तू है ।



‘अज़ीज़’ के चुने शेर

मिर्जा मुहम्मद हादी ‘अज़ीज़’

इरेक क़दम तेरे कूचे में एक आलम है,
कहाँ तक मैं चलूँगा, चला नहीं जाता ।

जबाँ बयान करे मुद्दाए-दिल क्यों कर;
किसी का हाल किसीसे कहा नहीं जाता ॥

कोई तदबीर बन पड़ती नहीं, क्या होनेवाला है ।
मुझे आसान होता काश ! उन्हें दिल से भुला देना ॥

पैदा वो बात कर कि तुझे रोएँ दूसरे;
रोना खुद अपने हाल पै यह ज़ार ज़ार क्या ?

सोज़े-ग़म से अश्क का एक एक क़तरा जल गया;
आग पानी में लगी ऐसी कि दरिया जल गया ॥

हमारे चेहरे से क्या कुछ अयाँ नहीं होता;
तुम आप देख लो, हमसे बयाँ नहीं होता ॥

यह ज़िन्दगी भी याद रहेगी ज़माने में ;
मैं हूँ क़फ़स में, रूह मेरी आशियाने में ॥

नया चमन

होंगे बदनाम तो हो लेने दो,
हमको जी खोल के रो लेने दो ।
झूमता आता है बादल देखो;
दामन अशकों से भिगो लेने दो ॥

ऐ, मेरी कब्र पै चलनेवालों,
नींद भर मुझे सो लेने दो ।
हिम्मते-इश्क ये कहती है 'अजीज़';
अब जो होती है, सो हो लेने दो ॥

काम दुनिया में बहुत करना है; कबल मरने के हमें मरना है ।
तुमको दिखलायेंगे दिल की तस्वीर ; जा-बजा रंग अभी भरना है ॥



बेबसी

मीरजा यास यगाना चंगेजी, लखनवी

चारा नहीं कोई जलते रहने के सिवा ।

सांचे में फ़ना के ढलते रहने के सिवा ॥

ऐ शमअ ! तेरी हयाते-फ़ानी क्या है ?

झोंका खाते, संभलते रहने के सिवा ॥

दिल क्या है ? इक आग है दहकने के लिए ।

दुनिया की हवा खाके भड़कने के लिए ॥

या गुंचः सरबस्ता चटकने के लिए ।

या खार है पहल में खटकने के लिए ॥

दुनिया के मजे में डूबकर क्या तिरते ।

आँखें रखते तो क्यों गढ़े में गिरते ?

लो, देख लो, अब ऐश-परस्तों की दसा ।

मुरदे देखे न होंगे चलते-फिरते ॥

याराने-शबाब ! रात कटने की है देर ।

बुझता है कँवल, हवा पलटने की है देर ॥

महफ़िल में झूमते रहोगे कब तक ।

आँखें खुलने की, दिल उचटने की है देर ॥

नया चमन

काबे से है आज अपना सफ़र और तरफ़ ।
मैं और तरफ़ हूँ रहबर और तरफ़ ॥
कैसे हरमो-दैर इधर हों न उधर ।
दिल और तरफ़ को है नज़र और तरफ़ ॥

दिल को हृद के सिवा धड़कने न दिया ।

क़ालिब में रूह को फड़कने न दिया ॥

क्या आग थी सीने में जिसे फ़ितरत ने ।

रोशन तो किया मगर भड़कने न दिया ॥

किस काम का दिल जो हो ख़बर से ख़ाली ।

मुँह में है ज़र्बाँ मगर असर से ख़ाली ॥

इन अक्ल के अन्धों पै खुदा ख़ैर करे ।

आख़ें दो दो मगर नज़र से ख़ाली ॥

तक्रदीर पै क्या जोर है खोटी ही सही ।

बोटी न मिली तो रूखी रोटी ही सही ॥

चरखा तो चलाये-जाओ गाँधीजी का ।

धोती न सही, तन पै लंगोटी ही सही ॥



गोशए-तनहाई

तिलोकचन्द 'महरूम', बी.ए.

दुनिया में बहुत दौड़े, राहत के तमनाई,
तसर्की की मगर सूरत, तुझमें ही नज़र आई ।

ऐ गोशये-तनहाई !

बच्चा नहीं दिल, जिसको ले जाइये मेलों में,
जुज़ तेरे कहाँ राहत, दुनिया के झमेलों में ।

ऐ गोशए-तनहाई !

सब ऐब-हुनर अपने, ऐ आश्न-ए-बातिन;
तुझ बिन नज़र आ जाएँ, ये बात कहाँ मुमकिन ।

ऐ गोशए-तनहाई !

जंगल में, पहाड़ों में, तारीक गुफ़ाओं में,
मरगूब तरीं है या, अश्जार की छाओं में ।

ऐ गोशए-तनहाई !

शायर कि मुसव्विर है, फ़ितरत के नज़ारों का;
ज़रों में तेरे उसको, जलवा है सितारों का ।

ऐ गोशए-तनहाई !

तालिब हैं तेरे अक्सर, जो इल्म के तालिब हैं;
तुझ से रौशन दिल पर, मज़मूनो मतालिब हैं ।

ऐ गोशए-तनहाई !

बुलबुला

तिलोकचन्द 'महरूम' बी.ए.

फूला हुआ है किस लिए ? क्या बुलबुले में है ?

अल्लाह ! कौन-सी यह हवा बुलबुले में है !

उफ़ ! किस क्रदर ग़रूर भरा बुलबुले में है !

फरऔन कोई आके छुपा बुलबुले में है ।

कितना उभार, कितनी अकड़, कैसी शान है,

पानी की एक बूंद में क्या आन-वान है ।

है, आव-ताव खूब ! मगर यह गुहर नहीं;

है ताज यह किसी का, मगर ज़ेबे-सर नहीं ॥



कामयाबी का राज

डा० सईद अहमद साहब 'सईद' बरेलवी

समुन्दर में फना होते हैं क्रतरे अब्रे-नेसाँ के ;
बड़ी दुश्वारियों से तब दुरे-शहवार बनता है ।

हज़ारों हस्तियाँ जब खाक में मिलती हैं बीजों की ;
कहीं तब इक ज़रासा तरुतए-गुलज़ार बनता है ।

बहुत-सी भट्टियों में तप-तपाकर पाराए-आहन ;
निखरता है, निखरकर तेरो-जौहरदार बनता है ।

मिलाकर खाक खूँ में सैकड़ों अपने सपूतों को ;
कोई महकूम मुल्क आज़ादो खुद-मुख्तार बनता है ।

गरज़ हर ऐश का रस्ता है मंज़िल से मुसीबत की ;
मुसीबत झेलकर दहक़ान भी काचार बनता है ।

हथेली पर जो रख ले जाँ, उसी की कामयाबी है ;
जो रख दे दार पर सर, बस, वही सरदार बनता है ।



‘अमजद’ के चौपदे

सैय्यद अहमद हुसैन ‘अमजद’

कलाम ऐसा अक्सर सुना होगा तुमने;
सुना आज और कल असर दिल में उतरा ।
मगर शेर ऐसा जो हो तेज़ खंजर ;
इधर मुँह से निकला, उधर दिल में उतरा ॥

जाया फ़रमा न सर-फ़रोशी को मेरी ;
मिट्टी में मिला न गर्म-जोशी को मेरी ।
आता हूँ पहन के ऐ रब्बे-ग़फ़ूर ;
घब्बा न लगे सफ़ेद-पोशी को मेरी ॥

उस मेहरे-जहाँ ताब का ज़र्रा न मिला ;
लाखों में किसी एक को रस्ता न मिला ।
जेप्लिन पै उड़ा, रेल में दौड़ा लेकिन ;
बन्दे को कहीं पता खुदा का न मिला ॥

ज़जीरे-दरे-अर्श हिलाता हूँ मैं;
आँख उससे नमाज़ में लड़ाता हूँ मैं ।
सिजदे के बहाने दिल की बेताबी से ;
क्रदमों पे किसी के लोट जाता हूँ मैं ॥

बे-फायदा कब है, जब्दुसाई अच्छी;
तावत में नहीं है खुदनुमाई अच्छी।
इक सिजदे में खाक कर दिया हस्ती को;
हज़रत, तुमसे दियासलाई अच्छी ॥

अच्छा नहीं गुरूर, जल्दी कीजिए ;
हतुलइमकान ज़रूर 'जल्दी कीजिये ।'
हर साँस ये कह रही है आते-जाते ;
चलने के लिये 'हुज़ूर जल्दी कीजिये ॥'

इस जिस्म की केंचुली में एक नाग भी है;
आवाज़े-शिकस्ता दिल में इक राग भी है ।
बेकार नहीं बना है इक तिनका भी;
खामोश दियासलाई में आग भी है ॥



खाके-वतन

पंडित ब्रजनारायण 'चक्रवर्त'

हर सुबह है ये खिदमत सुरशीदे-पुर-ज़िया की ;
किरणों से गूँथता है चोटी हिमालया की ।

सब शूर-वीर अपने इस खाक में निहाँ हैं ;
टूटे हुए खंडर हैं या उनकी हड्डियाँ हैं ।

कश्मीर से अयाँ है जन्नत का रंग अब तक ;
शौकत से बह रहा है दरिआए-गंग अब तक ।

गुचे हमारे दिल के इस बाग में खिलेंगे ;
इस खाक से उठे हैं, इस खाक में मिलेंगे ।

गदों-गुबार याँ का खिलअत है अपने तन को ;
मरकर भी चाहते हैं खाके-वतन कफ़न को ॥



रहे रहे न रहे

पंडित ब्रजनारायण 'चक्रवस्त'

फ़ना नहीं है मुहब्बत के रंगो-बू के लिये ;
बहारे-आलमे-फ़ानी रहे रहे न रहे ।
जनूने-हुब्बे-वतन का मज़ा शबाब में है,
लहू में फिर ये ख़ानी रहे रहे न रहे ॥

रहेगी आबो-हवा में ख़याल की बिजली ;
ये मुश्ते-खाक है फ़ानी रहे रहे न रहे ।
मिट्टा रहा है ज़माना वतन के मन्दिर को;
ये मर-मिटों की निशानी रहे रहे न रहे ॥

दिलों में आग लगे ये वफ़ा का जौहर है ;
ये जमअ-ख़र्चे-ज़बानी रहे रहे न रहे ।
जो माँगना है अभी माँग लो वतन के लिए ;
ये आरजू की ख़ानी रहे रहे न रहे ॥



भूल गये

पंडित ब्रजनारायण 'चक्रवस्त'

जहाँ में आँख जो खोली, फना को भूल गए ;
कुछ इब्तदा ही में हम इन्तहा को भूल गए ।
निफ्राक़ गब्रो-मुसलमाँ का यूँ मिटा आखिर ;
ये बुत को भूल गये, वो खुदा को भूल गए ।

हुआ मिज़ाज का आलम ये सैरे-युरप से ;
कि अपने मुल्क की आबो-हवा को भूल गये ।
ज़मीं लरजती है, बहते हैं खून के दरिया ;
खुदी के जोश में बन्दे खुदा को भूल गए ॥

यह इन्क्रलाब हुआ आलमे-असीरी में ,
कफ़स में रह के हम अपनी सदा को भूल गए ॥



‘चकबस्त’ के ख्यालात

पंडित ब्रजनारायण ‘चकबस्त’

ज़बाँ को बन्द करें या मुझे असीर करें ,

मेरे ख्याल को बेड़ी पिन्हा नहीं सकते ।

ये बेकसी भी अजब बेकसी है दुनिया में ,

कोई सताए हमें, हम सता नहीं सकते ॥

मुहब्बत है मुझे कोयल के दर्द-अंगेज़ नालों से,

चमन में जाके मैं फूलों का शैदा हो नहीं सकता ॥

दिल पे अहबाब के है दाग़े-मुहब्बत बाक़ी ,

रह गयी एक यही दुनियाँ में मेरी निशानी ॥

अरमान यही है, यही आलम है नज़र में ,

जो बुझ न सके आग वो पैदा हो ज़िगर में ।

है शौक की मंज़िल यही दुनियाँ की सफ़र में,

क्या खाक ज़बानी जो सौदा नहीं सर में ।

पाबन्द क़फ़स की नहीं ये आह-शरर-बार,

लगा जाय कहीं आग न सैय्याद के घर में ।

नया चमन

रहती हैं उमंगें कहीं जंजीर की पाबन्द ?
हम कैद हैं जिन्दों में, बियाबाँ है नज़र में ॥

दिल ही की बदौलत रंज भी है, दिल ही की बदौलत राहत भी;
ये दुनिया जिसको कहते हैं, है दोज़ख भी औ जन्नत भी ।

नये झगड़े, निराली काविशें ईजाद करते हैं,
वतन की आबरू अइले-वतन बरबाद करते हैं ॥

मुल्क में दौलत नहीं बाक़ी दवा के वास्ते,
हाथ खाली रह गये हैं अब दुआ के वास्ते ॥

आशना हों कान क्या इन्सान की फ़रियाद से ;
शेख़ को फ़ुरसत नहीं मिलती खुदा की याद से ॥



देखते

अली सिकंदर साहब 'जिगर', मुरादाबादी

इश्क की हद से निकलते, फिर ये मंज़र देखते ;
काश ! हुस्ने-यार को हम हुस्न बनकर देखते ।
गुंजाओ-गुल देखते या माहो-अख़्तर देखते ;
तुम नज़र आते हमें, हम कोई मंज़र देखते ॥

दूर जाकर देखते, नज़दीक आकर देखते ;
हमसे हो सकता तो हम उनको बराबर देखते ।
फितरते-मज़बूर पर काबू ही कुछ चलता नहीं,
वरना हम तो तुझसे भी तुझको छुपाकर देखते ॥

मिल गयीं नज़रों से नज़रें और मिलकर रह गयीं ,
चश्मे-सार्क़ी देखकर क्या ज़ामो-सागर देखते ?
हाय, वो चेहरा और उसमें वो तड़पती बिजलियाँ ,
काश, एक दिन फिर उसे गुस्ताख़ बनकर देखते ॥

दम-ब-ख़ुद हैं हज़रते-ज़ाहिद यहीं तक देखकर ;
होश उड़ जाते अगर शीशे से बाहर देखते ॥

क्रसम

शब्बीर हसन खाँ 'जोश', मलीहाबादी

क्रसम उनकी जो हँसकर खून में अपने नहाते हैं,
खुशी से रण में डट कर मुँह पे तल्वारों जो खाते हैं ।

क्रसम उस बर्फ की जो गिरके खिरमन फूँक देती है,
क्रसम उस मौत की जो खंजरोँ में साँस लेती है ।

क्रसम है उस कमाँ की जो सरे-मैदाँ कड़कती है,
क्रसम उस आग की जो क़ल्बे-शायर में भड़कती है ।

क्रसम उस ज़ज्बाए-ग़ैरत की जो आज़ाद करता है,
क्रसम उस तनतने की जिस पै हर खुदा़र मरता है ।

क्रसम उस साँस की जो मौत के हंगाम चल्ती है,
क्रसम उस वक़्त की जब ज़िन्दगी करवट बदलती है ।

क्रसम ऐ मौत ! उनकी, रंग तेरा जो उड़ाते हैं,
तेरी आँखों में आँखें डालकर जो मुस्कराते हैं ।

क्रसम उस जोश की जो डूबती नब्ज़ें उभारेगा,
कि ऐ हिन्दोस्ताँ ! जैसे ही तू मुझको पुकारेगा ।

मेरी तेरो-खाँ बातिल के सर पर जगमगायेगी,
तेरे होठों की जुम्बिश ख़त्म भी होने न पायेगी ।



खरीदार न बन

शब्बीर हसन खाँ 'जोश', मलीहाबादी

चुटकियाँ बाग में सरगर्म हैं गुलचीनों की,

चमनिस्ताने-जहाँ में गुले-बेखार न बन ।

पस्त से पस्त हो जो चीज़ वो बनजा, लेकिन,

मरके भी जिन्से-गुलामी का खरीदार न बन ॥



गरीबों की ईद

शब्बीर हसन खाँ 'जोश' मलीहाबादी

अहले-दवल में धूम थी रोज़े-सईद की,
मुफ़लिस के दिल में थी न किरन भी उम्मीद की ।
इतने में और चर्ख़ ने मिट्टी पलीद की,
बच्चे ने मुस्कन के ख़बर दी जो ईद की ।
फ़र्ते-मुहन से नब्ज़ की रफ़्तार रुक गयी,
माँ-बाप की निगाह उठी और झुक गयी ।
आँखें झुकीं कि दस्ते-तही पर नज़र गयी,
बच्चे के वल्लवों की दिलों तक ख़बर गयी ।
जुल्फ़े-सबात ग्राम की हवा से बिखर गयी,
बरछी-सी एक दिल से जिगर तक उतर गयी ।
दोनों हुजूमे-ग्राम से हम-आगोश हो गये,
एक दूसरे को देखके ख़ामोश हो गये ॥



नया पुजारी

समदयार हूँ 'सागर निजामी'

कोई है बहारे-चमन का पुजारी । कोई है गुलो-यासमन का पुजारी ।
बुते-मौलवी को कोई पूजता है । कोई क्रशक्राए-ब्राह्मन का पुजारी ।
गुलामे-गुलामाने-जमजम है कोई । कोई मौजे-गंगो-जमन का पुजारी ।

मगर मेरा जौक्रे-परस्तिश जुदा है,

मैं 'सागर' हूँ अपने वतन का पुजारी ॥

कोई है परस्तारे-गेसूए-हिन्दू । कोई है बुते-सीम-तन का पुजारी ।
कोई सुर्ख टीके पे सर धुन रहा है । कोई शोलए- अंजुमन का पुजारी ।
कोई है मुरीदे-कनीजाने-काबा । कोई दुख्तरे-बरहमन का पुजारी ।

मगर मेरा जौक्रे-परस्तिश जुदा है ।

मैं 'सागर' हूँ अपने वतन का पुजारी ।

वतन वो, वतन वो, महकता शिवाला । वो राहतका मन्दर, मुहब्बत का काबा ।
सूतीबे-हिमालय का ज़रकार मिश्वर । वो जमुना की गोदी, वो गंगा का झूला ।
वो मन्दर है मेरा वतन जिसके अन्दर । हज़ारों खुदा हैं तो लाखों

मगर मेरा जौक्रे-परस्तिश जुदा है ।

[कलीसा ।

हैं 'सागर' हूँ अपने वतन का पुजारी ॥

नया चमन

हर एक कैदे-फर्जी से आज़ाद हूँ मैं । तरक्की-दहे-बज़्मे-ईजाद हूँ मैं ।
अक्कीदे मेरे सामने काँपते हैं । असूले-मुहब्बत की बुनियाद हूँ मैं ।
न जुन्नार का ग़म, न तसबीह का ग़म । दिमागी गुलामी से आज़ाद हूँ मैं ।

मगर मेरा ज़ौक्रे-परस्तिश जुदा है,
मैं 'सागर' हूँ अपने वतन का पुजारी॥



राजदुलारे सो जा !

पं० सोहनलाल 'साहिर' बी. ए.

सो जा मेरे प्यारे सो जा,

मेरे राजदुलारे सो जा !

नींद की परियाँ आओ आओ ; मीठी मीठी लोरियाँ गाओ ।

मेरी जान है, नन्हों प्यारा ; मेरा मान है नन्हों प्यारा ।

ज्यों-ज्यों तू परवान चढ़ेगा; जग में तेरा नाम बढ़ेगा ।

सो जा मेरे प्यारे सो जा ,

मेरे राजदुलारे सो जा !

हिम्मत, अजमत चाकर तेरी ; हशमत, शौकत चाकर तेरी ।

तस्त भी तेरा, ताज भी तेरा; बस्त भी तेरा, बाज़ भी तेरा ;

कैसे-कैसे काम करेगा, पैदा जग में नाम करेगा ।

सो जा मेरे प्यारे सो जा,

मेरे राजदुलारे सो जा !

धूम से तेरा ब्याह रचाऊँ ; गोरी चिट्ठी बेगम लाऊँ ।

धन औ दौलत तुझ पर वारूँ ; राज को तेरे, सदके वारूँ ।

गोद खिलाऊँ तेरे बच्चे, सो जा, सो जा मेरे बच्चे ।

सो जा मेरे प्यारे सो जा,

मेरे राजदुलारे सो जा !



तीसरी बहार

‘अकबर’ के जज़्बात

खान बहादुर अकबर हुसैन ‘अकबर’, इलाहाबादी

जहाँ ने साज़ बदला, साज़ ने नगमों की गत बदली ;
गतों ने रंग बदला, रंग ने यारों की मत बदली ।
फ़लक ने दौर बदला, दौर ने इन्सान को बदला ;
गए हम तुम बदल, क़ानून बदला, सल्तनत बदली ॥

रंग चेहरे का तो कालिज ने भी रक्खा क़ायम ;
रंगे-बातिन में मगर बाप से बेटा न मिला ॥

तहज़ीब के ख़िलाफ़ है, लाए जो राह पर ;
अब शायरी वो है जो उभारे गुनाह पर ॥

रक़ीबों ने रपट लिखवाई है जा-जा के थाने में ;
कि ‘अकबर’ ज़िक्र करता है खुदा का इस ज़माने में ॥

मुरीद इनके तो शहरों में उड़े फिरते हैं मोटर पर ;
नज़र आते हैं अब तक शेख़ जी अब तक मियाने में ॥

हम क्या कहें अहबाब क्या कारे-नुमायों कर गए ;
बी. ए. हुए, नौकर हुए, पेंशन मिली, फिर मर गये ॥

नया चमन

कल मस्ते-ऐशो-नाज़ थे होटल के हॉल में ;
अब 'हाय' 'हाय' कर रहे हैं अस्पताल में ॥

गरूर उन्हें है, तो मुझको भी नाज़ है 'अकबर' ।
सिवा खुदा के सब उनका है और खुदा मेरा ।
फलसफ़ा को बहस के अन्दर खुदा मिलता नहीं ;
डोर को सुलझा रहा है औ सिरा मिलता नहीं ॥

तालीम उसकी अच्छी जो अपने घर में खुश हो ;
मज़हब उसी का अच्छा जिसको पुलिस न पकड़े ॥

मुवक्किल छुटे इनके पंजे से सब ; तो बस क्रौमे-महरूम के सर हुए ।
पपीहा पुकारा किए 'पी कहाँ ?' ; मगर वो पिलीडर से लीडर हुए ॥

कामयाबी का सुदेशी पर हर एक दर बस्ता है ;
चोंच तोताराम ने खोली, मगर पर बस्ता है ।

मेरे मनसूबे-तरक्की के हुए सब पायमाल ;
बीज मगरिब ने जो बोया वो उगा औ फल गया ।
बूट डॉसन ने बनाया, मैंने एक मज़मूँ लिखा ;
मुल्क में मज़मूँ न फ़ैला और जूता चल गया ॥

साथ उनके मेरा शेख़ तो चल ही नहीं सकता ;
बन्दर की तरह उँट उछल ही नहीं सकता ॥

तीसरी बहार

कौंसिलों में सवाल करने लगे ।

क्रौमी ताक़त ने जब जवाब दिया ॥

तंग दुनियाँ से दिल इस दौरे-फ़लक़ में आ गया ;

जिस जगह मैंने बनाया घर, सड़क में आ गया ॥

चुगलियाँ एक दूसरे की वक्रत पर जड़ते भी हैं ;

नागहों गुस्सा जो आ जाता है लड़ पड़ते भी हैं ।

हिन्दू वो मुस्लिम हैं फिर भी एक औ कहते हैं सच ;

हैं नज़र आपस की हम, मिलते भी हैं, लड़ते भी हैं ॥

जो ख़िरद-मन्द हैं वो ख़ूब समझते हैं ये बात ;

ख़ैरखाही वो नहीं है जो हो डर से पैदा ॥

आबरू चाहो अगर अंग्रेज़ से डरते रहो ;

नाक रखते हो तो तेग़े-तेज़ से डरते रहो ॥

रिआया को मुनासिब है कि बाहम दोस्ती रखें ;

हिमाक़त हाकिमों से है तबक़का गर्म-जोशी की ॥

दफ़्तरे-तदबीर तो खोला गया है हिन्द में ;

फ़ैसला क्रिस्मत का ऐ 'अकबर' मगर लन्दन में है ।

पाँव कापा ही किए ख़ौफ़ से उनके दर पर

चुस्त पतलून पहनने से भी पिंढली न तनी

नया चमन

बे-इल्म भी हम लोग हैं, गफ़लत भी तारी है ;
अफ़सोस कि अन्धे भी हैं, और सो भी रहे हैं ॥

थे केक की फ़िक्र में, सो रोटी भी गयी ;
चाही थी शै बड़ी, सो छोटी भी गयी ।
वाइज़ की नसीहतें न मानी 'अकबर' ;
पतख़ून की ताक में लंगोटी भी गयी ॥

तहमद में बटन जब लगाने लगे तब धोती से पतख़ून उगा,
हर पेड़ पर एक पहरा बैठा, हर खेत में एक क़ानून उगा ॥

छापे की तक्रवियत पर लीडर बनो न 'अकबर' ;
अपनी बिसात देखो, अपना मुक़ाम देखो ॥

नयी नयी लग रही हैं आँचें यह क़ौम बेकस पिघल रही है ।
न मशरक़ी है, न मगरिबी है ; अजीब साँचे में ढल रही है ॥

चर्ख़ ने पेशे-कमीशन कह दिया इज़हार में ;
क़ौम क़ालिज में और इसकी ज़िन्दगी अख़बार में ॥

ईमान बेचने पे हैं अब सब तुले हुए ;
लेकिन ख़रीद हो जो अलीगढ़ के भाव से ॥

पहनने को तो कपड़े ही न थे क्या बज़म में जाते ;
ख़ुशी घर बैठे कर ली हमने ज़ने-ताजपोशी की ॥

पड़ा है कहत बशर मर रहे हैं फाकों से ;
 खुशी हो क्या मुझे सब-रात में पड़ाकों से ।
 बुझी हुई है तबीयत यह रोशनी है फजूल ;
 उतार लीजिये साहब चिराग ताकों से ॥

तमाशा देखिए बिजली का मगरिब और मशरिक में ;
 कलों में है वहाँ दाखिल, यहाँ मज्जहब पे गिरती है ॥

पाती हैं कौमें तिजारत से उरुज ; बस यही उनके लिए मअराज है ।
 है तिजारत बाकई एक सलतनत ; नाज़ यूरोप को इसी का आज है ।
 लफ्जे-ताजिर खुद है ऐ 'अकबर' सबूत ; देख लो ताजिर के सरपर
 [ताज है ।

कर ली है खूब मैंने नयी रोशनी की जाँच ;
 मुझ से बहुत न कीजिए अब आप तीन-पाँच ।
 इन लीडरों की शुअला-ज़बानी से क्या हुआ ;
 हॉंड़ी तो सदा रह गयी, मज्जहब पै आयी आँच ॥



एक वाक्या

अल्लामा शिब्ली नुमानी

एक दिन हज़रते-फारूक ने मिम्बर पै कहा ;—

“ मैं तुम्हें हुक्म जो कुछ दूँ, वो करोगे मंज़ूर ।”

एक ने उठके कहा यह कि—“ न मानेंगे कभी ;

कि तेरे अदल में हमको नज़र आता है फ़ितूर ।

चादरें माले-गनीमत में जो अब की आयीं ;

सहने-मस्जिद में वो तकसीम हुई सब के हुज़ूर ।

उनमें हर एक के हिस्से में फ़क़त एक आयी ;

था तुम्हारा भी वही हक़ कि यही है दस्तूर ॥

अब जो यह जिस्म पै तेरे नज़र आता है लिबास ;

यह उसी लट की चादर से बना होगा ज़रूर ।

मुरूतसर थी वो रिदा औ तेरा क्रद है दराज़ ;

एक चादर में तेरा जिस्म न होगा मस्तूर ॥

अपने हिस्से से ज़ियादा जो लिया तूने तो अब ;

तू ख़िलाफ़त के न क़ाबिल है न हम हैं मामूर ।”

रोक दे कोई किसी को ये न रखता था मजाल ;
नशए-अदलो-मसावात में सब थे मस्खमूर ॥

अपने फ़र्ज़न्द से फ़ारूके-मुअज़्ज़म ने कहा ;
“तुम को है हालते-असली की हकीकत में उबूर ।
तुम्हीं दे सकते हो इसका मेरी जानिब से जवाब ;
कि न पकड़े मुझे महशर में मेरा रब्बे-ग़फ़ूर ॥

बोले यह इब्ने-उमर सबसे मुखातिब होकर ;—
“इसमें कुछ वालिदे-माजिद का नहीं जुर्मो-कुसूर ।
एक चादर में जो पूरा न हुआ इनका लिबास ;
कर सकी इसको ग़वारा न मेरी तबए-ग़यूर ।

अपने हिस्से की भी मैंने इन्हें चादर दे दी ;
वाक़ए की ये हकीकत है जो थी मस्तूर ।”
नुक्ताची ने ये कहा उठके कि—“हाँ, ऐ फ़ारूक !
हुक्म दे हमको कि अब हम उसे मानेंगे ज़रूर ॥”



इंसाफ़

अल्लामा शिब्ली नुमानी

इफ़लास से था सय्यदए-पाक का ये हाल ;
घर में कोई कनीज़ न कोई गुलाम था ।
घिस घिस गयीं हाथ की दोनों हथेलियाँ ,
चक्की के पीसने का जो दिन रात काम था ।
सीने पै मश्क भरके जो लाती थीं बार-बार ;
गो नूर से भरा था मगर नीलक़ाम था ।
भर जाता था लिबासे-मुबारक गुबार से ;
झाड़ू का मझाला भी जो हर सुबहो-शाम का ।

आखिर गयीं जनाबे-रसूले-ख़ुदा के पास ,
ये भी कुछ इतिफ़ाक कि वाँ इज़्ने-आम था ।
महरम न थे जो लोग तो कुछ कर सकीं न अज़े ;
वापस गयीं कि पासे-हया का मुक़ाम था ।

जब फिर गयीं दुबारा तो पूछा हुज़ूर ने ;
'कल किस लिए तुम आयी थीं, क्या स्वास काम था ?'

ग़ैरत ये थी कि मुँह से न कुछ फिर भी कह सकी ;
हेदर ने अपने मुँह से कहा जो पयाम था ।
इशाद यह हुआ कि ग़रीबाने बे-वतन ;
जिनका कि सीगाए-नवुवी में क्रयाम था ।
मैं उनके बन्दोबस्त से फ़ारिग नहीं हनोज़ ;
हरचन्द इसमें खास मुझे इहतिमाम था ।
जो जो मुसीबतें कि अब उनपर गुज़रती हैं ;
मैं उनका ज़िम्मेदार हूँ, ये मेरा काम था ।
कुछ तुमसे भी ज़ियादा मुक़द्दम है उनका हक़ ;
जिनको कि भूख-प्यास से सोना हराम था ।

ख़ामोश होके सय्यदए-पाक रह गयीं ।
जुरअत न कर सकी कि अदब का मुक़राम था ।
यों की हर अह्ले-बैते-मुत्ताहने ज़िन्दगी ;
यह माजराए दुखतरे-खैरुल अनाम था ॥



पहले नज़र पैदा कर

महाराजा सर किशन प्रसाद 'शाद'

ज़ोर ज़ोर में है जल्वा उसका ;

वो अर्थो है तो निहाँ क्या होगा ?

इश्क़ मंज़ूर है गर, सोज़े-जिगर पैदा कर ;

देखना है जो उसे, पहले नज़र पैदा कर ।

अहले-हुनर की क़द्र ज़माने से उठ गयी ,

अब इस्तियाज़े-नाकिसो-कामिल नहीं रहा ।

आप अपनेको फ़ना ज़ात में उसकी करना ,

बस यही एक तरीक़ा है उसको पाने का ॥

सरफ़राज़ी उसी को हासिल है ;

जो ज़माने में स्वाक़सार रहा ।

सबेरा

बेनज़ीर शाह

नज़ूमे-फ़लक झिलमिलाने लगे,
चिराग़े-सहर टिमटिमाने लगे ।
वो ठंडी हवा और तारों की छाँ,
नज़ूले-ज़िया का वो प्यारा समाँ ।
वो बाग़ों में कलियाँ चिटखने लगीं ,
वो शाखों पे चिड़ियाँ चहकने लगीं ।

वो शबनम ने छिड़का चमन पर गुलाब,
न रह जाएगा कोई सरगर्म खाब ।
नसीमे-सहर गुल खिलाने लगी ,
फ़िज़ाए-सहर रंग लाने लगी ।
ज़िया आसमाँ से उतरने लगी,
नज़र दूर तक काम करने लगी ।

अनादिल गुलिस्ताँ में गाने लगे,
तयूरे-सेहर दिल लुभाने लगे ।
'अल्लाहो अकबर' की आई सदा ,
नहा-धोके मस्जिद चले पारसा ।

नया चमन

वो मैना पहाड़ी वो काला लवा,
हुये आके शाखों पै नरमा-सरा ।

शुआँँ दिखाने लगीं वह झलक ;
हुई जाफरानी विसाते-फलक ।
शफक में बसन्ती किरन जौ-फ़िशां ;
गले मिल रही हैं बहारो-ख़िजाँ ।
वो ज़र्दी ज़रा और गहरी हुई,
पहाड़ों की चोटी सुनहरी हुई ।



कुछ गहरे शेर

पंडित अमरनाथ मदन 'साहिर'

जो फ़ना में मेरा मुक़ाम है, जो बक्रा में मेरा क्रयाम है ।
वो चढ़ाव है मेरे नश्या का, ये उतार मेरे खुमार का ॥

तेरी हस्ती से तो ऐ जौं ! कभी इनकार न था ;
अपनी हस्ती का किसी दम मुझे इक्रार न था ।
श्री सरापाए-दुआलम में तेरी जल्वा-गरी ;
तेरा जल्वा था, मेरा आलमे-पिन्दार न था ।
सानए-कोनो-मकाँ हम तेरी सनअत के निसार ;
ऐसी तामीर में एक ज़र्ज़ भी बेकार न था ॥

पिनहाँ शजर में तुरूम हुआ, तुरूम में शजर ;
रोशन है ये मिसाल कि दाना शजर हुआ ॥

कीमियागर ने तपा कर आग में 'साहिर' का दिल ;
जब कसौटी पर कसा नाक़िस को कामिल कर दिया ॥

क्रतरा दरिया है अगर अपनी हक़ीक़त जाने,
खोए जाते हैं जो हम आपको पा लेते हैं ॥

नया चमन

उसकी रज़ा में जब सरे-तसलीम ख़म हुआ ;
हम खुश-गवार पाते हैं हर ना-गवार को ॥

जब नक्रशे-दुई दिल से मिट जाय तो ज़ाहिर हो ;
तहक़ीर से क्या नुक्साँ, तौक़ीर से क्या हासिल ॥

देखा है शजर तुख़्म को औ तुख़्म शजर को ;
हम ताड़ते हैं अहले-हकीकत की नज़र को ।
जुज़ कुल नज़र आता है जो हो दीदाए-बीना ;
ज़र्रा में है खुशीद अयाँ अहले-बसर को ॥

आमद है तेरी या है मेरे होश की ख़सत ;
मज़िल है तेरी या मेरा आपे से सफ़र है ॥

रहगुज़र उम्रे-रवाँ का है अजब ना-हमवार ;
कभी देखी है बुलन्दी, कभी पस्ती देखी ।
दिल सी अज़ाँ नहीं आलम में कोई शै 'साहिर' ;
बेदिली हमने मगर इससे भी सस्ती देखी ॥

सरबस्ता राज़ तेरा हो राज़दाँ तो जाने ,
तू खुद समा रहा है पैकर में आदमी के ।
'साहिर' में और हम में कुछ फ़र्क है तो इतना ;
वो जी उठा है मरके, हम मर मिटे हैं जी के ॥

तीसरी बहार

आँख के तिल में रहे नूरे-नजर की सूरत ;
पास के पास रहे, दूर के वो दूर रहे ॥

मस्त जो यादे-सनम में है, वही है होशियार ;
होश अपना है जिसे, याद से गाफ़िल है वही ।
देखता जल्वा को अपने है वो खुद, ऐ 'साहिर' ;
जाँ वही, जिस्म वही, दीदा वही, दिल है वही ॥

खुदनुमा महुवे-खुदआराई हुआ मेरे लिए ;
वो तमाशाई तमाशा बन गया मेरे लिए ॥



स्वाहिश

डाक्टर सर शेख मुहम्मद इक़बाल

दुनियाँ की महफ़िलों से उकता गया हूँ या रब !
क्या लुप्त अंजुमन का जब दिल ही बुझ गया हो ।
शोरिश से भागता हूँ, दिल धूँढ़ता है मेरा,
ऐसा सकूत जिस पर तक्ररीर भी फ़िदा हो ॥

मरता हूँ ख़ामुशी पर यह आरज़ू है मेरी ,
दामन में कोह के एक छोटा-सा झोंपड़ा हो ।
आज़ाद फ़िक्र से हूँ, उज़लत में दिन गुज़ारूँ ;
दुनिया के ग़म का दिल से काँटा निकल गया हो ॥

लज्जत सरोद की हो चिड़ियों के चहचहों में ;
चश्मे की शोरिशों में बाज़ा-सा बज रहा हो ।
गुल की कली चटककर पैग़ाम दे किसीका ;
सागर ज़रा-सा गोया मुझको जहाँ-नुमा हो ॥

हो हाथ का सिरहाना, सब्जे का हो विछौना ;
शर्माय जिससे जलवत, खिलवत में वो अदा हो ।
मानूस इस क्रदर हो सूरत से मेरी बुलबुल ;
नन्हें से दिल में उसके खटका न कुछ भरा हो ॥

तीसरी बहार

सफ़ा बाँधे दोनों जानिव बूटे हरे हरे हों ;
नदी का साफ़ पानी तस्वीर ले रहा हो ।
हो दिल-फ़रेब ऐसा कुहसार का नज़ारा ;
पानी भी मौज बनकर उठ उठ के देखता हो ॥

आग़ोश में ज़मी के सोया हुआ हो सवज़ा ;
फिर फिर के झाड़ियों में पानी चमक रहा हो ।
पानी को छू रही हो झुक झुक के गुल की टहनी ,
जैसे हसीन कोई आईना देखता हो ॥

मैंहदी लगाए सूरज जब शाम की दुल्हन को ;
सुरखी लिए सुनहरी हर फूल की कवा हो ।
रातों को चलनेवाले रह जायँ थक के जिस दम ;
उम्मीद उनकी मेरा टूटा हुआ दिया हो ॥

बिजली चमक के उनको कुटिया मेरी दिखा दे,
जब आसमाँ पे हरसूँ बादल घिरा हुआ तो ।
पिछले पहर की कोयल वो सुबह की मुअज्जिन ,
मैं उसका हमनवा हूँ, वह मेरी हमनवा हो ॥

कानों पै हो न मेरे दैरो-हरम का इहसाँ ;
रौज़न ही शोपड़ी का मुझको सहरनुमा हो ।

नया चमन

फूलों को आये जिस दम शबनम वज्रू कराने ,
रोना मेरा वज्रू हो, नाला मेरी दुआ हो ॥

इस खामुशी में जाँँ इतने बुलन्द नाले,
तारों के काफिले को मेरी सदा दरा हो ।
हर दर्द-मन्द दिल को रोना मेरा रुला दे ;
बेहोश जो पड़े हैं, शायद उन्हें जगा दे ॥



विधवा

मुंशी दुर्गासहायजी 'सरूर' जहानाबादी

वो दुखिया हूँ, नहीं दर्दे-निहाँ का राजदाँ कोई ;
वो बेकस हूँ, नहीं सुनता है मेरी दासताँ कोई ।
बनाया है सरापा दागो-हसरत सोजे-हिरमाँ ने ;
पिन्हाए आह ! फूलों की न मुझको बढ़ियाँ कोई ।
तक्राज़ा लज्जते-ज़ौक्रे-खलिश का है शबे-ग़म में ;
जिगर में आह रख दे चीर कर नोके-सिनाँ कोई ।
ज़माना हो रहा है आह जब तारीक नज़रों में ;
सँवारे बाम पर क्या गेसुए-अम्बर-फ़शाँ कोई ।

संभाल ए ज़ब्त उठकर इज़तराबे-दिल से डरती हूँ ;
कि नाजुक है ज़माना हो न मुझसे बद-गुमाँ कोई ॥
जलाया चुपके चुपके आतिशे-ख़ामोशी-ग़म तू ने ॥
बुझाई आग कब दिल की लगी अब्रे-करम तूने ॥



हसरत भरे शेर

मौलाना हसरत मोहानी

सियाकार थे, बा-सफ़ा हो गये हम ;
तेरे इश्क़ में क्या से क्या हो गए हम ।
न जाना कि शौक़ और भड़केगा मेरा ;
वो समझे कि उससे जुदा हो गये हम ।
दमे-वापसी आए पुरसिश को नाहक़ ,
बस, अब जाओ तुमसे खफ़ा हो गए हम ।
जब उनसे अदब ने न कुछ मुँह से मांगा ;
तो इक पैकरे-इलतिजा हो गये हम ॥

खिरद का नाम जन्म पड़ गया, जन्म का खिरद ;
जो चाहे आपका हुस्ने-करिश्मा-साज़ करे ।

न मुझको उसकी ख़बर है, न खुद उन्हें है ख़्याल ;
कुछ इस तरह से मुहब्बत बढ़ाई जाती है ।
गोया वो सब सुना ही तो देगी वहाँ का हाल ,
क्या क्या सवाल करते हैं बादे-सबा से हम ॥

होके नादिम बैठे हैं ख़ामोश ;
सुलह में शान है लड़ाई की ।

शबे-फुर्कत में याद उस बे-वफ़ा की बार-बार आयी,
भुलाना हमने भी चाहा मगर बे-इख़्तियार आयी ।
इलाही, रंग ये कब तक रहेगा हिज़े-जानां में,
कि रोज़े-बेदिली गुज़रा तो शामे-इन्तज़ार आयी ॥

खाकसारों में अपने देके जगह ;
तुमने मगरूर कर दिया हम को ।

बेकली से मुझे राहत होगी ;
छेड़ दें आप, इनायत होगी ।
वो दर्दमन्द हूँ 'हसरत' कि बजाए-सितम ;
करे जो लुत्फ़ भी कोई तो अश्कबार हूँ मैं ।
है इन्तहाए-यास भी इब्तदाए-शौक्र ;
फिर आ गए वहीं पै चले थे जहाँ से हम ।

अहले-नज़र को भी नज़र आया न रूए-यार ;
याँ तक हिजाबे-नूर ने मस्तूर कर दिया ॥

हुस्न से अपने वो गाफ़िल था, मैं अपने इश्क़ से ;
अब कहाँ से लाऊँ वो नावाक़फ़ीयत के मजे ।

मुझ से भी ख़फ़ा हो मेरी आहों से भी बरहम ;
तुम भी हो अजब चीज़ कि लड़ते हो हवा से ॥

चन्द मीठे शेर

शौकत अली खाँ 'फानी'

सुन के तेरा नाम आँखें खोल देता था कोई;

आज तेरा नाम लेकर कोई गाफिल हो गया ।

शौक से नाकामी की बदौलत कूचाए-दिल ही छूट गया;

सारी उम्मीदें टूट गयीं, दिल बैठ गया, जी छूट गया ।

मंज़िले-इश्क़ पै तनहा पहुँचे, कोई तमन्ना साथ न थी ;

थक-थक कर इस राह में आखिर इक इक साथी छूट गया ॥

इश्क़ ने दिल में जगह की तो कज़ा भी आयी ;

दर्द दुनिया में जब आया तो दवा भी आयी ।

दिल की हस्ती से किया इश्क़ ने आगाह मुझे ;

दिल जो आया तो घड़कने की सदा भी आयी ।

इसी को तुम अगर ऐ अहले-दुनिया ! जान कहते तो ;

वो कांटा जो मेरी रग रग में रह रहकर खटकता है ॥

मुश्ताक़ खबरदार रहें दिल से, जिगर से ;

मिलती है ज़माने की नज़र उनकी नज़र से ।

मुझे क्रसम है तेरे सब आजमाने की ;
कि दिल को अब नहीं बर्दाश्त गम उठाने की ।
तेरा असीर हूँ चाहे तो ज़िबह कर सैय्याद ;
न तोड़, दिल की अमानत है आशियाने की ।
न साँस का है भरोसा, न आह में तासीर ;
वो क्या फिरे कि हवा फिर गयी ज़माने की ॥

दिल का उजड़ना सहल सही, बसना सहल नहीं ज़ालिम ;
बस्ती बसना खेल नहीं, बस्ते-बस्ते बस्ती है ।



सोसाइटी

सैय्यद आशिक्र हुसैन 'सीमाब' अकबराबादी

वो नापाक मज़मा वक़्त ज़ाया करनेवालों का ;

वो हैबतनाक मरकज़ ज़हर-आलदा ख़यालों का ।

मुहज़ज़ब एक महफ़िल डाकुओं की औ लुटेरों की ;

मुनज़्जिम एक टोली शोबदासामों सपेरों की ॥



वो नाजायज़ जथा खुदराय, खुद-बीं, खुद-परस्तों का,

वो नाशाइस्ता हलक़ा, बेहयाओं, फ़ाक़ा मस्तों का ।

ख़तरनाक एक जमाअत, खुद-गरज़, बे-एतमादों का ;

शरंगेज़ एक मजलिस, वक़्त के शैतान ज़ादों का ॥



वो एक बातिल-क़दा, हक़ की जहाँ पुरसिश नहीं होती ;

ज़मीरो-रूह की ता-दूर गुंजाइश नहीं होती ।

वो साज़िश-गाह होती है जहाँ तख़रीब इन्सां की ;

वो आतिश-गाह, फुकती है जहाँ तहज़ीब इंसां की ॥



जहाँ बद-रस्मियों की ढाल दी जाती हैं ज़ंजीरें ;
जहाँ बरबादि-ए-अखलाक की होती हैं तदबीरें ।
रियाकारी जहाँ ढलती है मक्कारी के सांचों में ;
जहाँ इकबाल जलता है हसद की तेज़ आँचों में ॥



वो एक मज़बूह जहाँ कटती है गर्दन बेगुनाहों की ;
वो एक मक़तल जहाँ चलती हैं छुरियाँ कज-निगाहों की ।
वो शोरिश-गह, जहाँ फ़ितने नये बेदार होते हैं ;
जहाँ क़ानून बुग्ज़ो-किब्र के तैयार होते हैं ॥



कहाँ जाता है तू छूटने को इस तूफ़ान-ग़ारत में ।
जिसे समझा है जन्नत वो जहन्नुम है हक़ीक़त में ॥



सितारों के गीत

सैय्यद आशिक हुसैन 'सीमात्र' अकबरावादी

हम जल्वे हैं औ खुद अपने जल्वे शब भर चमकाते हैं ;
हम नगमे हैं औ खुद अपने मासूम तराने गाते हैं ।
कुछ भीनी भीनी आवाज़ें इल्हाम-कदे से आती हैं ;
गिरते ही हमारे होठों पर शीरीं नगमे बन जाती हैं ।

हम अपने शीरीं-नगमों से बरसाते हैं बेदारी-सी ;
बहने लगती है दुनियाँ के ऐवानों पर सरशारी-सी ।
ऐ दुनिया के रहनेवालो ! तुम क्यों मगमूमे-पस्ती हो ;
हम भी उसकी आवादी हैं, तुम जिस दुनियाँ की बस्ती हो ।

तुममें हममें कुछ फर्क नहीं मखलूक खुदा की दोनों हैं ;
बाबस्ता एक ही रिश्ते से ये नूरी खाकी दोनों हैं ।
हाँ, फर्क अगर है तो इतना, तुम गाफिल हो, बेदार हैं हम ;
उस नशे से महरूम हो तुम, जिस नशे से सरशार हैं हम ।

जो नूर हकीकत हम में है वो तुम में भी ताबिन्दा है ;
लेकिन है तुम्हारा दिल मुर्दा औ रूह हमारी ज़िन्दा है ।

तीसरी बहार

तुम रात को ऐ दुनियावालो ! फ्रिके-राहत में मरते हो ;

यूँ ज़ाया आधी उम्र अपनी एक खाब-गराँ में करते हो ।

हम अपने रोशन गीतों से जब रात जगाने आते हैं ;

आगोश-अजल में खाबीदा सारी दुनियाँ को पाते हैं ।

तुम सुन नहीं सकते वो नगमे जिनसे गफ़लत शरमाती है ,

जब उनकी आग बरसती है, सारी हस्ती थर्राती है ।

हम रूह की मस्ती से भरकर पैमाने अपने लाते हैं ;

पैग़ाम सकूने-हस्ती का इन्सान को देने आते हैं ।

ऐ गाफ़िल इन्साँ जाग कभी, बे-माँगे दौलत लुटती है,

तू वक़्त गवाँता है सो कर औ शब भर नेमत लुटती है ।

ऐ गाफ़िल इन्साँ, जाग कभी पिछले को क्या कुछ होता है ,

फ़ितरत मिलने को आती है औ तू बे-परवा हो सोता है ।

ऐ गाफ़िल इन्साँ, सोच कभी, ये राज़ नहीं, आईना है ;

वो मौत को खुद क्यों दावत दे, जिसको दुनिया में जीना है ।



‘अज़ीज़’ के शेर

भिर्ज़ा मुहम्मद हादी ‘अज़ीज़’

अहद में तेरे, जुर्म क्या न हुआ ;
खैर गुज़री कि तू खुदा न हुआ ।
इश्क की रूह को दिया सदमा ;
ज़िन्दगी में अगर फ़ना न हुआ ॥

उलझन का इलाज आह, कोई काम न आया ;
जी खोलके रोया भी तो आराम न आया ।
दिल सीने में जब तक रहा, आराम न आया ,
काम आयगा किसके, जो मेरे काम न आया ।
बिजली-सी कोई शै मेरे सीने में कभी थी ,
सोचा तो बहुत, याद मगर नाम न आया ॥

देख कर हर दरो-दीवार को हैराँ होना ;
वह मेरा पहिले-पहल दाखिले-ज़िन्दाँ होना ।
उफ़, मेरे उजड़े हुए घर की तबाही देखो ;
जिस के हर ज़रें पै छाया है बियाबाँ होना ॥

तीसरी बहार

कुछ रंग'अज़ीज़'अब नज़र आता है मुझे और,
शायद कि ये दर्द आज से उठकर न उठेगा ॥

जुल्म करते हैं ये ज़ालिम कि दवा करते हैं ;

चारा-साज़ों से यह पूछो तो कि क्या करते हैं ।

कान धरकर कभी सुन आओ कहानी दिल की ;

होठ बीमारे-मुहब्बत के हिला करते हैं ।

क्यों लरजती है ये ज़िन्दों की इमारत देखो ;

क्यों वो लारों को असीरों की रिहा करते हैं ।

क्या कहूँ आप से हाले-दिले-बीमार 'अज़ीज़';

वक्त अब वो है कि दुश्मन भी दुआ करते हैं॥

रात दिन देखे है आँखों ने कुछ ऐसे हादिसे ;

दिल नहीं लगता 'अज़ीज़' इस स्वाक की तामीर में ॥

जहाँ में काश ! पैदा ही न होते ;

न बन पड़ता है हँसते और न रोते ।

अगर बढ़ती है मेरे दिल की धड़कन ;

वो चौक उठते हैं शबको सोते सोते ।

कहें यह राज़ क्या ऐ ! हँसनेवाले !

अगर जीते तो कुछ दिन और रोते ।

नया चमन

बहुत झगड़े रहे फुर्कत की शब तक;
न दुनिया थी, न हम थे सुबह होते होते ।
ये किसने खाव में जलवा दिखाया ;
यों ही हम रह गये सोते के सोते ।
‘अज़ीज़’ अब ज़ब्त से भी काम ले कुछ ;
अरे मर जायगा क्या रोते रोते ॥

हम गुज़श्ता सुहबतों को याद करते जाएंगे ;
आनेवाले दौर भी यों ही गुज़रते जाएंगे ।
कब अकेले इस जहाँ से हम गये ;
लेके अपने साथ एक एक आलम गए ।
फूट निकला ज़हर सारे जिस्म में ,
नब कभी आँसू हमारे थम गए ।
फिर किसीने भी न पूछा ऐ ‘अज़ीज़’ ;
क्रब्र तक सब साहबे-मातम गए ।

दिल ने एक बात न मानी मेरी ;
मिट गयी हाय जवानी मेरी ।

मन्ना न देगी भला तुमसे दास्ताँ मेरी ;
कहाँ ज़बाँ तुम्हारी, कहाँ जबाँ मेरी ॥



दर्द भरे शेर

असगर हुसैन 'असगर' गोन्डवी

सुनता हूँ बड़े गौर से अफसानए-हस्ती ;
कुछ खाब है, कुछ अस्ल है, कुछ तर्जें-अदा है ॥
रुदादे-चमन सुनता हूँ इस तरह क्रफ़स में ;
जैसे कभी आँखों से गुलिस्तां नहीं देखा ॥

तेरे जल्बों के आगे हिम्मते-शरहो-बयाँ रख दी ;
जबाने-बेनिगह रखदी, निगाहे-बेज़बाँ रख दी ।
नियाज़े-इश्क़ को समझा है क्या ए ! वाइज़े-नादाँ ;
हजारों बनगए काबे जर्बी मैंने जहाँ रख दी ।
क्रफ़स की याद में यह इज्तराबे-दिल मआज़ला ;
कि मैंने तोड़कर एक एक शार्वे-आशियाँ रख दी ।
इलाही, क्या किया तूने कि आलम में तलातुम है ;
गज़ब की एक मुश्ते-खाक ज़ेरे-आसमां रख दी ॥

ये भी फ़रेब से हैं कुछ दर्दे-आशिक़ी के ;
हम मर के क्या करेंगे, क्या लिया है जी के ।
महसूस हो रहे हैं बादे-फ़ना के शौंके ॥
खुलने लगे हैं मुझपर असरार ज़िन्दगी के ॥

नया चमन

जीना भी आ गया, मुझे मरना भी आ गया,
पहचानने लगा हूँ तुम्हारी नज़र को मैं ।
'असागर' मुझे जनून नहीं लेकिन ये हाल है ;
घबरा रहा हूँ देख के दीवारो-दर को मैं ॥

आलम की फ़ज़ा पूछो महरूमे-तमन्ना से ;
बैठा हुआ दुनिया में, उठ जाए जो दुनिया से ॥

गो नहीं रहता कभी पर्दे में राज़े-आशिकी ;
तुमने छुपकर और भी उसको नुमायाँ कर दिया ॥

किस क्रदर पुरकैफ़ है टूटे हुए दिल की सदा ;
अस्ल नग़मा एक आवाज़े-शिकस्ते-साज़ है ॥

जब अस्ल इस मजाज़ी-हक़ीक़त की एक है ;
फिर क्यों फिरा रहे हैं इधर से उधर मुझे ॥

हम इस निगाहे-नाज़ को समझे थे नेशतर ;
तुमने तो मुस्कराके रगे-जाँ बना दिया ।

सौ बार तेरा दामन हाथों में मेरे आया ;
जब आँख खुली देखा, अपना ही गरेबाँ है ।
आगोश में साहिल के क्या लुत्फ़े-सकूँ इसको ;
ये जान अज़ल ही से परवर्दए-तूफ़ाँ है ॥

जो नज़र है हस्ती का धोका नज़र आता है ;
परदे पे मुसव्विर ही तनहा नज़र आता है ।
लौ शमए-हक्रीकत की अपनी ही जगह पर है ;
फ़ानूस की गरदिश से क्या क्या नज़र आता है ॥

नगमाए-पुरदर्द छेड़ा मैंने इस अन्दाज़ से ;
खुद-बख़ुद मुझ पर नज़र पड़ने लगी सैयाद की ॥

कुछ इस अदा से मेरा उसने मुद्दा पूछा,
ढलक पड़ा मेरी आँखों से गौहरे-मक़सूद ॥

है अब तो तमन्ना कि किसीको भी न देखू ;
सूरत जो दिखा दी है तो ले जाओ नज़र भी ॥

दैरो-हरम भी मंज़िले-जानाँ में आए थे ;
पर शुक्र है कि बढ़ गए दामन बचा के हम ।

उट्टे अजब अन्दाज़ से वो जोशे-गज़ब में ;
बढ़ता हुआ इक हुस्न का दरिया नज़र आया ॥



नहीं होता

अली सिकंदर साहब 'जिगर' मुरादाबादी

अब तो ये भी नहीं रहा इहसास । दर्द होता है या नहीं होता ।
इश्क जब तक न कर चुके रुसवा । आदमी काम का नहीं होता ॥
टूट पड़ता है दफ़्तरतन जो इश्क । बेशतर देरपा नहीं होता ।
हाय ! क्या होगा तबीयत को । ग़म भी राहत-फ़ज़ा नहीं होता ॥
दिल हमारा है या तुम्हारा है । हमसे ये फैसला नहीं होता ।
जिस पे तेरी नज़र नहीं होती । उसकी जानिब खुदा नहीं होता ॥
मैं कि, बेज़ार उम्र भर के लिए । दिल कि, दम भर जुदा नहीं होता ।
वो हमारे करीब होता है । जब हमारा पता नहीं होता ॥
दिल को क्या क्या सकून होता है । जब कोई आसरा नहीं होता ।

हो के एक बार सामना उनसे ।

फिर कभी सामना नहीं होता ॥



दो शेर

सैय्यद अहमद हुसैन 'अमजद'

बचपन ही के पहलू में जबानी भी तो है ;

बाक्री ही के आगोश में फ़ानी भी तो है ।

समझे हो ग़लत रूह जुदा, जिस्म जुदा ;

जो बर्फ़ की शकल है वो पानी भी तो है ॥

मैं इस दरियाए-मौज़ज़न में,

मानिन्दे हुबाब उभर रहा हूँ ।

हर सांस में फांस की खटक है,

फिर भी जीनेपै मर रहा हूँ ॥



‘चकवस्त’ के चन्द शेर

पंडित ब्रजनारायन ‘चकवस्त’

नयी तहज़ीब के सदक्रे, न शरमाने दिया दिल को ;

रहे मन्तक के परदे में करिश्मे-बेहयाई के ॥

चमन-ज़ारे मुहब्बत में उसीने बाग़बानी की ;

कि जिसने अपनी मेहनत ही को मेहनतका समर जाना ॥

दरे-ज़िन्दों पे लिखा है किसी दीवाने ने—

‘वही आज़ाद है जिसने इसे आबाद किया’॥

हम पूजते हैं बागे-चमन की बहार को ;

आँखों में अपनी फूल समझते हैं ख़ार को ।

आए थे जिस चमन से वो बरबाद हो गया;

अब हम कफ़स में याद करें क्या बहार को ।

लाया है क्या प्यामे-वतन पूछता हूँ मैं ;

ग़ुरबत में देखता हूँ जो अत्रे-बहार को ॥

दर्द-उल्फ़त ज़िन्दगी के वास्ते अकसीर है :

खाक के पुतले इसी जौहर से इंसों हो गए ॥

जिसकी कफ़स में आँख खुली हो मेरी तरह ;

उसके लिए चमन की ख़िज़ाँ क्या, बहार क्या ॥

दिल-सूरते-आईना जो रोशन नहीं होता ;

जुन्नार पहनने से बराहमन नहीं होता ॥

आगोश

अली सिकंदर साहब 'जिगर' मुरादाबादी

रिदं जो मुझको समझते हैं उन्हें होश नहीं ;

मैकदा-साज़ हूँ मैं मैकदा-बरदोश नहीं ।

कौन-सा जलवा यहाँ आते ही बे-होश नहीं ;

दिल मेरा दिल है कोई सागरे-सरजोश नहीं ।

मरनेवाले तुझे मरने का भी क्या होश नहीं ;

माँ का आगोश है ये मौत का आगोश नहीं ।

पाँव उठ सकते नहीं मंज़िले-जानों के खिलार ;

औ अगर होश की पूछो तो मुझे होश नहीं ।

हुस्न से इश्क़ जुदा है न जुदा इश्क़ से हुस्न ;

कौन-सी शै है जो आगोश दरागोश नहीं ।

मिट चुके ज़ेहन से सब यादे-गुज़श्ता के नक़ूश ;

फिर भी एक चीज़ है ऐसी कि फ़रामोश नहीं ।

मुख्तसर है मेरी रूदादे-मुहब्बत नासिह ;

जिस्म में जान है, जब तक कि मैं ख़ामोश नहीं ।

एक गोशे में सिमट आये हैं दोनों आलम ;

मेरा दामन है, किसी और का आगोश नहीं ।

नया चमन

अब तो तासीरे-गमे-इश्क यहाँ तक पहुँची ;
कि इधर होश अगर तो उधर होश नहीं ।
ज़ीस्त है ज़ीस्त जो रग रग में रवाँ है मए-इश्क ;
मौत है मौत अगर रक्म नहीं, जोश नहीं ।
कभी उन मदभरी आँखों से पिया था इक-जाम ;
आज तक होश नहीं, होश नहीं, होश नहीं ।
अपने ही हुस्न का दीवाना बना फिरता हूँ ;
मेरे आगोश में अब हसरते-आगोश नहीं ।
मिलके एक बार गया है कोई जिस दिन से 'जिगर' ;
मुझको ये वहम हे जैसे मेरा आगोश नहीं ॥



भूल

समदयार खों 'सागर निजामों'

यह महफ़िल में किसने मधुर गीत गाया ?

संभालो, संभालो मुझे वज्र आया ।

सियह खानए-दिल में यह कौन आया ?

ज़मीं मुस्कराई, फ़लक़ जगमगाया ।

बड़ी भूल की हुस्न से दिल लगाया,

दीवाने यह है एक सपने की माया ।

मुहब्बत में सूदो-ज़ियाँ की न पूछो ,

बहुत हमने खोया, बहुत हमने पाया ।

न वह हैं, न मैं हूँ, न दीन और दुनिया,

जनूने-मुहब्बत कहाँ खींच लाया ।

गज़ल मेरी 'सागर' वह नगमा है जिसको,

जवानी ने लिख्ता मुहब्बत ने गाया ॥



यह फूल भी उठा ले

समदयार ख़ाँ 'सागर निजामी'

जल्द्वे तरे अनोखे, गमज़े तरे निराले,
चितवन है सीधी-सादी, तेवर हैं भोले-भाले;
कुहनी तक आस्तीने, आँचल कमर में डाले,
ख़ूबसार गोरे गोरे, यह बाल काले-काले।

ओ फूल चुननेवाली !

इक हाथ टोकरी पर, इक हाथ है कमर पर,
ढलका हुआ दुपट्टा, ताजे-गरूर सर पर;
है इक नज़र क़दम पर, औ इक क़दम नज़र पर,
क्यों यह ख़राम तेरा, पामाल कर न डाले ?

ओ फूल चुननेवाली !

तू फूल चुन रही है, औ फूल झड़ रहे हैं,
बल तेरी त्योरियों में, रह रह के पड़ रहे हैं;
क्या तेरी टोकरी में तारे से जड़ रहे हैं ?
हसरत से बाग़वाले फिरते हैं दिल सन्हाले।

ओ फूल चुननेवाली !

फूलों में मैंने अपना दिल भी मिला दिया है,
फूलों में मिल मिलाकर वह फूल बन गया है;
आएगा काम तेरे, यह तेरे काम का है;
ओ फूल चुननेवाली, यह फूल भी उठा ले।

ओ फूल चुननेवाली !

बीमार कलियाँ

अस्तर शीरानी

न फूलों की तमन्ना है, न गुलदस्तों की हसरत है,
मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों से मुहब्बत है !

अभी उलटा नहीं बादे-बहारी ने नक्राब इनका ,
अभी महफूज है इक खिलवते-रंगी में स्वाब इनका ,
अभी सरमस्तियों में रात-दिन सोने की आदत है ।
मुझे तो कुछ इन्हीं.....

अभी टूटा नहीं सूरज की किरनों से हिजाब इनका ,
अभी रसवा नहीं है गुल-फरोशों में शबाब इनका ,
अभी छायी हुई दोशीजगी की सादा रंगत है ।
मुझे तो कुछ इन्हीं.....

बहारिस्तान के मंदिर की इनको देवियाँ कहिये ,
जो गुल को कृष्ण कहिए, इनको उसकी गोपियाँ कहिए ,
कोई जामे-मलाहत है कोई काने-सबाहत है ।
मुझे तो कुछ इन्हीं.....

नया चमन

कोई छू ले अगर इनको, तो यह कुम्हला के रह जाएँ ,
हया में इस क्रदर डूबें कि बस मुरझा के रह जाएँ ,
अभी अलहड़पन के दिन हैं, शरमाने की आदत है ।

मुझे तो कुछ इन्हीं.....

मेरा बस हो तो 'अखतर' मैं इन्हींका रंग हो जाऊँ ,
हमेशा के लिए इन चंपई परदों में सो जाऊँ ,
मुझे इनकी रसीली गोद में मरने की हसरत है ।

मुझे तो कुछ इन्हीं.....



हम्द

हफ़ीज़ जालंधरी

ऐ दो जहाँ के वाली !

ऐ गुलशनों के माली !

हर चीज़ से है जाहिर	हिकमत तेरी निराली ।
तेरे ही फ़ैज़ से है	सर-सब्ज़ डाली डाली ।
फत्तों में तेरी रंगत	फूलों में तेरी लाली ।

यह सिलसिला जहाँ का

दुनिया के गुलसिताँ का,

फूलों भरी ज़मीं का तारों का, आसमों का ।

सारा है काम तेरा—

प्यारा है नाम तेरा ।



यह खाक, आग, पानी

है तेरी मेहरबानी ।

हरदम हवा के लब पर	है तेरी ही कहानी ।
ऊँचे फ़ाड़ चुप हैं	देकर तेरी निशानी ।
है दम-क़दम से तेरे	दरियाओं में खानी ।

नया चमन

हर बह और बर में
हर खुश्क और तर में,
हर बीज औ शजर में हर शास्त्र, हर समर में ।
है फ़ैज़ आम तेरा
प्यारा है नाम तेरा ।



तू ने हमें बनाया ,
औ सोचना सिखाया ।

हर शै में हमने देखा तेरे करम का साया ।
जिस रास्ता में ढूँढ़ा तेरा निशान पाया ।
खालिक है तू खुदाया मालिक है तू खुदाया ।

इन्सान भी हैं तेरे
हैवान भी हैं तेरे,

जौदार भी हैं तेरें , बेजान भी हैं तेरे ।
हर एक गुलाम तेरा ,
प्यारा है नाम तेरा ।



पपीहा

जगतमोहन साहेब खाँ

बही तान फिर सुना दे, मेरे खुशनुवा पपीहे,
मेरे दिलरुबा पपीहे, मेरे खुशबदा पपीहे ।
उसी दर्द-मन्द दिल से उसी सौतए-मुजमहिल से,
तेरे इश्क के तसद्दुक बही राग गा पपीहे ॥

卐

मेरी नींद उचट गयी है, तेरी सौत जाँ-फ़िज़ा से,
दिले-मुज्जतरिब है बेकल, उसे तू सुला पपीहे ।
ये घटायें काली-काली, ये हवा के सर्द झोंके,
तुझे गुदगुदा रहे हैं कि तू कुछ सुना पपीहे ॥

卐

तुझे जिस तरह है हासिल, यह कमाल इश्क नैसाँ,
बही राह व रस्म उलफ़त, मुझे भी सिखा पपीहे ।
यह धरा है नुसखा-ए-दिल ! यह खुला है बाब वहदत,
जिसे फिर कभी न भूँऊँ, वह सबक पढ़ा पपीहे ॥

नया चमन

कोई रूप-गुल दिखा दूँ, किसी सर्व से मिला दूँ,
तेरी बेकली का आखिर है इलाज क्या पपीहे ।
तेरा सत्र औ तवक्कुल, तेरा ज़ब्त औ क्रनाअत,
तुझे आफ़रीं पपीहे, तुझे मरहना पपीहे ॥

卐

यह ग़ज़ब की आहोज़ारी यह बला की बेक्रारी,
तुझे किसका है तसव्वुर, अरे कुछ बता पपीहे ॥



उर्दू शायरी में आनेवाले चन्द लफ्ज़

अज़ल—सृष्टि का पहला दिन ।

अनलहक़—मैं ईश्वर हूँ; 'अहं ब्रह्मास्मि', ईरान के दार्शनिक मंसूर के लिद्धान्त जो सूफ़ी मत का आधार बने ।

अहबाब—मित्र वर्ग । सूफ़ियों के मतानुसार जो ईश्वर के साथ सखाभाव रखते हैं ।

आशिक़—प्रेमी; प्रेम करनेवाला । उर्दू-फारसी के कवि अपने को आशिक़ और ईश्वर और कभी कभी गुरु को माशूक़ कहकर सम्बोधित करते हैं । सूफ़ी कवियों का यही ढंग था ।

आसमान—चख़; आकाश; देव; भान्य-विधाता । उर्दू कवि आसमान को सदा निर्दयी और अत्याचारी बताते हैं—काल या दुर्दैव की तरह ।

इश्क़—प्रेम । यह दो तरह का होता है (१) इश्क़ हक़ीक़ी अर्थात् शुद्ध या भगवत्प्रेम और (२) इश्क़ मज़ाज़ी यानी सांसारिक प्रेम, जिसे माया-जाल भी कहा जाता है ।

क्रफ़स—ज़िन्दों; बन्दीगृह । उर्दू कवि संसार को भी क्रफ़स कहते हैं ।

क्रयामत—प्रलय ; हृदय-विदारक या अद्भुत दृश्य । प्रलय का दिन, जब क्रयों में मुर्दे जी उठेंगे और ईश्वर उनका न्याय करेगा । The day of judgement.

काबा—ईश्वर का घर; मुसलमानों का मुख्य तीर्थ-स्थान—जो मक्का में है । सूफ़ी लोग सौंदर्य के पूजक होते हैं । इसलिए काबा की हँसी भी उढ़ाते हैं । कवि कभी कभी माशूक़ के घर को भी काबा कहते हैं ।

काफ़िर—नास्तिक, ईश्वर को न माननेवाला। सूफ़ी ईश्वर के सम्बन्ध में कट्टरता का भाव नहीं रखते। इसीलिए शायर कभी कभी अपने को काफ़िर कहते हैं। माशूक को भी काफ़िर कहते हैं।

क़ैस—मजनूँ। पागल और प्रेमी के अर्थ में भी प्रयोग करते हैं।

गुल—गुलाब का फूल। उर्दू कवि अपने माशूक को गुल और आशिक़ को बुलबुल कहते हैं। प्रियतम, सुन्दर।

चख़—आसमान।

जफ़ा—जुल्म, अत्याचार। आशिक़ के प्रति माशूक का निर्दय व्यवहार।

ज़ालिम—जुल्म करनेवाला; माशूक।

ज़िन्दों—क़फ़स।

ज़ुलेखा—मिन्न की रानी, जो यूसुफ़ पर मोहित थी।

तूर—एक पवित्र पहाड़, जो अरब के उत्तर में है। हज़रत मूसा को यहीं पर ईश्वर ज्योति के रूप में दिखाई पड़े थे और वे बेहोश हो गए थे। उस ज्योति को तूर का जल्वा भी कहते हैं।

दैर—मन्दिर। सूफ़ियों के मुताबिक़ माशूक या ईश्वर का निवास-स्थान।

दोस्त—माशूक। सूफ़ियों के अनुसार ईश्वर और कभी कभी गुरु।

परवाना—पतंग; शमा का प्रेमी; आशिक़।

बज़म—नाच-रंग की सभा।

बुत—प्रतिमा; सौन्दर्य की प्रतिमा; माशूक।

बुतरखाना—दैर, मन्दिर।

बुलबुल—ईरान की एक चिड़िया जो मौसम-बहार में गुलाब के फूल के चारों ओर चक्कर लगाती और गाती है। हिन्दुस्तान में जिसे

बुलबुल कहते हैं—उससे यह चिड़िया भिन्न है। बुलबुल आशिक के अर्थ में भी आता है।

मजन्नू—फ़ैस, पागल।

मर्ग—मौत; अजल। प्रायः हर्षोन्माद या विरह की पीड़ा की अधिकता के लिए भी इसका प्रयोग होता है।

महशर—क्रयामत।

माशूक—प्रियतम—सांसारिक प्रेम में। अलौकिक प्रेम में—ईश्वर। प्रायः माशूक बहुत सुन्दर और सुकुमार वर्णित होता है—मगर अन्दर से वह बड़ा कठोर और निर्दयी होता है। उर्दू में माशूक का पुलिग में भी प्रयोग करते हैं।

मूसा—यहूदी पैगम्बर; जिसने तूर की पहाड़ी पर जल्वा देखा था।

मय—मै, मदिरा। सूफी गुरु के उपदेश और ईश्वर-प्रेम को भी मय कहते हैं। ज़्यादातर यह शब्द इसी अर्थ में आता है।

मंसूर—ईरान का वह वेदान्ती, जिसको 'अनलहक' का ज्ञान हो गया था। सूफी मत का संचालक। मौलवियों ने उसे काफ़िर कहकर शूली पर चढ़ा दिया।

यास—पूरी निराशा.; जहाँ सारी चिन्तायें दूर हो जाती हैं।

यूसुफ़-जुलेखा—यूसुफ़ मुसलमानों के एक पैगम्बर थे। कहते हैं कि ये बड़े सुन्दर थे। इनके भाइयों ने इन्हें कुएँ में ढकेल दिया। कुछ व्यापारी इन्हें निकालकर मिस्र के बाज़ार में ले गये। मिस्र की रानी जुलेखा इन पर मोहित हो गयी। खरीद कर अपने वश में करना चाहा। ये न माने तो जेल में डाल दिया। जब मिस्र का राजा मर गया तो इन्होंने जुलेखा से शादी कर ली और मिस्र के राजा हो गए। यह समाचार जब इनके पिता को मालूम हुआ तो बूढ़े की आँखों में फिर से नूर आ गया। फ़ारसी-साहित्य में यूसुफ़

ब्रुलेस्ता की प्रेम-कहानी बहुत प्रसिद्ध है। उर्दू कवि माशूक को भी सुन्दरता के लिए यूसुफ़ कहते हैं।

लैला-मजनू—अरबी-फ़ारसी साहित्य में इनकी प्रेम-कथा बहुत प्रचलित है। इनका प्रेम आदर्श-प्रेम माना जाता है। ये अरब के रहनेवाले थे। मजनू लैला के लिये पागल हो जंगलों में मारा-मारा फिरता रहा। और अन्त में वह निराश प्रेमी मर गया।

बाइज़—नापेह, धर्मोपदेशक, शेर। सूफ़ी तथा दूसरे फ़ारसी और उर्दू के शायर इसे पाखण्डी और मूर्ख कहकर हँसी उड़ाते हैं।

शीरी—फ़रहाद—ईरान के प्रसिद्ध प्रेमी-प्रेमिका। ग़रीब फ़रहाद जो—चीन का चित्रकार था—फ़ारस की बालिका शीरी के सौंदर्य पर मोहित हुआ; शीरी भी उसे चाहने लगी। मगर फ़ारस का बादशाह खुसरो उस से शादी करना चाहता था। उसने चढ़ाई भी कर दी। इस पर शीरी ने बादशाह से शादी करना मंजूर कर लिया और खून-खराबी रोक दी। मगर फ़रहाद उसके पीछे पागल बना ही रहा। अन्त में खुसरो बादशाह ने फ़रहाद से कहा कि अगर तुम फलाना पहाड़ खोदकर उससे नहर निकालो तो शीरी तुम्हें मिल जायगी। दीवाने फ़रहाद ने यह शर्त भी मान ली और प्रेम की अद्भुत शक्ति से यह काम समाप्त कर डाला। खुसरो ने जब यह देखा तो घबराया और उसने एक साजिश की। उस तरफ़ से झूठा जनाज़ा निकलवाया और फ़रहाद को कहलवा दिया कि शीरी मर गयी, उसका जनाज़ा निकला है। यह सुन फ़रहाद ने इथियार कलेजे में भोंक लिया और वहीं ढेर हो गया। जब यह ख़बर शीरी को मिली तो वह भी दौड़ी आयी और फ़रहाद की लाश पर गिरकर मर गयी।

सनम—बुत, मूर्ति, प्रियतम, माशूक।

स्तक़ी—शराब पिLANेवाला, प्रेम-पात्र, प्रियतम, गुरु।

मुआफ़ी

इस किताब की छपाई में कुछ गलतियाँ रह गई हैं।
उम्मीद है, मेहरबान इस आँख के कुसूर को नीचे लिखे
मुताबिक दुरुस्त कर पढ़ेंगे और मुआफ़ करमायेंगे।

सफ़ा	सतर	ग़लत	सही
५	२१	मौलान	मौलाना
७	९	बुलबुल के	बुलबुल ने
८	२१	देतहा	देहात
११	५	“थास”	“यास”
११	२५	शायरी म	शायरी में
१८	१९	होलराइड	होलराइट
२४	११	अमीर	मीर
२५	१८	जहानाबादी	जहानाबाद
३१	३	शनोवैज्ञानिक	मनोवैज्ञानिक
३२	१०	ज़िला	जिला
३८	९	“नज़्मा” “ज़ार”	“नज़्मा-ज़ार”
४४	११	बर्गा-समर	बर्गो-समर
५६	१२	जईफ़्तों	ज़ईफ़्तों
५८	२	सागर	सारार
७२	३	पेंगे	पेंगें

सक्रा	सतर	गलत	सही
७६	१६	नुक्ता	नुक्ता
८४	१५	खन्दा ज़न	खन्दाज़न
९९	१३	मरगूब	मरगूब
११३	१७	है	मैं
११४	२	असूले	उसूले
१२९	३	नज़ूमे	नज़ूमे
१२९	१	बो	बो
१४३	९	लुटने	लुटने
१४४	१५	नूर	नूरे
१४५	४	आग़ोश	आग़ोशे
१५७	६	फ़लक़	फ़लक
१६३	७	सौते	सौते



‘ नया चमन ’ की कुंजी

अब तक जो हिन्दी-प्रेमी भाई या हिन्दी प्रचारक सिर्फ हिन्दी कविता पढ़ते-पढ़ाते आ रहे हैं, उनके वास्ते ‘ नया चमन ’ कुछ नया-सा ही होगा । उन्हीं की ज़रूरतों को मद्दे-नज़र रखकर यह नोट तैयार किया गया है । उम्मीद है, इससे उन्हें कुछ मदद मिलेगी । अगर ज़रूरत महसूस हुई और भाइयों ने सुझाया तो अगली बार और कुछ जोड़-जाड़ कर दिया जायगा । भूलें रह गयी हों तो सुझाने पर हम शुक्रगुज़ार होंगे ।

इस नोट को शुरू से आखिर तक अपना कामती वक़्त लगाकर हमारे अजीज़ दोस्त मौ० सय्यद मुहम्मद फ़ज़लुल्लाह साहब, एम.ए., एल.टी; देख गए हैं, अपने सुझाव दिये हैं । इसके वास्ते ‘सभा’ उनका एहसानमन्द रहेगी । वे सरकारी ओरियंटल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी के क्यूरेटर हैं, फिर भी जब कभी ज़रूरत हो, ‘ सभा ’ की इमदाद के वास्ते तैयार रहते हैं । इसलिये हम लफ़्ज़ों में उनका शुक्रिया अदा ही कैसे कर सकते हैं ? हाँ, हमारे पाठक उनके ज़रूर शुक्रगुज़ार रहेंगे ।—व्रजनन्दन.

पहली बहार



दुआ

दुआ - प्रार्थना

आलम - दुनियाँ

बिस्तरे-राहत - सुख की नींद; सुख
देनेवाला बिछोना।

खाब - नींद, स्वप्न

जनाब में - हुजूर में, सामने

सूरते-उम्मीदवार - उम्मीदवार की

हालत

रब - खुदा

इलतिजा - प्रार्थना, आरजू

करम - दया

[भावार्थ—जिस तरह हिन्दू कवि
गणेश या सरस्वती की वन्दना
करते हैं, उसी तरह शायर ने खुदा
से प्रार्थना की है कि उसकी ज़बान
में वह ताक़त आये, जिससे सुननेवालों
पर उसका असर हो। मतलब—
कविता ऊँचे दर्जे की हो।]

हुब्बे - वतन



हुब्बे-वतन - देश का प्रेम

बन्दाए-वतन - देश का संरक्षक

स्ताबे-ग़फ़लत - भ्रम की नींद

बेदार - जागृत

अहले-शहर - शहर (बस्ती) के लोग

'लौ'... 'लागी' - क्या कभी अपने शहर

वालों के प्रति प्रेम प्रदर्शित किया है ?

नक़शा - चित्र

कूचाओ-बाज़ार - गली-कूचा

आँखों में फिरना - (मुहा०) याद रहना

दर्रे-दीवार - घर-द्वार

उलफ़त - प्रेम

'उलफ़त... है' - यह प्रेम नहीं है

दरिन्द - जंगली जानवर

चरिन्द - चरनेवाले, पशु, जानवर

परिन्द - परवाले, पक्षी

संग - पत्थर

गुर्बत - परदेश का निवास

‘टुकड़े...में’—परदेस में पत्थर से दिल
भी देश और देशवासी के प्रेम में
पिघल जाते हैं ।

रूख - पेड़

फुर्कत - वियोग, विरह

परवान चढ़ना - उन्नति पाना, बढ़ना
यों - यहाँ

बिही - नाशपाती, Berry.

बास्वर - बासवर, बाम्बूवाले, टिकने-

वाले

जिन्हार - जिनहार, जीनेवाले

जान के लाले पढ़ना - (मुहा०) संकट
में फँसना

हैवी - जानवर

कमतर - कम, नीच

हम-वतन - एक देश के रहनेवाले

अहले-वतन - देश के लोग

लुफ़ - मज़ा, आनंद

अश्क - आँसू

ना-दार - गरीब

गिज़ा - आहार, भोजन

जूतियों से - जूता पहनकर

मयस्सर - प्राप्त, मिलना

नेसती - अभाव, गरीबी

उतरन - छोड़ा हुआ, उतारा हुआ

बनाओ - बनाव, श्रृंगार

बर्गो-ममर - पत्ते व फल (यहाँ संतान
से मतलब है)

खुश्क - सूखा

तर - हरा

अस्ल - असल, सत्य

पैबन्द - जोड़, बन्धन

आजुर्दा - दुखी

खुसन्द - खुश

गाफ़िल-भूला हुआ

पैरना - तैरना

नया शिवाला



शिवाला - शिव का मंदिर

बरहमन - ब्राह्मण

गर - अगर

सनम-क़दा - मन्दिर

बुत - मूर्ति

जदल-अदल - लड़ाई-झगड़ा

दैर - मन्दिर	नङ्गशे-दुई - भेद-भाव
हरम - काबा	दामाने-आसमाँ - आसमान का सिल-
वाइज़ - उपदेशक	सिला
वाज़ - उपदेश	मय - शराब
फ़िसाना - कहानी	पीत - प्रीति, प्रेम
प्लाके-वतन - देश की मिट्टी	शानती - शान्ति
ज़र्रा - कण, अणु	पिरीत - प्रीत, प्रेम
गैरियत - परायापन	

उठ बाँध कमर



दम भरना - (मुहा०) मानना, समर्थन	तहज़ीब - सभ्यता
करना	गुलशन - बगीचा
कुव्वत - ताक़त	गरदूँ - आसमान
सिमटी - छोटी बनी हुई	सबा - हवा
ख़िलाफ़त - राज्य (ख़लीफ़ा से बना)	

सीताजी की आरजू



हमराह - एक राह पर चलनेवाले,	फ़िराक़ - वियोग, विरह
साथी, पती-पत्नी	'घड़ियों...फ़िराक़ में' - जिसकी विरह
नाज़ुक - कोमल	की आदत हो वह झेले, मुझे वह आदत
शीशाए-दिल - शीशा जैसा हृदय	नहीं। मैं विरह नहीं बर्दाश्त कर
जी छूटना - (मुहा०) चित्त व्याकुल होना	सकती।

शामो-सहर - शाम-सुबह, बराबर,	अगरचे - यद्यपि
पहलू - दिल, बगल	आबला-पाई - पैरों के फफोले
शिकेब - धैर्य, सहनशीलता	दोज़ख - नरक, जहन्नम
गमे-रोज़गार - हर रोज़ का दुख,	मज़तर - बेचैन, मुज़तर
बराबर दुख ही दुख	अलम-क़दा - पहाड़ का निवास
करम - दया, कृपा	खस-पोश - खस (सुगंधित जड़ें) से
दस्त - जंगल	बनी झोंपड़ी
शामो-आलाम - दुख, रंज (बहु व०)	सनम-क़दा - प्रियतम का गृह
ईज़ा - तकलीफ़	सहरा - जंगल, मैदान

भलाई का पैग़ाम



पैग़ाम - संदेशा	दहाना - सुँह, दहान
खाक का पुतला - मनुष्य	शरीके-दर्द-दिल - किसी की वेदना में
मुँह में दाँत होना - (मुहा०) शक्ति-	(शरीक) हिस्सा लेकर
वान होना	आफ़तज़दा - आफ़त में फँसा
खाया-पिया क्या है - क्या भोगा है ?	बेकस - विवश, लाचार, दुखी
खैरात - दान	मुफ़लिस - ग़रीब
राहे-मौला - मौलाकी राह, खुदा की	ग़म-ग़लत करना - दुःख भूलना
राह	रबाब - सारंगी की तरह का बाजा
आक्रबत - भविष्य	चंग - चमड़े से मड़ा बाजा
तोशा - राह खर्च, खाने-पीने की चीज़	दिल-सोज़ - करुण (कृपालु)
तफ़्तः - जला हुआ	नग़मा - राग, सुरीली आवाज़
राहत-रसाँ - आराम पहुँचानेवाला	साज़े-ख़ुश-आहंग - सुन्दर बाज़ों का
तिशना - प्यासा	संगीत, रसीली आवाज़

तिशनाकामी - प्यास

आबे- आतिश-रंग - भाग के रंग व

गुणवाला पानी, शराब

शग्ल - मनोरंजन, काम

जामो-मीना - प्याला और शराब की,

वे-नवा - गरीब [बोतल

नाने - रोटियाँ

शबीना - बासी, रात की

शादमों - खुश

खिजों - पतझड़, अवनति

मुवाफिक - अनुकूल

आसमों - ईश्वर, समय, काल

ताबकै - कब तक

मसरूफ - मरन

उम्मे-रवाँ - उम्र की रवानगी, बीतती

हुई उम्र

पानी का रेला - पानी की धारा,

(भाव) दुनियाबी बातों में

हशमत - शान-शौकत

शौकत - रोब, बल, ताकत

रफ़्तगत - उच्चता, बढ़ाई

पसे-मुर्दन - मौत के बाद

शाने-इमारत - बड़े मकान की शान

अज़मत - बढ़ाई

महशर - क़यामत, the day of
judgment.

ऐमाल - काम, कर्म

अफ़आल - ,, ,,

नौवारिदे हस्ती



कि - के (क्या के अर्थ में)

नौवारिदे हस्ती - नया आया हुआ

प्राणी

दुनियाए-खुन्दां - हूँसी की दुनिया

ज़री - सुनहला, सोने का

जज़ीरा - टापू, द्वीप (देश)

फ़िरदौस - स्वर्ग

नज़ारे - दृश्य

नक्रश - चीज़ें

यूँ - यों

मुल्लक़न - बिल्कुल, ज़रा

ना-आशन। - अपरिचित

सरज़मीन - जगह, ज़मीन

आफ़ियत - आराम, चैन

दिलप्राह - पसन्द की	मानूस - उदास, मायूस
हवैदा - ज़ाहिर, प्रकट	गुंबत - परदेस
पाको-रोशन - पवित्र और उज्ज्वल	इत्मानान - शांति
अर्श - आसमान	शामिले-अरमाने-दिल - दिल की
इन्किलाबात - इन्किलाब का बहु०	अभिलाषाओं में शामिल
बागे-रिज़्वा - स्वर्ग का बर्गाचा	

मीठा लोरी



लोरी - बच्चों को सुलाने के गीत	देना, निहावर होना (बहुत ज़्यादा
हारे - (भाव) आँखें	प्यार के भाव में)
कुर्बान जाना - (मुहा०) बलिहारी, जान	हुजूम - भीड़
	माते - मत्त, मग्न, मस्त

स्नेहलता



पिन - उम्र	शबाब - जवानी
तेरा-चौदा - तेरह-चौदह	इफ़लास - ग़रीबी
दिलरवा - मनोहर	आशुफ़ता - घबराया हुआ
अन्दाज़ - ढंग, धड़ा	कम अज़ कम - कम से कम
वर भला - बढ़िया, श्रेष्ठ	वार - चोट, तकलीफ़, भार
"मेहर.....सूँ तो" - (फ़ारसी)	दस्तगीर - सहारा, हाथ पकड़नेवाला
तेरी आँखों से नर्ग़िस लजाती है;	ईशवर - ईश्वर
तेरी लट्ठों ने ज़टामासी को परेशान	चार में - लोगों में
कर रखा है ।	शौहरो-ज़न - पति-पत्नी

क्रहमीदा - चतुर, बुद्धिमर्ती

गश-खाना - बेहोश होना

तुफ़ - धिक्कार

अज़राहे-करम - बराये मेहरबानी; दया
करके

किरिया-करम - क्रिया-कर्म, श्राद्ध

रोगन - तेल

शमअ - दीपक

काफ़ूर - कपूर

“हाथ.....लगी” - मौत भी दुख
से हाथ मलने लगी, मौत को भी
बहुत दुख हुआ ।

सोला-फ़ाम - अग्नि के रंगवाली

तमाम - ख़तम, अन्त

लड़कियों से



[कवि पश्चिम की सभ्यता से
दूर रहकर अपनी संस्कृति और देश
की रक्षा करने के वास्ते लड़कियों से
अपील करता है ।]

रविश - रास्ता

ख़ाम - बुरा

दाग़ - कलंक, ख़राबी

नुमाइश - प्रदर्शनी, दिखावा

बूए-वफ़ा - गन्ध-गुण

तफ़रीह - मनोरंजन, मज़ाक

मरकज़ - केन्द्र, स्थान

मासूम - अबोध

मक़तब - पाठशाला

जानू - गोद, जाँघ

गो - यद्यपि

लय - तर्ज़, धुन

जईफ़ - बूढ़े

तई - लिए (अपने लिए)

प्यासी नदी



[नदियों में पैसे फेंकने से पुण्य पर से रेल के गुज़रते समय भावुक
मिलता है, यह भाव हिन्दुओं हिन्दू यात्री पानी में पैसे फेंकते हैं ।]
में है । इसलिये आजकल प्रायः पुल

पास - झ्याल
 खून की नदी - (गरीबों से मतलब है)
 खुश्क - सूखना
 कार-आमद - उपयोगी काम
 आब - पानी (धारा)
 कारे-ना-सवाब - गलत काम, बुरा काम
 आब-आब होना - (मुहा०) पानी-पानी
 होना, शरमाना, (गंगा का पानी
 पानी होना बड़ा सुन्दर अर्थ
 देता है।)

बाजुए-ज़र - अमीर, धनवान
 नाखुदाई - खेना
 क़श्ती - नाव
 ना-वज़त - असमय
 पानी सर से ऊँचा होना - (मुहा०)
 डूब जाना, खतम हो जाना,

सारा हिन्दुस्तान हमारा



हर आन - हर क्षण, हमेशा
 गुलज़ार - बाग़
 कुहसार - पहाड़
 कूचा - गली
 खार - काँटा
 कुव्वत - ताक़त
 रौनक़ - शोभा, छटा
 धनुक - इन्द्र-धनुष
 शफ़क़ - उषा, संध्याराग
 ज़र्रा - अणु
 दहक़ान - देहाती, किसान
 मैख़ाना - शराबख़ाना

बादा - शराब
 सागर - प्याला
 पैमाना - मापने का साधन, peg
 वीराना - जंगल, उजाड़
 महफ़िल - नाच-गान का जमाव, सभा
 काशाना - झोंपड़ा
 दर - दरवाज़ा
 ऐवान - महल
 पामाल - खराब, गिरी हुई, नष्ट
 हर सू - हर जगह
 पस्ती - अवनति, गिरावट
 फ़ाका - उपवास

शब - रात
ईमान - विश्वास
बार - दरवाज़ा

खाह - चाहे
खुदी - स्वार्थ, व्यक्तिस्व, अहंकार

राम



सलोना - सुन्दर
मुतलक़ - बिलकुल, निरा
कुन्दन - तपाया हुआ साफ़ सोना
ख़ालिस - विशुद्ध
अबरू - भौंह
कमान - धनुष
सर ता पा - सर से पाँव तक
गह्वारा - पालना
रुह - आत्मा
रसिया - रसिक, आनन्दमय
उल्फ़त - प्रेम
कौल - वचन, बात, वादा
इलहाम - दैवी वाणी
परचम - झंडा, पताका
बाँका - सुन्दर

बालम - प्रियतम, प्रभु
कह दूँगा तो झगड़ा होगा - राम ईश्वर
के अवतार थे, यह कहा जाय तो
कुछ लोग नहीं मानेंगे। इस पर
झगड़ेंगे। इसलिये न कहना ही
ठीक है।

रुहे-शुजाअत - बहादुरी की आत्मा
जानेशुजाअत - बहादुरी की जान
हूर - परी, अप्सरा
नूर - शोभा, प्रकाश
अदल - न्याय
पैकर - प्रतिरूप, embodiment,
मुख, चेहरा

दोश - कंथा
अनवार - चमकीली

गाँधी



साधो - साधू, भाई, (संबोधन)
बंसी का मतवारा - कृष्ण
बातिन - अन्तःकरण, आत्मा

ज़ाहिर - प्रकट, देखने में
बेचारा - ग़रीब, निर्बल

प्यासे सामंत की लड़ाई



[अरब में यज़ीद उमैया खानदान का दूसरा खलीफ़ा था। हज़रत इमाम हुसैन पैगम्बर साहब के नवासे—लड़की के लड़के—थे। यज़ीद की हुकूमत को सबने मान लिया, मगर हज़रत इमाम हुसैन ने उसकी हुकूमत नहीं मानी — बर्यत से इंकार कर दिया। कूफ़ा सूबे के रहनेवाले भी यज़ीद को नहीं मानते थे। यज़ीद उन लोगों पर तरह तरह के अत्याचार कर रहा था। तंग आकर कूफ़ावालों ने हज़रत हुसैन को अपनी मदद के लिए बुलाया। ये अपने ७२ साथियों के साथ मदीने से कूफ़ा को रवाना हुए।

इमाम हुसैन बड़े धर्मनिष्ठ और बहादुर थे। ये तलवार लेते तो फिर मैदान में कुहसम मच जाता। अगर हज़रत इमाम हुसैन कूफ़ा पहुँच जाते तो यज़ीद की हुकूमत टिकती या नहीं, इसमें शक था। इसलिये उसने अपने सिपाहियों को हज़रत हुसैन को रोकने का हुक्म दिया।

फ़रात नदी का किनारा था। इमाम हुसैन ने वहाँ पड़ाव डाला तो यज़ीद के सिपहसालार ने पानी लेने से रोक दिया। वहीं कर्बला के मैदान में लड़ाई शुरू हुई। अन्त समय में कूफ़ा वालों ने इनके साथ दगा की—मदद नहीं दी। हज़रत हुसैन उसी कर्बला के मैदान में मारे गये। उस वक्त हज़रत हुसैन के घर के लोग भी उनके साथ थे।

इस पद्य में हज़रत अब्बास की लड़ाई का वर्णन है, जो फ़रात से पानी लाने गये थे। पानी पर रोक थी। अब्बास, इमाम हुसैन के चचा और हज़रत अली के भाई थे। 'सकीना' हज़रत अली की लड़की यानी अब्बास की भतीजी थी।

इसमें शायर ने बड़ी खूबी से 'पानी' से बननेवाले बहुत से मुहावरों का प्रयोग किया है। शायरी में कर्णरस की धारा बह रही है।]

तपते - गरम होते, धूप में तपते
 मुँह फोड़के - बोलकर, मुँह खोलकर
 चौकियाँ - पहरा

पत्थर का कलेजा - निर्भीक हृदय
 कलेजा पानी होना - (मुहा०) डरजाना
 डोंड - डेंटे, छड़ें

फल - बर्छी का लोहेवाला हिस्सा,
 पानी - तेज़ी, चमक

लहू पानी होके बहना - पानी की
 तरह खून बहना

हाथ चलना - वार करना

मँजी - अभ्यस्त, रवौ

पानी न मँगना - (मुहा०) मर जाना
 बाग - घोड़े की लगाम

पानी सर से ऊँचा होना - (मुहा०)

मुश्किल होना, खतरा आना
 तेवर में बल पड़ना - ललाट टेढ़ा होना

(मुहा०) गुस्सा आना

काठी - म्यान

नागन - (तलवार से अर्थ है)

तलवार का पानी - तलवार की धार,
 तेज़ी

छेड़ होना - प्रारंभ होना

जी छूटना - (मुहा०) साहस छूटना

कलेजा पानी होना - (मुहा०) डर जाना

पाँव उखड़ना - (मुहा०) भागना,
 पीछे इटना

बेड़ा दुबोना-काम ख़तम करना, मारना
 आन की आन में - क्षण भर में, तुरन्त
 छाती से धुआँ उठना - (मुहा०)

आह निकलना, दुखी होना

भँवर - पानी का चक्कर

गोल - समूह, झुण्ड

डोलची - छोटी बाल्टी

खेत - क्षेत्र, रणक्षेत्र

थड़जिए - तंग-दिल, कायर

लहू पानी एक हुआ - (मुहा०) लहू
 पानी की तरह बह गया

लव - ओंठ

नील ढला - आँखों की पुतली घूम
 गयी (मरने के समय)

‘आरजू कितना पानी’ - (भाव)

खोज करने—सोचने पर इस कविता
 का भाव मालूम पड़ेगा । यह
 कविता उथली (भाव-शून्य) है ।

फिर भी इसमें कितना पानी (भाव)
 है—इसका तभी (खोजने पर) पता
 लगेगा ।

झूठी प्रीत

फ़ानी - क्षणभंगुर

अपनी राह ही जाती है ।

मौजें - लहरें, (भाव) यहाँ लोग मीत - मित्र

अभिलाषाएँ करते हैं, मगर दुनियाँ

दूसरी बहार

बादल



नूर आना - प्रकाश आना, खुश होना

गुंघा - कर्ली

सुरूर - आनंद, नशा

मनका ढलना - मरने के समय गर्दन
टेढ़ी होना

दम-क्रदम - अस्तित्व

रैहाँ - एक तरह की सुगन्धित घास

लहर-बहर - शोभा, शान

समों - शोभा, दृश्य

सैराव - सींचना, जल से भरा

कौंधना - चमकना, लपकना

दस्त - जंगल, वन, मैदान, खेत

सब्ज़ा - हरियाली

शादाब - हरा-भरा

रौंदना - पैरों से दबाना

“सैराव...शहर है” - (भाव) खेत

सबा - पूरब की हवा

और जंगल अगर सिंच जायें तो

नसीम - शीतल वायु

शहर भी हरे भरे हों । क्योंकि

शमीम - सुगंधि

खेतों और जंगलों के बल पर ही

पंगें बढ़ाना - झूले पर बैठकर या सड़े

तो शहर चमकते हैं ।

होकर झूले में गति देना ।

अम्र - बादल

आम के पपीहे - आम की गुठली से

साज़ोनवा - ठाट-बाट, संगीत व

बच्चे एक तरह की सीटी
(Whistle) बनाते हैं ।

सजावट

सावन के गीत - बरसात के मौसम मल्हार - एक राग (मलार)
 में गाये जानेवाले गीत, कजली टिकोर - हलकी चोट, थपकी, ताल
 बगैरह ।

गर्मी



ज़ार - स्थान	सीमाब - पारा (पसीने का उपमान)
सू - तरफ़	आफ़ताब - सूरज
तहे-अफ़लाक - आसमान के नीचे	शमअ - दीपक, बर्ती (मोमबत्ती)
खिलकत - सृष्टि, संसार	सूरत - तरह
जा - जगह	

चौपदे



मगरूर - घमंडी	बे-कार - बिना काम के लोग
खुलूस - खलूस, सच्चाई, सरलता	अलम - हुकूमत, झंडा
ज़ाहिद - ईश्वर का सेवक	सहरा - जंगल
दीन - धर्म	चटियल - सूना, बिता पेड़-पौधों का
ज़द - चोट, लक्ष्य	अदबार - वेहाली, विपदा
जी है तो जहान - प्राण बचे तो दुनिया	खाक जिये - जीना व्यर्थ है
है, जान बचाना धर्म बचाने से	समाअत - सुनवाई
बड़ा काम है ।	दानाई - अक्लमंदी
तबीब - हकीम, वैद्य	अक़साना - कहानी, गप्प
आज़ार - बीमारी, रोग, मुसीबत	दाना - अक्लमंद
मशग़ला - दिल-बहलाव	‘धोने की’.....‘बाक़ी’ - ऐ ! सुधारक अभी सुधारने की जगहें बाक़ी हैं ।

नलक - तक

जअफ़ - कमज़ोरी

पीरी - बुढ़ापा

मुहाल - असंभव, कठिन

ढलना मालूम - हटना नहीं मालूम

चाइज़ - उपदेशक

अजल - मौत

अटल - जो नहीं हटे, नहीं बदले

चन्द शेर



मशरफ़ा - पूरबी देश के लोग, भारतीय

अहदे-वफ़ा - सामयिक कर्तव्य, धर्म

मोम की पुतली - गोरी लड़कियाँ,

युरोपिय मिस

चमने-हिन्द की परियाँ - हिन्दुस्तान

की देवियाँ

मगरिब - पश्चिम, युरोप

तरंग आना - ज़ोर आना

नुक्ता - पते की बात, रहस्य

रविश-दीने-खुदा - धर्म और ईश्वर का

रास्ता

हज़रते-आदम - धार्मिक विश्वास है

कि आदम (मनु) से आदमी पैदा

हुआ। मगर डारविन ने साबित

किया कि मनुष्य बन्दरों का

विकसित रूप है।

हिकमत - बुद्धिमत्ता

आनर (Honour) - इज़्जत, प्रतिष्ठा

ख़ुबती - पागल

ज़बान के पहलू पर - भाषा के मामले

में, भाषा की तरफ़ (भाषा के

झगड़े में)

तोश - राम राम

क्रदमे-शौक - उल्लास से क्रदम बढ़ाना

बे-पास - बिना उत्तीर्णता के

मौकूफ़ - बन्द, रुका हुआ

सुरख़्त - मेहरबानी, रिवायत

रुत - ढंग

फ़रिश्ते - देवता के दूत (यमदूत)

तअस्सुब - पक्षपात (कट्टरपन)

(यह शेर ज़्यंग में कहा गया है)

“हुकूमत...बन्दे” - (भाव) यह

हिन्दुस्तानी फ़्याल है कि हमारा

बन्धा—जो भगवान करता है, वही

होता है। इसी वजह हमारी राज-

नीतिक अवनति हुई है। शायर उसी

फ़्याल की मख़ौल उड़ा रहा है।

किया की - करती रही (उदा:- देखा
शोरिश - शोर-गुल किए)

सदा - आवाज़

बॉल - एक अंग्रेज़ी नाच

बुत - मूर्ति, सुन्दरी (यहां भावना के
अर्थ में)

अलीगढ़ का भाव - (भाव) सर सैय्यद
अहमद ने मुसलमानों को अंग्रेज़ी
की तरफ़ रजू किया। अलीगढ़
में कालेज खोला, फिर वह मुस्लिम
युनिवर्सिटी बनी। मुसलमान
अंग्रेज़ी पढ़ने और नौकरियाँ पाने
लगे। शायर (अकबर) अंग्रेज़ी
शिक्षा के दुश्मन थे। उन्हें सर
सैय्यद का यह काम पसन्द नहीं
आया। उसी के प्रति यह व्यंग
किया गया है।

गुदाम - Godown, माल भरने
की जगह (भाव—व्यापार हो,
पैसा मिले तो फिर मसजिद अर्थात्
धर्म की ज़रूरत ही क्या है?)

आगाह - ज्ञानवान, सावधान

बा-हुनर - हुनरमंद, कुशल, चतुर

खुफ़िया पुलिस - C. I. D.

इंजन - (साइंस से मतलब है)

भाप देना - बीमारी दूर करने के वास्ते
भाप देते हैं। (व्यंग्य है)

फ़ालतू - ज़रूरत से इयादा

मतीअ - गुलाम, परतंत्र

खैर-खाह - भलाई चाहनेवाला

हलाल - उचित, पुण्य

हराम - अनुचित, पाप

चट करना - खाना

पीरू-हरबंस - साधारण हिन्दू व
मुसलमानों के नाम। (भाव)
मुसलमान और हिन्दू जाति से है।

बहर-हालत - फ़िलहाल

बिला - बिना

थिरकना - नाचना

खिताब - पदवी

ज़ौक़ - खुशी, आनन्द

सर - सिर और Sir (श्लेष)

बाल - केश और नाच (श्लेष)

चिनौटी - चूना रखने की छोटी डिब्बी
(नास लेनेवाले की तरह तमाखू
खानेवाले भी चूना के वास्ते चिनौटी
रखते हैं। यहाँ कवि खिचड़ी
सभ्यता के प्रति व्यंग्य करता है।)

एतदाल - परहेज, मध्यमार्ग, शांति

जोड़ - सम्बन्ध, मिलान, समन्वय

‘पयोनियर’ - लखनऊ से निकलनेवाला

गोरा अंग्रेज़ी अस्त्रबार जो सरकारी

पक्ष का समर्थन करता है ।

राहे-मगरिब - पश्चिम (युरोप) की राह,

पश्चिमी सभ्यता

वाँ - वहाँ (युरोप)

हरचन्द - यद्यपि, अगरचे

पॉट - (Pot)

हिन्दी - भारतीय

रग़ - नस

‘शौक्ले’.....‘सर्विस’ - I. C. S. कि

परीक्षा रूपी लैला, (प्रेमिका)

मजनून - लैला का प्रेमी, आशिक

‘लंगोटी’...‘पतलून को’ - दौड़ते-दौड़ते

पतलून फटकर लंगोटी बनकर रह

गयी है । मतलब—I. C. S. के

पीछे आजकल के नौजवान दौलत

बर्बाद कर ग़रीब बन जाते हैं ।

रविश - रास्ता

हवाए दहर - ज़माने की हवा

मौज़ - लहर, तरंग (तरंगें आपस

में टकराती हैं और फिर गिरकर

एक हो जाती हैं । अकबर कवि

कहते हैं, हिन्दू-मुसलमान आपस

में लड़ो भी तो फिर मिल जाओ ।)

नामा - पत्र, खत

पैग़ाम - सन्देश, खबर

रख के खाना - (भाव) जो फल कि

चार दिन ठहर सकें; इतने पके न

हों कि जल्द खराब हो जायें ।

पुख़्ता - पका, मज़बूत

ख़ाम - कच्चा

तामील - आज्ञा का पालन

बन्दा तेरा



[इस शायरी में परमात्मा और जीव का रूपक है । आशिक माशूक का भाव भी लिया जा सकता है । कबीरदास के ऐसे बहुत-से पद्य हैं ।]

काबा - मक्का, तीर्थस्थान

जलवा - शोभा, रूप, सौंदर्य

जीना - जीवन

हस्ती - अस्तित्व Existense.

“मरना तेरा.....परदा तेरा” - तुम्हारा अदा ने मेरा दिल चुराया है)
 पर्दा करना अर्थात् दर्शन न होना मंशा - इच्छा (जो तुम्हारी इच्छा हो
 ही हमारे लिये मौत है। वही मेरा भाग्य होगा।)
 दीद - दर्शन बन्दगी - सेवा (बन्दगी ही तेरी खिद-
 शगल - काम-धंदा मत होगी)
 सौदा - प्रेम, पागलपन, धुन बन्दा - दास, सेवक, बन्दगी करने-
 गमज्जा - अदा, हाव-भाव (तुम्हारी वाला

तपिश



तपिश - गरमी पाए-निगह - नज़रों के पाँव (नज़ा-
 तमाज़त - गरमी, तपिश कत दिखाने के वास्ते)
 बरंगे-शरर - चिनगारी के रंग का आबले - फफोले, छाले,
 रेगे-बयाबाँ - जंगल का बालू गुज़र - गति, जाना
 मश्क - पानी ढोने की खाल, मशक बलन्दी - ऊँचाई

घटा



ऊदी - आसमानी रंग नै - बाँसुरी, सुर
 रंग पर आना - (मु०) निखर जाना, तानें लड़ाना - कोयल और पपीहे वसंत
 जोश पर आना ऋतु में एक दूसरे से बाज़ी लगाकर
 पर तौलना - संभालना, चिड़िया का बोलते हैं। होड़ लगाकर गाना।
 कहीं बैठने के पहले परो को बैलेंस दोश - कंधा
 करके उतरना। हरसू - हर तरफ़

जुलमत - अंधेरा

आशकार - प्रत्यक्ष

दामने कोह - पहाड़ की गोद

जूए-शीर - दूध की नदी

कि - और

गिरयाँ - रोता हुआ

खन्दाजन - हँसनेवाला

खै-कुहन - पुराना आसमान, बूढ़ा
आसमान

चोट



तार - दिल का तार, हृत्तंत्री

जमजमा - हल्का राग, संगीत

(जब दिल पर कोई चोट लगती है

तब उसका दर्द मीठा—संगीत की

तरह शीतल, पर चुभनेवाला होता

है।)

हवादिस - हादिस का बहु०, घटनाएँ

बिसात - हस्ती, ताक़त

चुटकी लेना - मज़ाक करना

रगो-पै - नस-नस, अंग-प्रत्यंग

नफ़स - प्राण

दर्द-मंदांने - दर्दवाले

सोज़ - जलन, दुख

साज़गार - शुभ, अच्छा

मस्दर - मूलस्थान, उद्गम

तबीई - प्राकृतिक, स्वाभाविक

गुदाज़ - द्रवित करनेवाला, बढ़ानेवाला

तबए-मौजू - ठीक तबियत

आह - रोना, क़रुणा

वाह - हँसना, खुशी

शगले-अहले-दिल - दिलवालों—सहृदयों

के वास्ते एक दिल-बहलाव की

चीज़,

तौहीद - एकता

जुगनू



काशाना - झोंपड़ी, घर

अंजुमन - सभा, समूह

सफ़ीर - राजदूत

गुमनाम - छिपा, अप्रसिद्ध

तुकमा - बटन, छुंडी

क्रबा - चपकन, चोरा

पैरहन - पोशाक

पोशीदा - छिपा हुआ

खिलवत - एकांत

जुल्मत - अंधेरा

गहन - ग्रहण (चन्द्रमा का)

तालिब - चाहनेवाला

तरापा - डूबा हुआ, शराबोर

साहिर के कुछ शेर



बहरे-हस्ती - दुनियाँ रुपी समुद्र

अज़ल - शुरु, आदि

बादबाँ - पाल, Sail

लंगर - Anchor; नाव बाँधने के

वास्ते लोहे के भारी काँटे

कैफ़ - नशीला पदार्थ

यक्रताई - एकता, अनोखापन

तमाशाई - तमाशा देखनेवाला

जलवा-आरा - शोभा बढ़ानेवाला

जलवा-गर - ,, ,,

रज़ा - रुखसत, छुट्टी

खम - नीचा, झुका हुआ

तसलीम - सलाम, नमस्कार

क्रतरा - बृंद

वासिल - पहुँचा हुआ, संयोगी

(जब जीव से 'अहं' का भाव मिट

जाता है तब वह ब्रह्म में मिल

जाता है।)

कीना - दुश्मनी

कल्ब - दिल, हृदय

आरिफ़ - ज्ञानी, पहचाननेवाला

इबरत - अनुभव

अनलहज़ - 'अहं ब्रह्म'

लब - ओठ

(मंसूर-सूफ़ी लाधु—जो अपने को ब्रह्म कहता था, क्या वह यों ही कहता था ? नहीं, उसके अन्दर जो ब्रह्म छिपा था, उसी ने उसको ऐसा कहने को मज़बूर किया।)

नज़रगाह - रंगशाला, Stage

आइनाए-दिल - दिल का आइना,

हैरती - चकित

दामे-अजल - मौत का फंदा

“दूर...दिल से”—Out of sight,
out of mind.

कौलो-फ़ेल - वचन व कर्म

इकबाल के चन्द शेर



इन्तहा - अंत	सत - सत्य
पैरहन - झंडा	तत - तत्त्व
गस्साल - मुर्दे को नहानेवाला (दफ़न	एक ही थैली के चंटे-बटे - (मु०)
नुज़्ज़ार - बर्दई [करने के पहले)	एक ही रूप या गुणवाले
रन्दा - Carpenter's plane	बिस्वादारी - ज़मींदारी
लकड़ी बराबर व चिकनी करनेवाला	
यंत्र ।	

जौहर दिखाओ



लगाव - सम्बन्ध	इज़्जत व विश्वास प्राप्त करना
बातिल - झूठ	दफ़्तरी - आफ़ीस सम्बन्धी
महो-मिहर - चांद-सूरज	इक़तदार - (शासन) ताक़त
अक़लीम - सलतनत, राज्य	चल-चलाव - अन्त समय
किसी का दिल हाथ में लेना - (मुहा०)	

हसरत के शेर



ये-खुदी - अपने को भूँके रहना, बेहोशी	समा जाना - खुब जाना, घर कर जाना,
बेताबियाँ - परेशानी, व्याकुलता	शबे-फ़ुर्क़त - वियोग की रात
शक़ेबा - शान्त	मुद्द्आ - उद्देश, अभिप्राय
गोया - मानों	

फ़ानी साहब के अशआर



अशआर - शेर का बहुवचन
बशर - मनुष्य
ज़ीस्त - ज़िन्दगी

रुदाद - समाचार, विवरण
ग़ैब - परोक्ष, परलोक
हमदम - साथी

महात्मा गांधी



तसर्हफ़ - अधिकार
मुसफ़्फ़र - पाला हुआ, वशीभूत
तहलील - पचाना, गलाना
फ़ितरी - प्राकृतिक
लताफ़त - कोमलता, उत्तमता

सीमगूं - चाँदी के रंग का (रुपया)
फ़सूँ - जादू
डेढ़ अच्छर - छोटा-सा पर महत्व का
कामरां - सफल, विजयी
नातवां - कमज़ोर

अजीज़ के चुने शेर



अयॉँ - ज़ाहिर
क्रफ़स - पिंजड़ा
आशियाना - घोंसला

क्रल्ल - पड़ले
जा-बजा - जगह-जगह

बेबसी



गुंच: - गुंचा, कली
सरबस्ता - छिपा हुआ
याराने-शबाब - जवानी के दोस्त

कँवल - दीपक (शीशे का गिलास
जिसमें शमा जलती है)
रहबर - पथ-प्रदर्शक

हरमो-दैर - मसजिद व मंदिर
क्कालिब - शरीर, ढाँचा
फितरत - समझदारी, विवेक

खबर - ज्ञान, जानकारी
नज़र - पहचान
बोटी - मांस

गोशए तनहाई



गोशा - कोना, कुंज
तनहाई - एकांत
राहत - सुख, आराम
तमन्नाई - चाहनेवाले
तसर्की - शांति
जुज़ - सिवा, अलावा
आइन-ए-बातिन - दिल का आइना
तारीक - अंधेरी

मरगूब - रोचक, सुन्दर
तरीं - बहुत
अशज़ार - पेड़ का बहुवचन
कि - या
मुसव्विर - चित्रकार
मज़मून - विषय
मताल्लिब - मतलब का बहुवचन

बुलबुला



फ़रओन - मिश्र देश के शाही ख़ान-
दान का एक प्रतापी बादशाह जो
ईस्वी सन् से पहले हुआ था ।

आन-बान } - शान-शौक़त
आब-ताब }
गुहर - मोती
ज़ेबे-सर - सिर पर शोभित

कामयाबी का राज



अब्रे-नेसॉ - स्वाति नक्षत्र
दुरे शहवार - मोती, बादशाहों के
लायक़ मोती, (विश्वास है कि

स्वाति नक्षत्र की बूंद जब समुद्र
की सीपियों के मुख में पड़ती है
तब मोती की पैदाइश होती है)

तफ़्ता - (ज़मीन का) छोटा टुकड़ा	दहक़ान - देहाती, गंवार
पाराए-आहन - लोहे का टुकड़ा	काचार - तुर्क के पहलवी बादशाहों
महकूम - अधीन, गुलाम	के पहले के खांदान का एक बाद-
ख़ुद-मुफ़्तार - आज़ाद, अपना मालिक	शाह
आप	दार - सूली, फौसी

अमजद के चौपदे



कलाम - कथन, वचन, कविता	ज़ंजीर-दरे-अंश - आकाश की ज़ंजीर
ज़ाया - व्यर्थ, नष्ट, बेकार	(प्रार्थना का भाव)
सर-फ़रोशी - बलिदान	सिजदा - प्रार्थना, रगड़, घिसना
भाता हूँ पहनके - (क़फ़न से अर्थ है)	जब्हसाई - माथा टेकना
रब्बे-ग़फ़ूर - करुणा-सागर, भगवान	ताअत - इबादत
मेहरे जहाँ - करुणा सागर, भगवान	ख़ुदनुमाई - अहं, स्वार्थ
ताब - चमक, शक्ति	हत्तुल इमकान - दम भर, ताकत भर
जेग्लिन - हवाई-जहाज़ का एक किस्म	शिकस्ता - टूटा हुआ

स्त्राके वतन



ख़ुरशीद - सूरज	निहाँ - छिपा हुआ
पुरज़िया - चमकनेवाला	ख़िलअत - सम्मान की पोशाक

रहे रहे न रहे



मुइत - मुठ्ठी भर	जमअ-ख़चै-ज़बानी - जबानी जमा
जनून - पागलपन	ख़चै, महज़ बातें

भूल गये



इब्तदा - शुरुआत

निफ़ाक़ - दुश्मनी, शत्रुता

गात्र - अग्नि-पूजक (हिन्दू)

लरजना - काँपना

खुदी - स्वार्थ, अहंभाव

असीरी - कैद

चकबस्त के ख़यालात



दर्द-अंगेज - दर्द बढ़ानेवाला

नाला - आह, पुकार

शैदा - आशिक, प्रेमी

अहबाब - प्रेमी

सौदा - धुन, सनक

बार - बोझ

सरयाद - शिकारी, घातक

ज़िन्दौ - कैदख़ाना

बियाबाँ - बेपानी का जंगल

कविश - दुश्मनी

देखते



हद - सीमा

मंज़र - दृश्य

माहो-अफ़्तर - चन्द्रमा-सूर्य

फ़ितरत - प्रकृति

चश्म - आँख

तड़पती बिजलियाँ - आँखों के अन्दर

फिरनेवाली, नज़र

दम-ब-ख़ुद - सन्न, स्तब्ध, मूक

शीशे से बाहर - असली रूप में

क़सम



ख़िरमन - खलिहान

कमाँ - धनुष

तनतना - प्रखरता, तेज़ी

ख़ुद्दार - आत्माभिमानी

हंगाम - समय, ऋतु

रंग उड़ाना - (मुहा०) हँसी करना,

तुच्छ समझना

जुम्बिश - हिलना, कंपन

खरीदार न बन

चुटकियाँ - परिहास, मज़ाक

बेखार - बिना कंटे का, सीधा-सादा

गुलचीन - फूल चुननेवाला

जिन्स - वस्तु, सामान

गरीबों की ईद



ईद - एक आनन्द का मुसलमानी

फर्ते-मुहन - दुख की अधिकता

त्योहार

तही - खाली

अहले-दवल - दौलत का बहु०

वलवला - उमंग, जोश

(अमीरों)

सबात - मज़बूती

रोज़े-सईद - शुभ-दिन

हुजूम - ढेर

चर्ख - भाग्य, आकाश

हम-आगोश होना - लिपट जाना

नया पुजारी



यासमन - चमेली, Jasmin

कनीज़ - दासी

क़शक़ा - तिलक

दुख़तर - लड़की, बेटी,

गुलामे-गुलामाने - गुलामों का गुलाम

खतीब - खुतबा पढ़नेवाला, चेतावनी

ज़मज़म - क़ाबे के पास का कुआँ

देनेवाला

जिसे मुसलमान बहुत पवित्र

ज़रकार - सुनहला

मानते हैं।

मिम्बर - चबूतरा, जिस पर से उपदेश

परस्तिश - पूजा

दिया जाता है, Pulpit

परस्तार - पुजारी

कलीसा - गिरजा घर

गेसू - बाल (यहाँ हिन्दू ललना से मतलब है)

तरक़ी-दहे-बड़मे-ईजाद - नयी बातों

को तरक़ी देनेवाली जमात

सीम-तन - चाँदी की तरह बदन

अक़ीदा - धर्म, विश्वास

(गोरी स्त्री)

जुन्नार - जनेऊ

शोलए अंजुमन - सभा की आग

तसबीह - जपमाला, सुमरनी

राज दुलारे सो जा



परवान चढ़ना - तरक्की पाना

बाज़ - विशिष्टता

अज़मत - बढ़प्पन, महत्ता

गोरी चिट्ठी - बहुत गोरी

हशमत - सम्पत्ति

सदक्का - निछावर

बझत - भाग्य, किस्मत

तीसरी बहार

अकबर के जज़्बात



साज़ - बाजा, संगीत, वाद्य

उनके अनुयायी बहुत भागे बढ़

गत - चाल, राग

गये हैं)

फ़लक - आसमान

कारे-नुमायाँ - स्पष्ट कार्य

दौर - कालचक्र

महरूम - अभागे, बदनसीब

बातिन - भीतरी

सर हुए - सरपर सवार हुए

खुदा का नाम लेना - सच्ची बातें

बस्ता - बंधा हुआ

कहना, (देश-भक्ति वगैरह की
बातें करना)

पायमाल - कुचला हुआ, दुर्दशाग्रस्त

डॉसन - एक आदमी जिसने नये

रक्कीब - प्रतिद्वन्दी, दुश्मन

किस्म का बूट बनाया था ।

रपट - रिपोर्ट

जूता चलना - (मु०) झगड़ा या

मियाणा - डोली, पालकी, (शेखजी

मार पीट होना

तो पुराने झ्याल के ही रहे, मगर

मजमूँ - निबन्ध, विचार

नागहूँ - एकाएक
 खिरदमन्द - बुद्धिमान
 बाहम - आपस में
 तवक्का - आशा, उम्मीद
 पिंडली - टांगों के पीछे की माँस-पेशी
 (सफ़ा १२२)

तारी - छाया
 शै - चीज़
 तहमद - लुंगी
 छापा - अस्तरवार, Publicity
 तक्रवियत - ताक़त
 बिसात - ताक़त, सामर्थ्य
 पेशे-कमीशन - कमीशन के सामने
 ज़भ - उत्सव, जलसा
 (सफ़ा १२३)

क्रहत - अकाल
 फ़ाक्का - उपवास
 पड़ाका - आतिशबाज़ी
 उरूज - उन्नति
 मअराज - उच्चतम स्थान
 ताजिर - व्यापारी

तीन-पाँच - घुमाव-फिराव, छल
 शुअला - शोला, तफ़रका
 हॉड़ी - हंडी, खाना पकाने का बर्तन
 [मौ. अकबर हलाहाबादी बड़े ऊँचे दर्जे के व्यंग और ध्वनि के पारखी थे। आपकी शायरी का एक २ लफ़्ज़, ताने से, चोट से भरा है। शब्द कुछ हैं और उनका निशाना कुछ है। नयी रेशनी, नये फैशन, सरकार, नयी तालीम वगैरह को कहीं आपने छोड़ा नहीं है। अलीगढ़ यूनिवर्सिटी से भी आप चिढ़े रहते थे। आप धर्मिष्ठ व्यक्ति थे।

इसलिए आपकी शायरी पढ़ते वक्त पाठक और शिक्षक उनके इशारों की तरफ़ ज़्यादा ध्यान देंगे, तभी उसका मज़ा मिलेगा, अन्यथा नहीं।]

एक वाक़या



[यह वाक़या इस्लाम के दूसरे खलीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़ से ताल्लुक़ रखता है। ईरान फ़तह करने के

बाद अरबवालों को बहुत माल हाथ लगा था। अपने फ़ायदे के मुताबिक़ सारी चीज़ों का बटवारा

बराबर २ कर दिया गया था ।
 हज़रत उमर खुद बड़े क्रुद्धावर थे ।
 उनके हिस्से में जो कपड़ा मिला
 था—उससे उनका चोगा नहीं
 बन सकता था । और खलीफ़ा
 के पास कपड़े न थे । इसलिए
 उनके सआदतमंद लड़के ने अपने
 हिस्से का कपड़ा भी उन्हें दे
 दिया और तब उनका लबादा
 बना । यह ख़बर लोगों को न
 थी । दूसरे दिन जब किसी ने
 उनका चोगा देखा तो उसे शक
 हुआ कि खलीफ़ा ने बेईमानी से
 अपने वास्ते ज़्यादा कपड़ा ले लिया
 है । झूठ उठकर उसने इसका
 विरोध किया और सफ़ाई मांगी ।
 मामूली से मामूली आदमी को
 भी अरब में उन दिनों खलीफ़ा
 के बराबर खड़े होने, खाने-पहनने
 और बोलने का हक़ था । खलीफ़ा
 को जवाब देना पड़ा और तभी
 वह जवान संतुष्ट हुआ । नहीं तो
 वह खलीफ़ा का हुक्म मानने को
 तैयार या मज़बूर नहीं किया जा

सकता था । क्या वह राम-राज
 से कम था ?]

अदल - न्याय
 फ़ितूर - धोखा,
 माले-ग़नीमत - लूट का धन
 तक्रसीम - बाँट
 रिदा - चादर
 मुफ़्तसर - छोटा, संक्षेप
 दराज़ - बड़ा
 मस्तूर - छिपना, ढकना
 ख़िलाफ़त - खलीफ़ा का पद
 मामूर - मुक़र्रर किया हुआ, आज्ञाकारी
 मसावात - बराबरी
 मख़मूर - मतवाला, मग्न
 फ़र्ज़न्द - लड़का, बेटा
 मुअज़्जम - बड़ा माना गया
 उबूर - जानकारी, पारदर्शिता
 जानिब - तरफ़
 रब्बे-ग़फ़ूर - बख़्शनेवाला, भगवान
 इब्ने-उमर - उमर का लड़का
 वालिदे-माजिद - बुर्जुग पिता
 तवए-ग़यूर - आश्माभिमान
 नुक्ताची - निन्दक, दोष निकालने
 वाला

इंसाफ



- [हज़रत मुहम्मद साहब ने अरब नील-फ़ाम - नीले रंग का
 में जो खिलाफ़त शुरू की उसके मशगला - काम
 आदर्श बहुत ऊँचे थे। वे खुद जनावे-रसूले-खुदा - भगवान के दूत
 और उनके बाद खिलाफ़त की (हज़रत मुहम्मद)
 गद्दी पर बैठनेवाले खलीफ़ा लोगों वाँ - वहाँ
 ने जो ग़रीबी, इंसाफ़-पसंदगी, इज़ने-आम - आम मज़मा, सभा
 व ऊँचे दर्जे का चारित्र्य संसार के महरम - परिचित
 सामने रखा, वह अनुकरणीय है। हैदर - हज़रत अली का नाम
 इस शायरी में जिस वाक्या का पयाम - सन्देश, कथन
 ज़िक्र आया है, वह हज़रत इशाद हुआ - कहा, फ़रमाया
 मुहम्मद साहब के वक्त में गुज़रा सीगा - महक़मा, विभाग
 है। उनकी प्यारी बेटी सईदा— नबुवी - नबी से सम्बन्ध रखनेवाला
 बेगम फ़ातिमा—थीं। हज़रत (वह महक़मा जिसे खुद नबी—
 अली के साथ इनकी शादी हुई। मुहम्मद साहब—सम्हालते थे।)
 वह खुद झाड़ू बुहारू करतीं, पानी क़याम - ठौर, जगह, विश्राम-स्थान
 भरके लतीं, आटा पीसतीं, फ़ारिग - मुक्त
 रोटी पकातीं—दुनियां भर के हनोज़ - अभी तक
 काम करतीं। यह अरब के इहतिमाम - एहतमाम, देख-रेख
 खलीफ़ा और मुसलमानों के धर्म मुक़दम - पहला, प्रधान, मुख्य
 गुरु की प्यारी बेटी का हाल था।] ज़ुरअत - हिम्मत
 सय्यदए-पाक - हज़रत मुहम्मद साहब अहले-बैते-मुत्ताहिन - (लोग-घर-पाक)
 की लड़की फ़ातिमा बेगम के लिए पैगम्बर साहब के ख़ानदान के
 यह प्रयोग हुआ है। लोग।

दुखतरे-खैरुल-अनाम - हज़रत मुहम्मद टाइटिल थी, जिसका अर्थ था-लोगों
 साहब की बेटी । (खैरुल अनाम के वास्ते नेकी करनेवाला)
 हज़रत मुहम्मद साहब की एक

पहले नज़र पैदा कर



अयाँ - स्पष्ट, ज़ाहिर	क्रामिल - योग्य, अच्छा
निहां - छिपा, अस्पष्ट	फ़नाज़ात - तपस्या वगैरह
इम्तियाज़ - पहचान, तमीज़ करना	सरफ़राज़ी - प्रतिष्ठा, गौरव
नाक़िस - अपूर्ण, बुरा, निकम्मा	खाकसार - दीन, तुच्छ, नम्र

सवेरा



नज़ूम - तारा	तयूर - चिड़ियों
सहर - सवेरा	पारसा - धर्मनिष्ठ, सदाचारी
छाँ - छाँह	नगमा-सरा हुए - गाने लगे
नज़ूल - गिरना, नीचे आना	शुआएँ - सूरज की किरणें
ज़िया - सूरज की रोशनी	जाफ़रानी - केसरिया रंग का
(उगते हुए सूरज की किरणें)	शफ़क - संध्या राग, लालिमा
सरगर्म - मशगूल	जौ-फिशॉँ - जगमगाने लगना
खाब - नींद	बहार - वसन्त
फ़िज़ाए-सहर - सुबह की शोभा	ख़िज़ाँँ - पतझड़
अनादिल - बुलबुल	

कुछ गहरे शेर



बक्रा - अमरता

ना-गवार - अप्रिय

नशशा - नशा

तहकीर - बेइज्जती

खुमार - नशा के उतरने के बाद की

तौक्रीर - आदर, सम्मान

हालत

जुज - टुकड़ा

इक्रार - स्वीकृति

दीदाए-बीना - सूझनेवाली आँखें, ज्ञान

सरापाए-दुआलम - दोनों लोकों में

चक्षु

भरपूर

खुर्शीद - सूरज

पिन्दार - अहंभाव

अहले-बसर - ज्ञानी

सामए-कोनो-मर्कौ - मकान (संसार,

आपे से - अपने से, अहंभाव

शरीर) के हर कोने को बनानेवाला

रहगुजर - रास्ता

सनअत - कारीगरी, कौशल

ना-हमवार - ऊँचा-नीचा

तामीर - भवन-निर्माण

अर्ज़ा - सस्ता

शजर - पेड़

सरबस्ता - छिपा हुआ

तुश्म - बीज

राज़दौ - भेद जाननेवाला

दाना - बीज, ज्ञानी

पैकर - चेहरा

कीमियागर - रसायन ज्ञात्री

खुदनुमा - घमंडी

रज़ा - आज्ञा, छुट्टी, इच्छा

मह्वे-खुदाराई - अपनी शान बढ़ाने

खम - झुका

में मस्त

खुश गवार - मनोहर

खुवाहिश



अंजुमन - सभा, सोसाइटी

सकूत - शांति

शोरिश - शोरोगुल, हलचल

कोह - पहाड़

उज्जलत - एकान्त	बूटे - पैधे, लता
सरोद - तारवाला एक बाजा	कुहसार - पहाड़
चश्मा - झरना, सरिता	मौज - लहर
सागर - प्याला जिसमें दुनिया दीखे	कबा - चोगा, गाउन
(ईरान में जमशेद बादशाह के	मुअज्जिन - अर्जो देनेवाला
पास एक ऐसा ही प्याला था ।)	हमनवा - साथ गानेवाला
गोया - मानों	रौज़न - छेद ।
जहाँ-नुमा - संसार दिखानेवाला	सहर-नुमा - सबेरा बतानेवाला
जलवत - भीड़ भग्भड़, शोरगुल	वज़ू - नमाज़ के पहले हाथ-पैर धोना
मानूस - मिली हुई	नाला - रोकर प्रार्थना करना, आह
सफ़्रअ - क्रतार, पंक्ति	दरा - नगाड़ा, घंटे की आवाज़
जानिब - तरफ़	(कारवाँ निकलने के पहले का घंटा)

विधवा



सोज़े-हिरमाँ - दुख की जलन	तारीक - अंधेरा
बढ़ियाँ - माला, तसमा	गेसू - बाल, लट
लज्ज़ते-ज़ौक़े-ख़लिश - दुख उठाने का	अम्बर-फ़साँ - इत्र में बसा हुआ
मज़ा	आतिशे-ख़ामोशी - दबी आग
सिनाँ - तीर, बछी	अब्रे-करम - दयारूपी बादल

हसरत भरे शेर



सियाकार - बुरे काम करनेवाला	दमे-वापसीं - आखिरी साँस
बा-सफ़ा - शुद्ध, पवित्र	पुरसिश - कुशल पूछना

पै करे-इलतिजा - आकांक्षा की तस्वीर	अश्कबार होना - रोना
खिरद - अकू, विवेक	यास - निराशा
जन्नू - पागलपन	अहले-नज़र - दृष्टि रखनेवाला
करिश्मा-साज़ - अद्भुत काम करने- वाला	रु - चेहरा
नादिम - शरमिन्दा	हिजाबे-नूर - लज्जा का सौंदर्य
इलाही - खुदा, भगवान	मस्तूर - छिपा
जानाँ - माशूक, प्रिय	बरहम - नाराज़

चन्द मीठे शेर



नाकामी - असफलता	तमन्ना - अभिलाषा
कूचा - गली	मुस्ताक़ - बहुत इच्छा या कामना रखनेवाला
तनहा - अकेला	

सोसाइटी



नापाक - अपवित्र	शोबदा-सामाँ - जादूगर
मज़मा - समूह, भीड़	जथा - जत्था, समूह, दल
हैबतनाक - डरावना, भयंकर	खुदराय - स्वेच्छाचारी
मरक़ज़ - केन्द्र, जगह	खुद-बी - धमंडी
ज़हर-आलूदा - विष भरा	खुद परस्त - स्वार्थी, मतलबी
मुहज्जब - सभ्य	ना-शाहस्ता - असभ्य
मुनज़ि़म - संगठित	हलक़ा - टोली, दल

जमाभत - दल, समूह
 एतमाद - विश्वास
 शरंगेज - झगड़ा
 ज़ाद - उत्पन्न, पैदा हुआ
 बातिल-क्रदा - झूठ का घर
 पुरसिश - पूछ
 जमीर - विवेक
 ता-दूर - तक
 तखरीब - बर्बादी, नाश
 आतिश - आग
 बद-रस्मियाँ - बुरे रिवाज़
 अफ़लाक - नीति, शील, चरित्र

रियाकारी - दगाबाज़ी, धोखा
 हसद - ईर्ष्या, द्वेष
 मजबह - वध-स्थान
 मक़तल - वध स्थान
 कज़-निगाह - टेढ़ी नज़रवाला, बुरी
 दृष्टि वाला
 शोरिशगह - झगड़े की जगह
 फ़ितना - झगड़ा
 बेदार - जागृत
 बुग़ज़ - ईर्ष्या-द्वेष
 किब्र - घमण्ड
 ग़ारत - नाश, चौपट

सितारों के गीत



मासूम - निष्पाप, निरीह
 इलहाम-क्रदा - प्रेरणा का घर
 (आकाश)
 शीरी - मीठा
 पेवान - घर
 सरशारी - वर्षा
 मग़मूम - रंजीदा
 पस्ती - पतन, गिरावट
 मख़लूक़ - पैदा किए, संतान
 बाबस्ता - बंधे हुए
 नूरी - स्वर्गीय, नूरवाले

खाकी - लौकिक, इंसान
 महरूम - वंचित, रहित
 सरशार - भरा हुआ, मस्त
 ताबिन्दा - चमकनेवाला
 ग़राँ - भारी
 खाबीदा - सोया हुआ
 सकूने हस्ती - जीवन की शांति
 नेमत - नियामत, अलभ्य पदार्थ
 पिछले को - उषा के पहले का समय
 आईना - साफ़, स्पष्ट
 दावत देना - बुलाना

अजीज़ के शेर



अहद - शासन, राज्य, निश्चय
 खैरगुज़री - अच्छा हुआ, कुशल
 बिजली-सी शै - प्रेम
 ज़िन्दा - क्रैद-खाना
 बियाबी - बयाबान, उजाड़
 चारा-साज़ - दिलासा देनेवाला

हादिसा - घटना, वाक्या
 खाक की तामीर - नश्वर संसार
 गुजश्ता - बीते हुए
 सुहबत - सोहबत, साथ, संग
 साहवे मातम - शोक मनानेवाले लोग

दर्द भरे शेर



रुदादे चमन - चमन का समाचार
 हिम्मत-शरहो-बयां रख दी - साफ़ २
 कहने की हिम्मत छोड़ दी।
 नियाज़ - परिचय
 ज़र्बी - मस्तक, पेशानी
 इज्तराब - बेचैनी, दुःख
 मआज़ला - (मआज़ + अलाह) ईश्वर
 रक्षा करे (आश्चर्य या आशीष
 प्रकट करने या पनाह मांगने में)
 तलातुम - समुद्र की बड़ी तरंगें,
 खलबली
 ज़रे - नीचे,
 ज़रे-आसमाँ - आसमान के नीचे,
 धरती पर
 असरार - भेद, रहस्य

फ़ज़ा - शोभा
 पुरकैफ़ - मस्ती से भरी
 आवाज़-शिकस्ते-साज़ - टूटे हुए बाजे
 की आवाज़
 मजाज़ी - भौतिक, सांसारिक
 नेशतर - नशतर
 रगे-जाँ - जान की रग, प्राणनाड़ी
 गरेवाँ - कुर्ते का गला
 साहिल - किनारा
 परवर्दा - पली हुई
 मुसव्विर - चित्रकार, ईश्वर
 फ़ानूस - शीशे की गिलास, जिसमें
 बत्ती जलती है।
 गरदिश - चक्कर, विपत्ति
 मंज़िले-जानाँ - माशूक के दायरे में

नहीं होता



इहसास - अनुभव, भान
रुसवा - बदनाम
दफ़्फ़तन - अचानक
बेशतर - ज़्यादातर

देरपा - देर तक ठहरनेवाला, मज़बूत
राहत-फ़ज़ा - खुशी बढ़ानेवाला
मैं कि - मैं ऐसा हूँ कि
सकून - शांति

दो शेर



बाक़ी - फ़ानी का उलटा
फ़ानी - नाशवान
मौज़ज़न - लहरेँ मारता हुआ
मानिन्द - तरह

हुबाब - बुलबुला
फ़ांस - बन्धन, जाल
खटक - खटका, डर

चक्रवस्त के चन्द शेर



सदक़े जाना - न्यौछावर होना
मन्तक़ - तर्कशास्त्र
करिमा - खेल

ज़ार - जगह
समर - फल, लाभ
जुन्नार - यज्ञोपवीत

आग़ोश



रिंद - अधार्मिक
मैक्रदा-साज़ - मधुशाला बनानेवाला
मैक्रदा बरदोश - मधुशाला साथ ले
चलनेवाला

सरजोश - उबलनेवाला
दराग़ोश - आग़ोश का सिलसिला
नक़ूश - चिह्न
फ़रामोश - भूला हुआ

रुदाद - वृत्तांत, समाचार

जाम - प्याला

नासिह - उपदेशक

वहम - भ्रम, शंका

रक्तस - नाच

भूल

★

वज्र - आनन्द में मग्न होकर झमना, सुद - फायदा

आनन्द विभोर होना

ज़ियाँ - नुकसान, घाटा

यह फूल भी उठा ले

★

गमज़े - नज़रा, हाव-भाव

खराम - अदा की चाल, मस्तानी चाल

रुखसार - गाल

फूल झड़ना - सौंदर्य या हँसी के

गरूर - गर्व

अर्थ में

बीमार कलियाँ

★

बीमार कलियाँ - पीली बन्द कलियों बहारिस्तान - बाग

से मतलब है ।

मलाहत - सौंदर्य, श्यामता

महफूज़ - सुरक्षित

सबाहत - गोराई, सौंदर्य

सरमस्ती - खुशियाँ

कान - खान

दोशीज़गी - कौमार्य

हम्द

★

हम्द - प्रार्थना

सर-सब्ज़ - हरी-भरी

वाली - मालिक

बह - समुद्र

- ज़मीन
क - सूखा
- हरा
र - फल

करम - दया
खालिक - सृष्टिकर्ता
खुदाया - हे ईश्वर
हैवान - पशु

पपीहा



शानवा - सुन्दर गानेवाला
शअदा - अच्छे हाव-भाववाला
मुज़महिल - थका हुआ, शिथिल
मौत - आवाज़
सददुक्र - न्यौछावर
गौ-फ़िज़ा - अमृत
मुज़तरिब - बेचैन
नैसा - स्वाती की बूँदें, मोती, मकसद
पाने की खाहिश
गब - दरवाज़ा

वहदत - एकत्व का भाव
सर्व - एक ऊँचा शब्द, Cypress
(माशूक के आकार का उपमेय)
तवकुल - ईश्वर पर भरोसा, वैराग्य
कनाअत - सन्तोष, सब
आफ़री - शाबास, धन्य
मरहबा - शाबास, बहुत अच्छा
आहोज़ारी - रोना-पीटना
तसव्वुर - ध्यान



